सत्यसुकृत, आदि अदली, अजर, अचिन्त, पुरुष,
मुनीन्द्र, करुणामय, कबीर, सुरति योग, संतायन,
धनी, धर्मदास, चूरामणि नाम, सुदर्शन नाम,
कुलपति नाम, प्रमोध, गुरुबालापीर, केवल नाम,
अमोल नाम, सुरतिसनेही नाम, हक्क नाम,
पाक नाम, प्रगट नाम, धीरज नाम,
उग्रनाम, दया नामकी दया,
वंशव्यालीसकी दया

★

श्री बोधसागर

अथ प्रथमस्तरंगः

धर्मदासबोध–ज्ञानप्रकाश

सत्य सुकृत सतगुरु सतनामा । सत्यपुरुष सन्तन सुखधामा ॥
सत्यपुरुष सतलोक निवासी । दुखनाशक अविचलसुखरासी ॥
अमी अमान सो सत्य कहाये । अभै विद्यमान कहि गाये ॥
अविगति अलख अनाम सरूपा । अगह अडोल अबोल अनूपा ॥
अजर अजावन सो निःस्वादी । निःकामी निरमोह अनादी ॥
निःक्रोधी निरवैर निशङ्का । गुणातीत निर्द्वन्द निकलङ्का ॥

धर्मराय सिर अञ्जन सोई। आपुहि तात मातु नहिं कोई ॥
नहीं तीनि पाँच तनुधारे। रहैं अमान नरकसों न्यारे ॥
ताके निशि दिन शिर नाऊँ। गुप्त प्रकट वाको गुण गाऊँ ॥
उनके ढिगसो हम चलि आये। जिव निस्तारन हमहिं पठाये ॥
सत्यपुरुष सत्यगुरु सो आहीं। गुरुगम सत्यगुरु नाम समाहीं ॥
सत्यगुरु ध्यान जाहि पहँ होई। सो हंसा नहिं जाहिं विगोई ॥
सत्यगुरु शब्द गहै सो हंसा। मेटै जन्म मरण भौ संसा ॥

छंद–सत्यनाम सतगुरु ध्यान सतपद वासी हंस हो ॥
सत्यलोक अशोक निर्मोह पहुँचे गहे अविचल कंत हो ॥
जीव लहै सुमिरण सत्यबीरा अङ्क अविचल जोग है ॥
सत्यनाम सुमिरण काल डरपै मुछित यम न्यारा रहै ॥

साखी–कहों सँदेश सत्य पुरुषको, समझत रङ्क नरेश ॥
कहैं कबीर सो अमर हो, जो गह मम उपदेश ॥

सोरठा–चीन्हहु किर्तिम आदि, सत्य असत्य विचारहू ॥
छांडि देहु बकवादि, खोजहु अविचल पुरुष कहँ ॥

चौपाई

यहि जग देखों अनकठ रीती। तजहीं साँच झूठ सो प्रीती ॥
जो धोखा तेहि साँचके मानैं। सत्य सार तेहि नहिं पहिचानैं ॥
आदि ब्रह्मकहँ खोजहि नाहीं। कृतिम कला जो सेवहिं ताहीं ॥
निज स्वामीके मत ना गहहीं। जरा मरण घर संकट सहहीं ॥
जो रक्षक तेहि गहै न कोई। जो भक्षक तेहि धावहिं लोई ॥
कर्म भर्म वसि तीर्थ नहाहीं। पुण्य पाप वसि आवहिं जाहीं ॥
दयाहीन नर पढहि पुराना। पढिगुणिके अरथावहि ज्ञाना ॥
अन्धा अगुवा तिहुँपुर माहीं। बहु अन्धा तेहि पाछे जाहीं ॥
अगुवा सहित कूप महाँहीं। कासो कहूँ कोई बूझे नाहीं ॥

छन्द–गुरुज्ञान हीन मलीन पण्डित शब्द शास्त्र पढ़ै घनो ॥
अगम निगम विरञ्चि प्रमोधैं सकल जग यहि सखा बनो ॥
जो काल जीवनको सतावै तासु भक्ति दृढ़ावहीं ॥
विष्णु आदिक शिवसनकादि अजसुर कालकेगुण गावहीं ॥
साखी–बिन बूझे करुआइ अस, लगिहै वचन हमार ॥
जब बूझे तब मीठि हो, कहैं कबीर पुकार ॥
सोरठा–जस नीम जग माहिं, नासि व्याधि करु दूरि प्रथम ॥
तेहि दुख चम्पै नाहिं, जो चाखै मूरि अमर ॥

धर्मदास वचन–चौपाई

अहो साधु तुम को धौं अहहू । अनकट बात बहुत तुम कहहू ॥
ताते तब नहिं बोल बढ़ायो । जाते हरि सेवा चित लायो ॥
विष्णु इष्ट देवन्ह के देवा । तुम्ह तेहि कहहु करहिं यम सेवा॥
विष्णुते अधिक और कोइ नाहीं । जमरा विष्णु के चेरा आहीं ॥

सतगुरु वचन

अहो धर्मनि जो ऐसन कहहू । तो हम कहै सो चित महँ धरहू ॥
विष्णु कथा तोहि कही सुनाओं । अगम अगोचर ज्ञान चिन्हाओं ॥
तुम्ह भाषो यह वचन सँजोई । विष्णु ते अधिक और नहि कोई॥
हमरो शब्द कहँ देखहु साहू । अपनो हृदया जनि कदराहू ॥
आपुहि विष्णु धनी जो रहेऊ । तो किमि योनि जठरदुख सहेऊ॥
जो यम होत विष्णु के दासा । तो नहिं करते विष्णु गरासा ॥
सेवक हाथ न स्वामिहि घाले । जो बिगरे तो होइ तेहि काले ॥
ब्रह्मा विष्णु शिव सनकादिक । मुनि मुनीश नारद शेषादिक ॥
सबकहँ यम धरि करहि अहारा । लूटहि सबहि काल बरियारा ॥
तीनि लोक जेते कोई आहे । काल निरञ्जन सब कहँ डाहे ॥
तुम खोजहु अब सो घर भाई । जेहि घर यम सो बाचहु जाई ॥
अहो साधु के सूत सयाना । एती कहेऊ सब सुनेहु पुराना ॥
पढि पुराण नहिं समझेहु भेता । बिनु जाने भर्मंहु आचेता ॥

ब्रह्मा गये असंख सिराई । विष्णु कोटि यमरा धरि खाई ॥
चाँद औ सूर्य तारागण लोई । कहै कबीर फिर रहे न कोई ॥

धर्मदास वचन–चौपाई

अहो साधु अचरज तव बाता । कहे न बने तुमहिं विख्याता ॥
गीता भागवत पुस्तक बहुताना । निसिदिन सुनो जपों भगवाना ॥
विप्र भेष औ छव दर्शन के । महिमा सबैं कहैं त्रिभुवन के ॥
सबै विष्णुके भक्ति दृढ़ावैं । त्रय देव सब श्रेष्ठ बतावैं ॥
तुम खण्डहु हरि और न कोई । अहो साधु यह अचरज होई ॥

सतगुरु वचन

छन्द–सुनु सन्त सुबुद्ध सयान सुनि ज्ञान हृदय विचारहू ॥
गहि शब्द परख करि हिये मम बानि निरुआरहू ॥
सो कहत वेद बहु विविध पुराण त्रिगुण तेरा पार धनी ॥
यह मायाजाल हैं जगत फन्दा त्रिविधि काल कला बनी ॥

साखी–त्रिगुण ध्यान ते रहित नहीं, सुनहु सन्त चित लाय ॥
अस्थिर घर तब पावई, चौथे पदहिं समाय ॥

सोरठा–चौथा पद निरवान, पुण्य भाग ते पाइये ।
कहैं कबीर प्रमान, सत्य शब्द बिनु नहि तरे ॥

धर्मदास वचन–चौपाई

हे साहब हमसे भल कहहू । तिहुँ पुर प्रलय कहां तव रहहू ॥
तीन देव सब परलय तर आई । तुम कौने विधि बाँचहु भाई ॥

सतगुरु वचन

अहो सन्त हम तहाँ रहाहीं । यम प्रवेश जहँ सपनेहुँ नाहीं ॥
जाके डर कम्पत यमराई । अहो सन्त हम ताको गुण गाई ॥
तीनि लोक यह परलय होई । चौथा लोक सुख सदा समोई ॥
तीन देवके पिता निरञ्जन । ते यम दारुण वंशके अञ्जन ॥

सवा लाख जिव नित सो खाहीं । सुर नर मुनि कोइ छांडे नाहीं ॥
सत्यपुरुष सत्य लोक निवासी । सकल जीवके पीव अविनासी ॥
तिन्ह पुनि षोडश सुत निर्माया । षोडशमें एक काल सुभाया ॥
पुनि तेहिमहँ एक काल कहाया । ज्योति स्वरूप निरञ्जन राया ॥
जाकहँ नाहि सोइ यम जाना । धूर्तमता तिनि लोकमहँ आना ॥
एक अण्ड दीन्हा तिन लोका । निरंकार है निष्काम अशोका ॥
निरंकार तीनि सुत उपराजू । आपु गुप्त पुत्रन दिय राजू ॥
तीनहुँ तीनि लोक ठगि राखा । आपन आपन महिमा भाखा ॥
अरुझि रहा जिव तिरगुन फाँसा । भूलि परा निज घर तब नासा ॥
जीवन्ह काल बहुत सन्तावै । बार बार यम जीव नचावै ॥
सत्य पुरुष तब मोहि पठाये । जिव मुक्ता वन हमहिं चलि आये ॥

धर्मदास बचन

हे साहब कछु पूछौं तोही । जो पूछहुँ सो भापहु मोही ॥
निरङ्कार निरंजन राई । धूर्तमता तिन्ह काकिय भाई ॥
जाते इन उहां रहे न पाई । सो चरित्र मोहिं वरणि सुनाई ॥

सतगुरु बचन

अहो सन्त जो पूछहु मोहीं । समुझहु चरित्र बुझावों तोहीं ॥
सत्य पुरुष सुत षोडश कीन्हा । अर्द्धंगीन एक कन्या रचि लीन्हा ॥
सो कन्या इन्ह कीन्ह गरासा । ताते भौ यहि लोक निकासा ॥
पुरुष दरश इन्ह बहुरि न पावा । तीनि लोक महँ आनि रहावा ॥
एकअण्ड सत्यपुरुष तेहि दीन्हा । अशंख अण्ड लोक महँ कीन्हा ॥
पुरुष रूप का बरणौं भाई । मोसो वरणत वरणि न जाई ॥
तेहि साहब का हौं शठिहारा । जीव सुकाजको करों पुकारा ॥
जो समुझे सुनि हेला मोरी । काटौं ताकी कर्मकी डोरी ॥

धर्मदासका विरह

यहि कहि गुप्त भये प्रभु राई । धर्मदास महि खसेमुझाई ॥

विकल भये आवैं नहिं स्वासा । हमहिं छाँडि कहँ गये उदासा ॥
जो मैं जनतेउँ होइ बिछोही । पलकन लइतों निरखत तोही ॥
छन्द–मोहिं काह जानि दरश दिये प्रभु जुदा पुनि काहे भये ॥
छिन पलक देत विलम्ब नहिं कौन दिशा गवनन किये ॥
बहु छोभ होत न जात विरह मन विकल धीरज ना धरे ॥
जमुनातट खड़े झरवहिं जिमि पिया वियोगी भवन मुर्छितपरे॥
साखी–शोच हृदया रैन दिन, भोजन भवन न भाव ॥
बड़े भाग्य सो मिले प्रभु, बिछुरे कबहुँ भेटाव ॥
सोरठा–करत शोच मन भाव, सुख सम्पत न सोहावई ॥
मोहिं चैन नहिं आव, जौं लगि चरण न देखिहौं ॥

छठें दिन कबीर साहेबका फिर मिलना–चौपाई

दिवस पाँच जब ऐसहि बीता । निपट विकल हिय व्यापेउ चिन्ता ॥
छठयें दिन अस्नान कहँ गयऊ । करि अस्नान चितवन कियऊ ॥
पुहुप वाटिका प्रेम सोहावन । बहु शोभा सुन्दर शुठि पावन ॥
तहां जाय पूजा अनुसारा । प्रतिमा देव सेव विस्तारा ॥
खोलि पेटारी मूर्ति निकारी । ठाँव ठाँव धरि प्रगट पसारी ॥
आनेउ तोरि पुहुप बहु भाँती । चौका विस्तार कीन्ही यहि भाँती॥
भेष छिपाय तहाँ प्रभु आये । चौका निकटहिं आसन लाये ॥
धर्मदास पूजा मन लाये । निपट प्रीति अधिक चित चाये ॥
मन अनुहारि ध्यान लौलावई । कहि कहि मंत्र पुहुप चढ़ावई ॥
चन्दन पुष्प अच्छत कर लेही । निमित होय प्रतिमा पर देही ॥
चवर डोलावहिं घण्ट बजायी । स्तुति देवकी पढैं चित लायी ॥
करि पूजा प्रथमहि शिर नावा । डारि पेटारी मूर्ति छिपावा ॥

सतगुरु वचन

अहो सन्त यह का तुम करहूँ । पौवा सेर छटंकी धरहूँ ॥
केहि कारण तुम प्रगट खिडायहु । डारि पेटारी काहे छिपायेहु ॥

धर्मदास वचन

बुद्धि तुम्हार जान नहि जाई। कस अज्ञानता बोलहु भाई ॥
हम ठाकुर कर सेवा कीन्हा। हम कहँ गुरु सिखावन दीन्हा ॥
ता कहँ सेर छटंकी कहहू। पाहन रूप ना देव अनुसरहू ॥

सतगुरु वचन

अहो संत तुम नीक सिखावा। हमरे चित यक संशय आवा ॥
एक देव सम सुनेउ पुराना। विप्रन कहे ज्ञान सुनिधाना ॥
वेद वाणि तिन्ह मोहि सुनावा। प्रभुके लीला सुनि मन भावा ॥
कहे प्रभू वह अगम अपारा। अगम गहे नहि आव अकारा ॥
सुनेउँ शीश प्रभुकेर अकाशा। पग पताल तेहि अपर निवाशा ॥
एके पुरुष जगतके ईसा। अमित रूप वह लोचन अंमीसा[1] ॥
सोकित पौतिन्ह माहि समाहीं। अहो सन्त यह अचरज आहीं ॥
औ गुरुगम्य मैं सुना रे भाई। अहैं सङ्ग प्रभु लखौ न जाई ॥
अहो सन्त मैं पूछहुँ तोहीं। बात एक जो भाषो मोहीं ॥
यहि घटमहँ को बोलत आही। ज्ञानदृष्टि नहि सन्त चिन्हाही ॥
जौ लगि ताहि न चीन्हहुँ भाई। पाहन पूजि मुक्ति नहिं पाई ॥
कोटि कोटि जो तीर्थ नहाओ। सत्यनाम विन मुक्ति न पाओ ॥
को तुह्म को तव को घट माहीं। सन्तों चीन्ह वेगि तुम ताहीं ॥
सर्व मई औ सबते न्यारा। सो खेलै यह खेल रिसाला ॥
जो घरवा में बोलै भाई। काहि नाम तेहि कहहु बुझाई ॥
कीन सुन्दर यह साज बनाया। नाना रंग रूप उपजाया ॥
ताहि न खोजहु साहु के पूता। का पाहन पूजहु अजगूता ॥
धर्मदास सुनि चक्रित भयऊ। पूजापति बिसरि सब गयऊ ॥
एक टक मुख जो चितै रहाई। पलकौ सुरति ना आनौ जाई ॥
प्रिय लागै सुनि ब्रह्मका ज्ञाना। विनयकीन्ह बहु प्रीति प्रमाना ॥

---

१ अमित का विगाड है।

धर्मदास वचन

अहो साहब तब बात पियारी। चरण टेकि बहु विनय उचारी ॥
अहो साहब जस तुम्ह उपदेशा। ब्रह्मज्ञान गुरु अगम सँदेशा ॥
छठयें दिवस साधु एक आये। प्रीय बात पुनि उनहु सुनाये ॥
अगम अगाधि बात उन भाखा। कृत्रिम कला एक नहिं राखा ॥
तीरथ व्रत त्रिगुण कर सेवा। पाप पुण्य वह करम करेवा ॥
सो सब उन्हहि एक नहिं भावे। सबते श्रेष्ठ जो तेहि गुण गावे ॥
जस तुम कहेहु विलोइ विलोई। अस उनहूँ मोहिं कहा सँजोई ॥
गुप्त भये पुनि हमकहँ त्यागी। तिन्ह दरशनके हम वैरागी ॥
मोरे चित अस परचै आवा। तुम्ह वै एक कीन्ह दुइ भावा ॥
तुम कहाँ रहो कहो सो बाता। उन्ह साहब कहँ जानहु ताता ॥
केहि प्रभु के तुम सुमिरण करहू। कहहु विलोइ गोइ जनि धरहू ॥

सतगुरु वचन

अहो धर्मदास तुम सन्त सयाना। देखौं तोहि मैं निरमल ज्ञाना ॥
धर्मदास मैं उनकर सेवक। जहँहि सो भव सार पद देवक ॥
जिन कहा तुमहिं अस ज्ञाना। तिन साहेब के मोहिं सहिदाना ॥
वे प्रभु सत्यलोकके वासी। आये यहि जग रहहिं उदासी ॥
नहिं वो भग दुवार होइ आये। नहिं वो भग माहिं समाये ॥
उनके पाँव तत्त्व तन नाहिं। इच्छा रूप सो देह नहिं आहिं ॥
निःइच्छा सदा रहँहीं सोई। गुप्त रहहिं जग लखै न कोई ॥
नाम कबीर सन्त कहलाये। रामानन्द सो जान सुनाये ॥
हिन्दू तूर्क दोउ उपदेशैं। मेटैं जीवन केर काल कलेशैं ॥
माया ठगन आइ बहु बारी। रहैं अतीत माया गइ हारी ॥
तिनहि उठावा तोहि पाही। निश्चय उन्ह सेवक हम आही ॥
अहो सन्त जो कारज चहहू। तो हमार सिखावन गहहू ॥
उनकर सुमिरण जो तुम करिहो। एकोतरसौ पुरुषा लै तरिहो ॥

वो प्रभु अविगत अविनाशी । दास कहाय प्रगट भे काशी ॥
भाषिन निरगुण ज्ञान निनारा । वेद कितेब कोइ पाव न पारा ॥
तीन लोक महँ महतो काला । जीवन कहँ यम करै जँजाला ॥
वे यमके सिर मर्दन हारे । उनहि गहै सो उतरै पारे ॥
जहाँ वो रहहि काल तहँ नाहीं । हंसन सुखद एक यह आहीं ॥

धर्मदास वचन

अहो साहब बलि बलि जाऊँ । मोहिं उनके सँदेश सुनाऊँ ॥
मोरे तुम उनहीं सम भाई । तुम वै एक नाहिं विगराई ॥
नाम तुम्हार काह है स्वामी । सो भाषहु प्रभु अन्तर्यामी ॥

सतगुरु वचन

धर्मनि नाम साधु मम आही । सन्तन माँह हम सदा रहाही ॥
साधू संगति निशिदिन मन भावै । सतगुरु ज्ञान साधु मिलि गावै ॥
जो जिव करै साधु सेवकाई । सो जिव अति प्रिय लागै भाई ॥
हमरे साहिबकी ऐसन रीती । सदा करहिं साधुन सो प्रीती ॥
जो जिव उन्हकर दिक्षा लेहीं । साधू सेव सिखावन देहीं ॥
जीव दया पर आतम पूजा । सद्गुरु भक्ति देव नहिं दूजा ॥
सद्गुरु सङ्कट मोचक आहीं । निरगुण भक्ति छुवैं यम नाहीं ॥

छन्द–हैं आपु सत्यकबीर सद्गुरु प्रकट कहु तुम सना ॥
सत्यनाम भक्ति दृढावहिं दया क्षेम निश्चल मना ॥
मन कर्म भर्म अबाट परिहरि बाट घरको देत हैं ॥
जो शीश अरपे भव तरे सार जेहि यह लेत हैं ॥

साखी–सुनहु संत मति धीर, हृदया करहु विवेख ॥
हो ज्ञाता परखहु हिये, संत असंतको रेख ॥

सोरठा–जीवन यम धरिखाय, सत्यनाम जाने बिना ॥
वाचै एक उपाय, सत्यकबीर कहि भव तरै ॥

धर्मदास वचन–चौपाई

अहो साहब तुम्ह अविगत अहहू । अमृत वचन तुम निश्चय कहहू ॥
हे प्रभु पूछेउ बात दुइ चारा । अब मैं परिचय भेद विचारी ॥
सो तो हम नहिं जानहिं स्वामी । तुम कहहु प्रभु अंतरयामी ॥

सतगुरु वचन

अहो धर्मदास तुम्ह भल यह भाखो। कहो सो जो प्रतीति तुम राखो ॥
अहहु निगुरा कि गुरुकिहुँ भाई । तौन बात मोहि कहहु बुझाई ॥

धर्मदास वचन

हे सामर्थ्य गुरु हमतो कीन्हा । यह परिचे गुरु मोहि न दीन्हा ॥
रूपदास विठलेश्वर रहहीं । तिनकर शिष्य सुनहुँ हम अहहीं ॥
उन मोहिं इहे भेद समुझावा । पूजहु शालिग्राम मन भावा ॥
गया गोमती काशि परागा । होइ पुण्य शुद्ध जनम अनुरागा ॥
लक्ष्मीनारायण शिलाकै दीन्हा । विष्णुपंजर पुनि गीता चीन्हा ॥
जगन्नाथ बलभद्र सहोद्रा । पञ्चदेव औरो योगीन्द्रा ॥
बहुतैं कही प्रमोध दृढाई । विष्णुहिं सुमिरि मुक्ति होइ भाई ॥
गुरुके वचन शीश पर राखा । बहुतक दिन पूजा अभिलाखा ॥
तुम्हरी भेष मिले प्रभु जबते । तुम बानी प्रिय लागी तबते ॥
वे गुरु तुम्हहीं सतगुरु अहहू । सारभेद मोहिं प्रभु कहहू ॥
तोहरे दास कहाउब स्वामी । यमते छोडावहु अन्तरयामी ॥
उनहूं कर नाहीं निन्द करावे । अस विश्वास मोरे मन आवे ॥
वह गुरु सर्गुण त्रिगुण पसारा । तुमहो यमते छोडावनहारा ॥

सतगुरु वचन

सुनु धर्मनि जो तव मन इच्छा । तौ तोहिं देउँ सार पद दिच्छा ॥
तुम अब निज भवन चलि जाऊ । गुरु परीक्षा जाइ कराऊ ॥
जो गुरु तुम्हें न कहैं सँदेशा । तब हम तुम्ह कहँ देव उपदेशा ॥
हमहुँ जाहिं सतगुरु पहँ भाई । तुम्हरी प्रीति अब उनहिं सुनाई ॥

धर्मदास वचन

हे साहेब एक आज्ञा पावों। दया करो कछु प्रसाद लै आवों॥

सतगुरु वचन

हे धर्मदास मोहि इच्छा नाहीं। क्षुधा न व्यापै सहज रहाहीं॥
सत्यनाम है मोर अधारा। भक्ति भजन सतसंग सहारा॥

धर्मदास वचन

अहो साहब जो अन्न न खाहू। तो मोरे चितकर मिटै न दाहू॥

सतगुरु वचन

तुम्हे इच्छा तो ल्यावहु भाई। अन्ते लेइ पाइब हम जाई॥
धर्मदास उठि हाट सिधाये। बतासा पेडा रुचि लै आये॥
आनि धरेउ आगे प्रभुकेरा। विनय भाव कीन्ह बहुतेरा॥
अहो साहु अब अज्ञा देहू। गुरु पहँ जाव आशिष लेहू॥

धर्मदास वचन

करि दण्डवत धर्मनि कर जोरी। अबधौं सुदिन होइ कब मोरी॥
तेहि दिन सुदिन लेखब प्रभुराई। जेहि दिन तुव पगु दरशन पाई॥
हम कहँ निज चेरा करि जानो। सत्य कहौं निश्चयकरि मानो॥
आशिष दै प्रभु चले तुरन्ता। अबिगति लीला लखे को अन्ता॥
धर्मदास चितवहिं मगु ठाढो। उपजा प्रेम हृदय अति गाढो॥

छंद–बिलखि लोचन जब प्रभु अन्तर भये तबहीं चित अति खरभरे॥
चक्षुवारिध प्रबल प्रवाह भव हिय धीरज तनिको ना धरे॥
धरि स्वास आस विश्वास मिलन बहुरि जो भवन सिधायऊ॥
गिरहिं सेज विथा विकल होइ उर विरह अति दुख छायऊ॥

साखी–भोजन क्षेम मलीन तन, बसन विभेष बनाइ॥
रैनि दिवस छिन कल नहीं, जहँ तहँ बैठें जाइ॥

सोरठा—मिलहिं जो भेष अनेक, पूछहिं तेहि सँदेश पुनि ॥
होय न चित महँ एक, यक सम बचन न भावई ॥

धर्मदासका गुरुरूपदासजीके निकट जाकर ज्ञान पूछना

धर्मदासवचन—चौपाई

धर्मदास चलि भो गुरु पाहाँ । रूपदास कर आश्रम जाहाँ ॥
पहुँचे जाइ गुरूके धामा । होइ आधीन तब कीन्ह प्रणामा ॥
तुम गुरु देव शिष्य हम आहीं । परचे ज्ञान कहहु मोहि पाहीं ॥
जीव मुक्त कौन विधि होई । तन छूटे कहँ जाय समोई ॥
(जिवकर मुक्ति कैसे होइ भाई । पारब्रह्म सो कहाँ रहाई ? ॥)
आदि ब्रह्म सो कहँवा रहाई । घट महँ बोले कौन सो आही ॥
ताकर नाम कहो हम पाही । घट में बोले सो कस आही ॥
हम को हैं घट को होई । जग करता प्रभु कहां समोई ॥

गुरु रूपदास वचन

धर्मदास तुम भयो अजाना । को सिखयो तोहि अस ज्ञाना ॥
सुमिरहु रामकृष्ण भगवाना । ठाकुर सेवा कर बुधिवाना ॥
विष्णुपंजर ओ लक्ष्मिनरायन । प्रतिमा पूजन मुक्ति परायन ॥
मन वच सुमिरहु कुञ्जविहारी । रहै वैकुंठ सोइ बनवारी ॥
पुरुषोतम पुरि वेगि सिधाओ । जगन्नाथ परसो घर आओ ॥
गया गोमती काशीथाना । तीरथ नहाय पुण्य परधाना ॥
निराकार निर्गुण अविनाशी । ज्योति स्वरूप शून्यका वासी ॥
ताहि पुरुषकर सुमिरहु नामा । तन छूटै पहुँचहु हरिधामा ॥

धर्मदास वचन

हो गुरुदेव पूँछो यक बाता । क्रोध करि कहहु जनि ताता ॥
जीव रक्षक सो कहाँ रहाही । निराकार जिव भक्षक आही ॥
लक्ष जीव नित खाय निरंजन । तिया सुत ताहि करै बहु गञ्जन ॥
तीनो देव पडे मुख काला । सुर नर मुनि सब करै विहाला ॥

नर बपुराकी कौन चलावै । कौनी ठोर जीव सचुपावै ॥
तीन लोक वैकुण्ठ नशायी । अस्थिर घर मोहिं देहु बतायी ॥
पाप पुण्य भ्रम जाल पसारा । कर्मबन्ध भरमे संसारा ॥
किरतम भजि जोइन नहिं छूटै । सत्यनाम बिनु यम धरि लूटै ॥

रूपदास वचन

अहो धर्मदास हम चकित होही । यह कछु समुझि परै नहिं मोहीं ॥
तीनि लोकके कर्ता जोहै । तेहि भाषत हो जमरा सोहै ॥
ब्रह्मा विष्णु महेश गोसाईं । तुम्ह तेहि कहहु काल धरि खाई ॥
तीनि लोकमें वैकुण्ठहि श्रेष्ठा । सो सब तुम्ह मानहु निकृष्ठा ॥
तीरथ व्रत अरु पुण्य कमाई । तुम यमजाल ताहि ठहराई ॥
और अधिक मैं कहा बताऊँ । जो जानों सो नहीं दुराऊँ ॥
जिन्ह तोहि अस बुद्धि दिया भाई। तिनहीं कहँ तुम सेवहु जाई ॥

धर्मदास वचन

धर्मदास विनवैं कर जोरी । चूक ढिठाई बक्सहु मोरी ॥
हम तेही पद अब सेवैं जायी । जिन्ह यह अगम मोहि बतायी ॥
तुम हो गुरु उन सतगुरु मोरा । उन हमरे मन मैगल तोरा ॥
तुम्हहू गुरु वो सतगुरु मोरा । उन हमार यमफन्दा तोरा ॥
तुम्हैं गुण कीन्ह अभक्ष्य छुड़ावा । उन मोहि अलख अगम्य लखावा ॥
धर्मदास तब करी प्रणामा । मथुरा नगर पहुँचे निज धामा ॥
कैतिक दिन यहि भाँती गयऊ । धर्मदास मन चिन्ता भयऊ ॥
केतिक दिवस यहि विधि बीता । धर्मदास चित बाढी प्रीता ॥
बहुत दिवस भो प्रभु नहिं आये । कीधौं केहि सेवक विलमाये ॥
एक दिवस प्रभु ध्यान लगाय । क्षोभित चित्त प्रसाद बनाय ॥
बढी प्रीति मन बहु बिरहावा । सुरति सनेह प्रसाद बनावा ॥
जिन्दा रूप धरी प्रभु आये । वृक्ष एक तर आसन लाये ॥
आसन अधर देह नहिं छाया । अविगति लीला गुप्त रहाया ॥

इत चौका महँ अस भो भाई । बहु चिउँटी चूल्हे झरकाई ॥
हरि हरि करि धर्मनि अकुलाने । महापाप लखि मनहिं भुलाने ॥
ततक्षण धर्मनि जिन्दहि हेरा । आये प्रसाद लेहु यहि बेरा ॥
जिन्दा आय ठाढ पुनि भयऊ । कर प्रसाद लै चिन्तवन कियऊ॥
धर्मदास दीन्हेउ परसादा । तब जिन्दा पुनि कीन्ह समादा॥

जिन्दा वचन

घात कियउ तुम जीव अनेका । सो प्रसाद ले मम शिर टेका ॥

धर्मदास वचन

जीव घात सुनि अचरज माना । हो जिन्दा तुम्ह कैसे जाना ॥
कवन जीव हम कीन्ही घाता । सो समुझाइ कहो मोहिं बाता ॥

जिन्दा वचन

अहो साहु कस धरहु छिपायी । चिउँटी चूल्हा बहुत जरायी ॥
सुनि धर्मनि चित संशय आने । यह को आहि हृदय अनुमाने ॥
अगुन सगुन चित करें बढाई । मनही मन बहु अचरज पाई ॥
भात सबै चिउँटी तब भयऊ । बहु संशय धर्मनि मन ठयऊ ॥
सबै भात चिउँटी होइ बीता । बहुत संदेश धर्मनि हिय कीता॥

धर्मदास वचन

हो जिन्दा मैं अचरज भयऊँ । लीला देखि थकित होय गयऊँ॥
हो जिन्दा मैं पुछत सकाऊँ । दया करि तृष्णा मोरि बुझाऊँ ॥
चिउँटी सही जरी प्रभु हमते । सो अदृष्टि बहु अन्तर तुमते ॥
सो कैसे जानेहु तुम ताता । औ प्रसाद चिउँटी होइ जाता ॥
कौतुक देखि अचरज मुहि आवा । यह लीला तै जानि न पावा ॥

जिन्दा वचन

धर्मनि यह सतगुरुकी लीला । धन्यसतगुरुजिन्ह ख्यालकरीला॥
जानहु सतगुरु नाम प्रतापा । भयो पपील सर जिवगत पापा ॥
सतगुरु नाम सुनत सुख माना । धर्मदास हिय हरष समाना ॥

धर्मदास वचन

जोरि पानि मैं पूछौं स्वामी । कहो कृपा करि अन्तरयामी ॥
अहो साहेब नाम क आही । परचै नाम कहो मोहिं पाहीं ॥
अरु सतगुरु तुमका कहँ कहहू । हे प्रभु कौन देश तुम रहहू ॥

जिन्दा वचन

हो धर्मनि जो पूछेहु मोहीं । सुनहुँ सुरति धरि कहों मैं तोहीं ॥
जिन्दा नाम अहै सुनु मोरा । जिन्दा भेष खोज किहँ तोरा ॥
हम सतगुरु कर सेवक आहीं । सतगुरु संग हम सदा रहाहीं ॥
सत्य पुरुष वह सत्यगुरु आहीं । सत्य लोक वह सदा रहाहीं ॥
सकल जीवके रक्षक सोई । सतगुरु भक्ति काज जिव होई ॥
सतगुरु सत्यकबीर सो आहीं । गुप्त प्रगट कोइ चीन्है नाहीं ॥
सतगुरु आ जगत तन धारी । दासातन धरि शब्द पुकारी ॥
काशी रहहिं परखि हम पावा । सत्यनाम उन मोहिं दृढावा ॥
जम राजा कर सब छल चीन्हा । निरखि परखि भै यम सो भीना ॥
तीन लोक जो काल सितावे । ताको सब जग ध्यान लगावे ॥
निराकार जेहि वेद बखानै । सोई काल कोइ मरम न जानै ॥
तिन्ह कर सुत आहि त्रिदेवा । सब जग करै जो उनकी सेवा ॥
त्रिगुण जाल यह जग फन्दाना । गहै न अविचल पुरुष पुराना ॥
जाकर ई जग भक्ति कराई । अन्तकाल जिव सो धरि खाई ॥
सबै जीव सतपुरुषके आहीं । यम दै धोख फन्दाइस ताहीं ॥
प्रथमहि भये असुर यमराई । बहुत कष्ट जीवन कहँ लाई ॥
दूसरि कला काल पुनि धारा । धरि अवतार असुर सँघारा ॥
जीवन बहु विधि कीन्ह पुकारा । रक्षा करन बहु करै पुकारा ॥
जिव जानै यह धनी हमारा । दे विश्वास पुनि धरै अवतारा ॥
प्रभुता देखि कीन्ह विश्वासा । अन्तकाल पुनि करै निरासा ॥

कालै भेष दयाल बनावा । दया दृढ़ाय पुनि घात करावा ॥
द्वापर देखहु कृष्णकी रीती । धर्मनि परिखहु नीति अनीती ॥
अर्जुन कहँ तिन्ह दया दृढावा । दया दृढाय पुनि घात करावा ॥
गीता पाठके अर्थ बतलावा । पुनि पाछे बहु पाप लगावा ॥
बन्धु घातकर दोष लगावा । पाण्डो कहँ बहु काल सतावा ॥
भेजि हिमालय तेहि गलाये । छल अनेक कीन्ह यमराये ॥
बहु गंजन जीवन कहँ कीन्हा । ताको कहे मुक्ति हरि दीन्हा ॥
पतिव्रता वृन्दा व्रत टारा । ताके पाप पहन औतारा ॥
बलिते सो छल कीन्ह बहूता । पुण्य नसाय कीन्ह अजगूता ॥
छल बुद्धि दीन्हे ताहिं पताला । कोई न लखै प्रपंची काला ॥
लघु सरूप होय प्रथम देखाये । पृथिवीलीन्ह पुनि स्वस्ति कराये ॥
स्वस्ति कराइ तबै प्रगटाना । दीर्घरूप देखि बलि भय माना ॥
तीनि परग तीनौ पुर भयऊ । आधा पाँव नृप दान न दियऊ ॥
देहु पुराय नृप आधा पाऊँ । तो नहिं तव पुण्य प्रभाव नसाऊँ ॥
तेहि कारण पतालहिं दीन्हा । अन्धा जीव जल प्रगट न चीन्हा ॥
तब लै पीठ नपाय तेहि दीन्हा । हरि लै ताहि पताले कीन्हा ॥
यहि चर जीव देखि नहि चीन्हा । कहै मुक्त हरि हमको कीन्हा ॥
जाकर वचन थिर होवे नाहीं । औ पुनि जीव दया नहिं ताहीं ॥
तासो कहहु लाभ किमि होई । तेहि सेवै सो जाय बिगोई ॥
औ हरिचन्द केर कस लेखा । धर्मदास चित करो विवेखा ॥
यती सती त्यागी भयऊ । सब कहँ काल विगुरचन लयऊ ॥
काहूके व्रत दृढ नहिं राखा । ताकहँ मुक्तिदाता जग भाखा ॥
स्वर्गहिं धोखा नर्कहिं जाहीं । जीव अचेत छल चीन्है नाहीं ॥
पण्डौ सम जग को व्रतधारी । नरक बास ताकहँ लै डारी ॥
करण मोरध्वज सत्यव्रत धारी । लै कसनी ताहि दीन्ह विडारी ॥
भक्त अनेक जगत महँ भयेऊ । काहू कहँ वैकुण्ठ न दयऊ ॥

नरक वास नहिं छूटे भाई । महा नरक भग जठर कहाई ॥
नरकते विष्णु छुटे नहिं पाये । जनम जनम जठरे भग आये ॥
जग अंधा हिय गम्य न कीन्हा । सबै आस ताही कर लीन्हा ॥
जिव अचेत हियगम्य न करई । सबै आस वैकुण्ठहिं धरई ॥
विष्णु सरीखे को जग आही । बहु भगता किमि वरणों ताही ॥
तिन्ह वैकुण्ठ वास नहिं पाया । कर्महिं वसि पुनि नर्क भोगाया॥
सो वैकुंठ चाहत नर प्रानी । यह यम छल बिरले पहिचानी ॥
जस जो कर्म करै संसारा । तस भुगतै चौरासी धारा ॥
मानुष जन्म बडे तप होई । सो मानुष तन जात विगोई ॥
नाम विना नहिं छूटे कालू । बार बार यम नर्कहिं घालू ॥
नरक निवारण नाम जो आही । सुर नर मुनि लखत कोइ नाहीं ॥
ताते यम फिर फिर भटकावै । नाना जोइनि काल सतावै ॥
विरले सार शब्द पहिचाने । सतगुरु मिलै सतनाम समाने ॥

छंद-सुनु धर्मदास सुजाना शब्द प्रमान सतगुरु जानहूँ ॥
सुरति निरति गहि ठाम चीन्हो अनूप अलभ्छन मानहूँ ॥
सत्यनाम अराधहु मनहीं साधहू चतुर चोर जो मन अहैं ॥
मनै अहै निरञ्जन कोइ न चीन्है सुन्नवासी सब कहैं ॥

साखी-सुन्य सरूपी मन सोई, धर्मदास लेहु जानि ॥
रेख रूप वाको नहीं, जिन्दा शब्द प्रमान ॥

सोरठा-निरंकार निःरूप, परिचय वेद प्रकास इमि ॥
तिहुँपुरके सोइ भूप, नेति निगम यश गावहीं ॥

धर्मदास वचन

हे साहेब तुमको शिर नावा । तुमतो मोहिं अलख लखावा ॥
समरथ नव चरनन बलि जावें । तुम्ह ते बहु परचै हम पावें ॥
उन साहेब सम तुमहू अहहु । वैसिहि बात तुमहु प्रभु कहहु ॥

भेष तीनि दिय दरशन मोहीं । तीनो भेष मैं जानौं तोहीं ॥
सतगुरु प्रथम दरस मोहि दीन्हा । हम कहँ आय कृतारथ कीन्हा ॥
भेष छिपाय बहुरि ओहि आये । सार बात बहु मोहिं सुनाये ॥
तिसरे तुम्ह आयउ तन धारी । हम हैं तोहरे दरश भिखारी ॥
तुम्ह मोहि आय परमसुख दीन्हा । हम कहँ आय कृतारथ कीन्हा ॥
तुमतो प्रभु बहु सुख दीन्हा । तुम ते प्रभु परिचय हम चीन्हा ॥
एक बात प्रभु कहहु बिलोई । कहहु दया करि धरहु न गोई ॥
चिउँटी बहुत जरी मम पाहीं । तुम प्रताप अघ पायो नाहीं ॥
औरो कबहिं होइ जो ऐसी । हे प्रभु कहहु बने तब कैसी ॥
चेत अचेत पावँ तर परई । हे प्रभु दास कौने विधि तरई ॥

कबीर वचन

धर्मदास निःसंशय रहहू । सद्गुरु ध्यान अस्थिर चित गहहू ॥
जानिके जीव कबहिं नहिं मारो । भरोसा और दया उर धारो ॥
भरसक चूको नाहीं कबहू । सब जीवनकी रक्षा करहू ॥
साधू सेवा पर सरवस वारी । सेवा सन्त प्रीति चित धारो ॥
सन्त चरण कर अस परतापा । मेटैं दोष दुख करमज दापा ॥
साधू सेवा जीव जन धारो । नाम ध्यान धरि काज सँवारो ॥
साधू सेवा चित देइ करई । जीवन मुक्ति सो भव जल तरई ॥
तीरथ व्रत बहु करम कराहीं । सत्यभक्ति बिनु तरै जिव नाहीं ॥
कोटि तीर्थ सन्तन्हपद वासा । अंधा जीवहि नहिं विश्वासा ॥
सन्त जाहि घर चरण पखारा । भूत पिशाच होये सब न्यारा ॥
नौग्रह कर वसि नहिं चलई । सब विघ्न सदा सो टलई ॥
जेहि घर संत चरण परछालैं । सन्त उछिष्ट जाहि घर डालैं ॥
ताकर फल कछु वरणि न जाई । जाहि गहि विश्वास करे सेवकाई ॥
गुरु चरणोदक नित प्रीतिसे लेई । निहचै लोक पयान देई ॥
गुरुमुख कणिक प्रीतिसे पावे । ऊँच नीचके भरम मिटावे ॥

गुरुमुख सती महा परसादा। पावत मेटे करमकर फाँदा ॥
गुरु हैं ब्रह्म अखण्ड अमाने। गुरु कहँ नहिं मानुष कर जाने ॥
गुरुते द्रोह तजे विष बादा। गुरु निन्दा नहिं पावे स्वादा ॥
नाम पान चरणोदक सीते। कहैं कबीर भक्ति दृढ रीते ॥
गुरु सेवा संतन सनमाना। दया धर्म ले मोक्ष अमाना ॥
जग महँ जीव घात बहुतेरे। जीव घात शिर पाप घनेरे ॥
दया न गुणे करै जिव घाता। खेलि शिकार मगन मदमाता ॥
मारि मारि तन करै अहारा। जीव दया नहिं करै गवाँरा ॥
जिव घातिक बहुते दुख पावै। जनम जनम तेहि काल सतावै ॥
कागदेह धरि निरघिन खाहीं। जनम अमित तेहि विष्टा माहीं॥
शूकर स्वान जनम पुनि पावे। मीन मांस मद जाकहँ भावै ॥
साधु देव भक्ष अंकुर आहीं। मीन मांस मद राक्षस खाहीं ॥
कोटिक जप तप पुण्य कमावे। दया विना नर मुक्ति न पावे ॥

छंद-जप योग दान विधान बहु विधि करै कर्म अनेक हो ॥
सत कोटि तीरथ भूमि परिकरमा करि न पावै थेक हो ॥
जो लौं दया नहिं जीवको तो सबहि कर्म असार हो ॥
कोई लखे सज्जन जो हरि मैं कह्यो शब्द पुकारि हो ॥

साखी-जीव दया चित्त मों धरे, तजे अभक्ष्य अहार ॥
हंस दया धरि नाम गहि, उतरे भवजल पार ॥

सोरठा-सत्यनाम गुण गाय, गही साधु सेवा करे ॥
सहज परमपद पाय, सो सतगुरुपद विश्वास धरि ॥

चौपाई

जहां फूल तहँ आवे बासा। जहां साधु तहँ प्रभुकर बासा ॥
एक तत्त्व मन गुनि नाम समावें। दया क्षेम सत्य मन भावे ॥
गुरु औ साधु सेवा चित लावे। सत्यनाम गहि लोक सिधावे ॥
सत्यनाम सो विनसे नाहीं। त्रिगुण जालते न्यार रहाहीं ॥

त्रिगुण त्यागि चौथा पद भेंटे । तब जरा मरणकी संशय मेंटे ॥
चौथा पद सत्यनाम अमाना । विरला पाइ करे पद ध्याना ॥
सत्यनाम है सार अनूपा । प्रेम प्रीति गुरु दरस सरूपा ॥
काह भये यह अंगुरीके देखे । जो नहिं शीश दरश प्रभु पेखे ॥
काह भये ठठिया के भेटे । शीश दरश विनु भरम न मेटे ॥
नख सिख सत्पद दरश जबहीं । सो जिव जठर न आवै कबहीं ॥
निश्चै सत्य पर रहै समाई । कर्म भर्म तजि जिव दुरि ताई ॥
सत्यपद जिन एकहि मन लाया । शीश दरश निज निश्चै पाया ॥
सुरति निरति सत्यगुरुपद परसे । षोडश भानु चन्द्र छबि दरशे ॥
सुधापान सिंघासन सारा । हंसन्ह मिलि सुख बड़ा अपारा ॥
पुरुष दरश लोचन छकि जायी । पुरुष वचन शुभ प्रान अघायी ॥
अन्धकार तहवाँ नहिं होई । सदा अँजोर अमरपुर सोई ॥
दीप असंख्य तहँ गणिन सिराहीं । हंसा निश्चल राज कराहीं ॥
निराकार यम तहाँ न जाई । तिरदेवनकी कौन चलाई ॥
सतगुरु शरण गहहिं जो कोई । ताहि देसको पहुँचे सोई ॥
जब राजा सो तिनुका मूटे । पाप पुण्य के आशा छूटे ॥
तबहीं सत्यगुरु शब्द मन भूटे । जन्म मरणका संशय छूटे ॥
असुर भक्ष सो रहै निनारा । तजि असंग सत्संग बिचारा ॥
विरले हंस निःसंशय होई । दृढ़ प्रतीति नाम गहै सोई ॥
गुरु कहँ सत्यपुरुष सम जाने । सन्त कहँ गुरु सम करि माने ॥
होइ निःकपट चरण गुरुआशा । सद्गुरु नाम गहै विश्वासा ॥
निराधार सतनाम अधारा । शब्द सुरति जगबंध विचारा ॥
कर्म भर्म सो न्यारा होई । गुरुपद राखै सुरति समोई ॥
बहु विधि ज्ञान गुरुते पावै । यमका फन्दन सोई कटावै ॥
यमके फन्द कटे सुख होई । पशुआ हो नहिं पावै सोई ॥
गुरुका शब्द सुने जो काना । करे विचार बहुत परमाना ॥

काल रूप धरि गुरू कहावे। करि पारख तासो हरिजावे॥
अन्धविश्वास जगतसो सोवे। जाय नरक पुनि मूलहु खोवे॥
निरखि परखिके शरणे जावे। अगम निगम सब सोई जनावे॥
रहे अजाचक नामलौ लाई। जीव दया सन्तन सेवकाई॥
निजआतमसम सबही जानौ। प्रेम प्रीतिसे सेवा ठानौ॥
परमारथकी भिक्षा करिये। गुरु साधुन आज्ञा अनुसरिये॥
अभ्यागत आतम सम जाने। साधुनाम सद्गुरु सहिदाने॥

छंद–गुरुसाधु महिमा अमित अगम अपार पारनहिं कोऊ लहै॥
त्रीदेव दश औतार हरि गुरु साधु पद रज तेऊ चहैं॥
सनकादिक सुरनरमुनि सिद्धि ज्ञानीसाधु गुरु आतित रहै॥
हरि आपु मुख महिमा प्रकाशें निगम अस्तुति नित कहै॥

साखी–अस नर पाँवर अन्धमति, हृदय न करहिं बिचार॥
गुरु सन्तन्ह पद सारतजि, विष वेली प्रतिपार॥

सोरठा–सुत नारी हित प्रान, गुरु सन्तन्ह सो चातुरी॥
जब यम बाँधै तान, तब पछितावहि मुग्ध नर॥

धर्मदासवचन–चौपाई

धन सतगुरु धन तुमरी बानी। मोहिअस अधम दीन्ह गति जानी
अब साहब मोहि आपन करहू। मम शिरचरणसरोरुह धरहू॥
मैं आपन दिन शुभकरि जाना। तोहरे दरश मोक्ष परमाना॥
अब अस दया करहु दुखभञ्जन। कबहुँ मोहि न धरिपाव निरञ्जन॥

जिन्दा वचन

अहो धर्मदास दरश तुम पावो। शब्द गहे होय जिवमुक्तावो॥
यमफन्दा तब निश्चै छूटै। जब यमरासो तिनका टूटै॥
अमीअंक परवाना पावे। सुमिरण नामध्यान चितलावे॥
हियते और आस सब छाडे। सद्गुरु चरण नेह चित माडे॥

नाम कबीर जपो दिनराती । तजहुकर्म भ्रमअरु कुलजाती ॥
प्रतिमा धोखा दूरि बहावो । आतम पूजा नाम चितलाओ॥
पीतर पाथर दूरि बहाऊ । सद्गुरु सन्त सेवा चित लाऊ॥
तब जमरा तोहीं नहिं पाई । नाम प्रताप काल मुरझाई ॥
होइहैं जीव काज तब तोरा । निश्चै वचन मानु दिढ मोरा ॥

धर्मदास वचन

हे साहब मैं तब पग धरऊँ । तुम्हते कछु दुविधा नहिं करऊँ॥
अब मोहि चिन्हि परायमबाजी । तुम्हते भयउ मोरमन राजी ॥
मोरे हृदय प्रीति अस आई । तुम्हते होइहै जिव मुक्ताई ॥
तुमहीं सत्यकबीर हो स्वामी । कृपा करहु तुम अन्तर्यामी ॥
हे प्रभु देहु प्रवाना मोहीं । यम तृण तोरि भजौं मैं तोहीं॥
मोरे नहीं अवर सो कामा । निसिदिन सुमिरों सद्गुरु नामा॥
पीतर पाथर देव बहायी । सद्गुरु भक्ति करब चितलायी ॥
अरपों शीस सर्वस सब तोहीं । हे प्रभु यमते छोडावहु मोहीं॥
सन्तन्ह सेवाप्रीति सों करिहौं । वचन शिखापन निश्चय धरिहौं॥
जो तुम्ह करहु करब हम सोई । हे प्रभु दुतिया कबहुँ नहिं होई॥

जिन्दा वचन

सुनु धर्मनि अब तोहीं मुक्ताओं। निश्चै यमसों तोहिं बचाओं ॥
देइ परवाना हंस उबारो । जनम मरण दुख दारुण टारो ॥
ले प्रवाना जो करै प्रतीती । जिन्दा कहै चले यम जीती ॥
अब मोहि आज्ञा देहु धर्मदासा। हम गवनहि सद्गुरुके पासा ॥
सद्गुरु संग आइब तब पाहीं । तब परवाना तोहि मिलाहीं ॥

धर्मदास वचन

हे प्रभु अब तोहिं जाने न देहौं । नहिं आवो तो मैं पछितेहौं ॥
पछताइ पछताइ बहु दुख पैहौं । नहिं आवहुतो प्राण गवैहौं ॥
हाथके रतन खोइ कोइ डारे । सो मूरख निजकाज बिगारे ॥

मोरे प्रान पियारे तुम्ह हौ । केहि कारण अनत लैजै हौ ॥

कबीर साहबका तीसरी बार गुप्त हो जाना और धर्मदास साहबकी व्याकुलता

यह कहि धर्मदास पल लाऊँ । जिन्दा गुप्त भये तेहि ठाऊँ ॥
धर्मदास पुहुमी परु हारी । सद्गुरु कहँ बहु कीन्ह गोहारी ॥
मोहि समको जग आहि अभागा । छुटे नदेह ठगौरी लागा ॥
जिमीभुअँग मणि जाइ हेराई । विकल फिरहिं जित तित बिललाई ॥
उहै हाल सद्गुर विनु मोरा । कतपलदियेउ मन्द मति मोरा ॥
काह करौं कित दर्शन पाऊँ । बिनु दर्शन मैं प्रान गवाऊँ ॥
कीन्ह विवेक मन धीरज दीन्हा । मन महँ पकर एक पुनिकीन्हा ॥
करौं महोत्सव संत अवराधी । तब दर्शन देहिं पुरुष अनादी ॥
साहेब सन्त सनेही आहीं । सन्तन तजि वह अंत न जाहीं ॥
असहिय ठानि भवन चलि गयऊ । सन्त प्रसादको चितवन कियऊ ॥
संतधाम जहँ लगि गम पावा । तहां तहां विनतीनेवतिपठावा ॥

छन्द-दिन अवधि वाही जुरन लागे बहु भेष पहुँचे आयहो ॥
दीहुँ जुथ्थहि सेज आश्रम कीन्ह विनती जाइ हो ॥
दे भाव भोजन गमनिरखहिं सकल भेष अलेखही ॥
सबहि निरखहि सुरति परखहिं हृदय समाह विवेकही ॥

दोहा-पान सुपारी हाथले, करहिं दण्डवत जाय ॥
भेषन सो चित विलखिके, पूछहिं मन परिचाय ॥

सोरठा-तुम्ह हो सन्त सुजान, निजदासन्ह सुख देतुहौ ॥
सत्य पुरुष सहिदान, सत्य लोक महिमा कहो ॥

बेष मता वर्णन

चौपाई

कोई कहै त्रिदेव अवराधौ । कोई कहै व्रत करि तन साधौ ॥
कोई कहै करु प्रतिमा सेवा । कोई तीरथ कोई जपतप भेवा ॥

कृत्रिमभक्ति जो सबै दृढावे । सत्य सारपद नाहि बतावे ॥
तब अकुलायसंसाधरि जोये । प्रगट नहीं गुप्तहिं हिय रोये ॥
प्रति आश्रमगम्य उठी निरासा । जिततित चितवहिं धर्मनिदासा ॥
पुनि चितवन उत्तरदिशिकीन्हा । मूरति एक भिन्न तहँ चीन्हा ॥
धमदास तहँ बेगि सिधाये । प्रथम रूपको दरशन पाये ॥
धायचरणगहि अति अदरागा । बुन्दपाय चात्रिक जिमि पागा ॥
गुरु पद पाय प्रीति चित जागा । होसतगुरु मोहि कीन्ह सुभागा ॥
धाये चरणनगहिअति अनुरागा । युगपदगहेउ प्रीति चित लागा ॥
करगहि दास उठायेउ स्वामी । सुधा वचन कह अन्तर्यामी ॥

सतगुरु वचन

धर्मदास तुम्ह हंस सुहेला । मोहिं दरश कह कीन्हेउ मेला ॥
इच्छा सफल भइ सुन तोरा । अब तुम्ह दरशन पायउ मोरा ॥

धर्मदास वचन

हे प्रभु जौं दर्शन नहिं पावत । तौ हम निश्चै प्राण गवाँवत ॥
अब प्रभु कीजे कृपा तुरंता । दीजे बीरा अविचल संता ॥
यमसे तिनुका बेगि तोराओ । वन्दी छोरि मोहिं मुक्ताओ ॥

सतगुरु वचन

सुनुधर्मनि जो कहो सो मानो । तजि संशय धीरज चित आनो ॥
करहु जाय सन्तनसनमाना । ता पीछे देहों परवाना ॥

धर्मदास वचन

हे प्रभु कहो सोई हम माने । करब जाइ सन्तन्ह सनमाने ॥
हे प्रभु जौं कतहूँ अब जाहू । तौ जीवित नहिं पइहौ साहू ॥

सतगुरु वचन

हे धर्मनि सुनहु मम वानी । कतहुं न जाब सत्य हियजानी ॥
करि प्रमान चितवत चलु पाछे । जौं नटनिरत सुघरता काछे ॥
जाय कीन्ह सन्तन सनमाना । यथा शक्ति पुजा परधाना ॥

विदा कीन्ह सन्तन्ह करजोरी । बख्शहु जो हमरी भइ खोरी ॥
सब सन्तन निज धाम सिधाये। धर्मदास सद्गुरु पहँ आये ॥

धर्मदास वचन

कहै धर्मनि सुनु दीनदयाला । आतुर छोड़हु बन्ध कृपाला ॥

सतगुरु वचन

धर्मनि जो चाहहु परवाना । आनहु आरति साज सुजाना ॥

धर्मदास वचन

अहो साहब कस आरतिसाजा। सो भाषहु आतुर जिवकाजा ॥

सतगुरु वचन

धर्मनि चहिये नारियर पाना । मेवा सो अष्ट करू मिष्टाना ॥
चन्दन चौकसुगन्धि कराओ । कलशा पल्लौ पञ्च धराओ ॥
गोघृत वसन सकल शुभ चारू। साजि थार पुनि आरतिबारू ॥
सिंघासन पुनि सेत बनाओ । झारी दल कपूर मेराओ ॥
श्वेत पुहुप केदली पनवारा । आनि वेगि जनि लावहुवारा ॥
रतना कंदइनिनगर महँ आहीं । गुड़ मिष्टान्न तिनहिं कर चाहीं॥
धावहु वेगि तुरति लै आवहु । आनहु वेगि वार जनि लावहु ॥

धर्मदासजीका रतनासे मिलना

छन्द-पदकंज टेक्यो चले विचारत कहाँधौं रतना अहै ॥
कहँ पूँछि लीजे भवन उनकै निज हिये गुनता रहै ॥
तहँ आय रतना ठाढ़ि भयी मिष्टान्न लै कर जोरि कै ॥
भो साहु येहु प्रसाद लीजै नाम रतना मोर है ॥
दोहा-धर्मदास रह सकुचि चित, यह तो अचरज बात ॥
हो माता किमि जानेउ, कहहु सोइ विख्यात ॥

रतना वचन

सोरठा-सुनु धर्मनि हम नाहिं, यह लीला सद्गुरु कियो ॥
हम उन सेवक आहि, जिन्ह तोहिं शब्द चेताइया ॥

धर्मदास वचन–चौपाई

लेहु दाम धन्य हो तुम माता। एक प्रान देखिये दुइ गाता॥

रतना वचन

अहो धर्मदास कस मोल बताओ। उन्हको तन मन वेगि सिधाओ॥
और वस्तु लेहु अतुराई। गवनहु वेगि सुनहु गुरु भाई॥
चलिभे धर्मदास पुनि तबहीं। रतना आकर भाष्यो जबहीं॥
लीन्ह वस्तु पुनि सकल सम्हारी। धनी पहँ सब जाय सवाँरी॥
ले साहबके सनमुख राखे। साजु थार अस आयसु भाखे॥

सतगुरु वचन

चौका सवाँरि थार रचि धरेऊ। सब विधान आज्ञा सम करेऊ॥
साहेबके पुनि चरण पखारा। चरण पखारि आसन बैठारा॥
आसन बैठिके सुमिरन कीन्हा। नारियर मोरि अंशगहि लीन्हा॥
सत्य सुकृत कहँ मालुम कीन्हा। तब त्रिन तोरि परवाना दीन्हा॥
ले नारियर प्रसाद सुख माना। धर्मदास चित हर्ष समाना॥
प्रेम सहित चरणोदक लीन्हा। मुख महँ डारि मिठाई दीन्हा॥
सात दण्डवत ततक्षण कीन्हा। हृदय माहिं गुरु रूप गहि लीन्हा॥
दण्डवत सात धनी कहँ कीन्हा। शब्द सुरति पुनि चित गहि लीन्हा॥
सात दण्डवत कीन्हा जबहीं। माथे हाथ दियो प्रभु तबहीं॥
धर्मदास चित हर्ष समाना। उपज्यो हिरदे निरभे ज्ञाना॥
सद्गुरुकी जब सुरति समानी। विनश्यो करम भरम यमखानी॥
सद्गुरु पद जबहीं अस्थापा। उदित ज्ञान पद रज परतापा॥

धर्मदास वचन

हे साहेब जो आज्ञा कीजे। प्रतिमा मूर्ति काहु कहँ दीजे॥
गुरुते अधिक कौन है देवा। अब हम करब तुम्हारी सेवा॥

सद्गुरु सम नहि देखौं आना । पूजि शिला मम जन्म सिराना ॥
कबहुँ न कहेसि मुक्ति उपदेशा । तुम्ह मेटेउ मम काल कलेशा ॥

सतगुरु वचन

धर्मदास यह चित गहि धरहू । प्रीति सो साधु सेवा अनुसरहू ॥
पीतर पातर पूजहिं अन्धा । जो गुरु ज्ञानहीन मति मन्दा ॥
प्रभु कहँ शिलारूप करि देखै । ताकर जीवन जन्म अलेखै[१] ॥
शिला माहि जो सुरति लगावै । तन धन शिलारूप सो पावै ॥
जहाँ आशा तहँ बासा होई । ताकहँ मेटि सकै नहिं कोई ॥
चकित वृषभ ज्ञात बिनु प्रानी । जित जित भेटै नहिं पहिचानी ॥
ज्यों कन्या रह पिता अवासा । कौतुक करहि पूजहिं मन आशा॥
भयेउ वर कन्या कर व्याहा । तब सब तजेउ मिलेउ जब नाहा ॥
बिना खसम कस आस बुझाई । अस प्रतिमाकी पूजा भाई ॥
जबलौं ज्ञान न हिये समायी । तब लगि धोखा भरम रहे छायी॥
जब गुरु पूरा मिले मतिसारा । उदे ज्ञान रविछपित होय तारा ॥
जब उजियार होय घर भाई । धोखा भरम तब सहज नसाई ॥
ताते गुरुपद सुरति समाओ । सतगुरु ध्यान अभैपद पाओ ॥
गुरु ते अधिक न कोइ ठहरायी । मोक्षपंथ नहिं गुरु बिनु पाई ॥
राम कृष्ण बड तिहुँपुर राजा । तिन गुरु बंदि कीन्ह निज काजा॥
देवऋषी[२] मुनिवर शुक शेषा । सबहीं बन्दै गुरु चरण सुरेशा ॥
तन धरि करहु न गुरु कहँ मेटा । गुरु गमि सबै साहुपद भेटा ॥
मूर्ख जीव कर गुरुहिं अकेला । बिनु गुरु जगत कालको चेला ॥
गुरु विनु सार ज्ञान नहिं पायी । ज्ञान विना नहिं आपु चिन्हायी॥
जौं हिय आपु आप गमि नाहीं । तौं लगि जीव भव भटका खाहीं॥
सो गुरु सत्य जो सार चिन्हावै । यम बन्धन ते जिव मुकतावै ॥
धर्मनि तुम्ह मम शब्द बिचारो । सरवमई यक ब्रह्म निहारो ॥

---

१ वृथा किसी लेखामें नहीं २ नारद !

बोलत घट महँ ब्रह्म अखण्डा । रोमहिं रोम गरजे ब्रह्मण्डा ॥
जो बोले सो कबहिं न मरई । गन्दा तन नर सरि गलि जरई ॥
ब्रह्म देह धरि जीव कहावै । पाँच स्वाद रति सो दुख पावै ॥
निज घर डोरी छूटै भाई । जीव रहे यमफन्द अरुझाई ॥
सद्गुरु मिले डोरि घर पावै । पाँचन्ह कर परपञ्च नसावै ॥
आपुहि जीव ब्रह्म है भाई । गुरु परिचय बिन लखो न जाई ॥
निः अक्षर लख तत्त्व विदेही । सत्यनाम गहि मिलै सुख तेही ॥
जौं लहि तन महँ ब्रह्म सुरंगा । तब लगि रहै तन मन बहुरंगा ॥
यंत्री ब्रह्म यंत्र तन आही । यंत्री विनु नहीं यंत्र बजाहीं ॥
परिचै ब्रह्म दया चित लावै । सद्गुरु सेइ परम पद पावै ॥
पूजहु सरजिव साधु अमोला । लहहु अभय पद निश्चय लोला ॥

छंद–परखि देखहु श्रेष्ठ वानी शास्त्र सुस्मृति मत घना ॥
जिन्ह साधु सेवा कीन्ह तिन्ह लीन्ह अभैपद सुखसना ॥
योग यज्ञ आरम्भ कीन्हों ते गये पुनि हारि हो ॥
गुरु भक्ति अरु सतसंग कीन्हो ते चले कुल तारि हो ॥

दोहा–महिमा अनित साधु गुरु, समझहु सन्त सुजान ॥
पाहन सेवत भरम वश, बूडे सकल जहान ॥

सोरठा–साहब सन्तन पाहिं, जो सेवै सो भव तरै ॥
करम भरमके माहिं, जाय विगुरचे जीव बहु ॥

धर्मदास वचन–चौपाई

हो साहब तव पद शिर नाऊँ । तव पद परसि परमपद पाऊँ ॥
केहि विधि आपन भाग सराही । तुम बरत गहैं भाग पुनि ताही ॥
कोधो मैं शुभ करम कमाया । जो सद्गुरु पद दरशन पाया ॥

सतगुरु वचन

तब सत्य पुरुष आज्ञा मोहि कीन्हा। तत क्षण आय पृथ्वी पग दीन्हा
बार अनेक कीन्ह मिलापू। धरम दास नहिं चेतहु आपू ॥
पाहन पूजि ध्यान मन लाये। सद्गुरु शब्द चीन्हि नहिं पाये॥
तीरथ व्रत कीन्ह बहु करनी। रूपदास गुरुकी गहि शरनी ॥
तासु प्रीति तोहि आन जगावा। नाम प्रताप यह परभावा ॥
जो जिव नाम तुम्हारा लैहैं। ताहि जीवको काल न खैहैं ॥
सदगुरु भक्ति जाहि कुल होई। तरे एकोतर पुरुषा सोई ॥

दूसरी प्रतियोंमें नीचे लिखे अनुसार है

सद्गुरु वचन

धर्मनि सुनु आपनी करनी। जेहि तोहि मिलेउ शब्द भीतरनी॥
द्वापर अन्त सुपच तुम रहेऊ। तव सुत एक सो मम व्रत गहेऊ॥
तासु प्रीति तोहि आनि जगावा। है परताप नाम परभावा ॥
सदगुरु भक्ति जाहि कुल होई। तरे एकोतर पछिला सोई ॥
वही संयोग तोहि हम भेटे। तुव सुत प्रीति तार दुख मेटे ॥

नोट—एक प्रतिमें तो ऊपरके प्रमाणहो लिखा है किन्तु कई प्रतियोंमें ऊपरकी नौ पंक्तिके बदले नीचेकी पंक्तियां लिखी हैं। पाठक गण स्वयम् विचार करके जो उत्तम और प्रामाणिक समझे वह रखे और पाठ करें। किन्तु इतना तो अवश्य कहा जायगा कि भिन्न २ ग्रन्थोंमें इन दोनों बातों का प्रमाण मिलता है। और लेखक महात्माओंकी कृपा से पक्षपात और अविद्यावश कबीरपंथके ग्रन्थोंकी जो दुर्दशा हुई है वह साक्षर वर्गसे छिपा नहीं है। ग्रन्थोंकी यही दशा देखकर स्वयम् कबीर पंथ यहांतक वंशधर कहीं कतिपय महंत संत लज्जावश हो किसीके सामने इन ग्रन्थोंका नाम लेते भी सकुचाते हैं। और हृदयसे इन सब ग्रन्थोंपर अश्रद्धा रखते हैं। इस ज्ञान प्रकाश की कई प्रतियां मेरे पास उपस्थित हैं किन्तु किसी भी प्रतिका एक दूसरे के साथ मिलाप नहीं होता है। इसी प्रकारसे लगभग सब ग्रन्थोंकी दशा हो गयी है। जो जो नवीन प्रतियां हैं उन सबोंमें अटपट छन्दोभंग अर्थभंग और भावभंग आदि दोष पूर्ण रीतिसे भरे हैं। हां पहलेकी प्रतियां कुछ शुद्ध हैं उसीके अनुसार जहांतक होता है रखनेका प्रयत्न करता हूं। ऐसा करनेपर भी प्रस्तुत विषयके समान जहां संदिग्ध विषय आजाते हैं वहां दोनोंको रख देना उचित जानता हूं। इतना होगा जिनके पास जैसी २ प्रति होगी वे अपनी प्रति—

सर्वानन्दकी कथा

है धर्मनि परखहु चितलाऊ। विप्रगोष्ठि तोहि बरन सुनाऊ॥

धर्मदास वचन

गहि पद धरमदास हरषाना। कहिये विप्र गोष्ठि सहिदाना॥
जस कछु भयी विप्र सो चर्चा। सो स्वामी कहिये मोहिं परचा॥
भिन्न २ के वर्णन कीजे। दास जानि दया प्रभु लीजे॥

सतगुरु वचन

भलधर्मनि सुनहु अब सो कथा। गोष्ठिभयी सर्वानन्द से यथा॥
सर्वानन्द विप्र एक रहई। कोइ न ज्ञाता तिनसम अहई॥
सर्वानन्द द्विज जो रहेऊ। तासम ज्ञान अवर नहिं कहेऊ॥
बहुपण्डितसोंगोष्ठितिन्हकीन्हा। ज्ञानजीति पोथी बहु लीन्हा॥
काहु न जीते गये सब हारी। सर्वानन्द मन गर्व बहु भारी॥
जिन्ह पण्डितसों चर्चा कीन्हा। ज्ञान जीति पोथी बहु लीन्हा॥
गोष्ठि वाद के निजघर आया। बाहुअभिमानगुमान चितलाया

सर्वानन्द वचन माता प्रति

मातासों तिन वचन उचारा। हो जननी बड़ भाग्य तुम्हारा॥
हम अस पण्डित हैं सुत तोरा। काहु न जीतै गोष्ठि सो मोरा॥
सर्वाजीत नाम मम धरहू। अजित तिलक सिर हमरे करहू॥
काहे जननी धन्य पुत्र प्रवीना। सहि ज्ञाता तुम्ह हमहूँ चीन्हा॥

माता वचन

हो सुतएक पूँछौ तोहिपाहीं। कबीरजोलहहिंजीतेहुकिनाहीं॥

और श्रद्धाके अनुसार बाचेंगे। इसी प्रकारसे अनुरागसागरकी अनेक प्रतियोंमें भी सुपच सुदर्शनके पिताकाही अनेक जन्मके पश्चात् गुरु धर्मदास साहब बनना लिखा है किन्तु अभी जो इस पुस्तकके साथही छपे हुए अनुरागसागरमें सो बात नहीं है उसका कारण यह है कि वर्तमान आचार्य्य पं० श्री उग्रनाम साहबकी सेवामें जो अनुरागसागरकी प्रति छपानेके लिये मुझको मिली थी उसके अनुसारही यह अनुरागसागर छपा है।

सर्वानन्द वचन

सुनु जननी तव ज्ञान हंताना । काजोलहा संवादमतिजाना ॥
पण्डित कोई जीते मोहि नाहीं । सो जोलहा वादहि हम पाहीं ॥

माता वचन

सुनु सुततबहि कहब हम ज्ञानी । जब जोलहहि जीतहु बुधवानी॥
जोलहहि जीतिआवहु तुम जबहीं। सर्वाजित कहब तोहि तबहीं ॥
तबहीं तोहि सिरसारव टीका । बिनुजोलहिंजीजीतेबुदिफीका॥

सर्वानन्द वचन

अहो माता कवीर कहाँ रहहीं । कौन भेषबानी का कहहीं ॥
(कहां कबीर रहे हो माता । कौन भेष बाना है ताका)

माता वचन

हो सुत काशी रहत है सोई । अविगत लीला लखै न कोई ॥
(काशी है उनका अस्थाना । तिनकर लीला कहा बखाना ॥
नाम कबीर जोलहा कहलावहीं । भक्ति भेष सो हरिगुण गावहीं॥
(जोलहा नाम कबीर बतावे । भक्ति भेष हरिगुन गावे)
जब जनती बहुने धिरकारा । बढ्यो क्रोध भयो विकरारा ॥
कीन्ह प्रणाम चितवत अभिमाना। काशी कहँपुनि कीन्ह पयाना ॥
आये नगर पैसारी कीन्हा । घर पूछिके चितवन लीन्हा ॥
तहाँ कमाली तहँ कह गयेऊ । पन्थ विप्र तंहि पूछे लियेऊ ॥

सर्वजीत वचन कमाली प्रति

अहो कन्या मोहि कहहु बुझायी । कवीर जोलहाँ कहाँ रहायी ॥

कमाली वचन

कन्या बिहँसि कहेउ एकबानी । को अस घर कवीर गमिजानी॥
त्रिदेवता तिहुँपुर अधिकाई । तिनहु घर कवीर गमिपाई ॥

वाद करेगा अर्थात् सर्वाजीत कहता है, कि, जब बड़े पंडितों ने हमको नहीं जीता तो जोलहा हमसे क्या शास्त्रार्थ करेगा ।

सुर नरमुनि औ जहाँ लगि देवा। तेहि घरकी कोइ लखै न भेवा ॥
बीचहि अरुझि रहै यम फांसा । चीन्ह न पावै अविचल वासा॥
घर कवीर जहाँ है भाई । तहाँ त यमराजा गमि पाई ॥
जाहि दया सद्गुरु की होई । घर कबीर गमि पाव सोई ॥
द्विज चकित कन्या की बाता । यह तो अचरज आहि विधाता॥

सर्वजीत वचन

हो कन्या तुम्ह अचरज भाषा । अबमोहिकहहुप्रगट अभिलाषा॥
यह कन्या तो निजकर भाषा । धाम कबीर प्रगट कहँ वासा ॥
काशी मांह रहहिं केहि ठाईं । तौन भौन तुम्ह मोहिं बताई ॥

कमाली वचन

चलु द्विज तो कह भवन दिखाऊँ। कहो सो जाय संदेश सुनाऊँ ॥
तब सर्वानन्द कीन्ह विचारा । जोहका ज्ञान देखों यहिवारा ॥

सर्वानन्द वचन

जल पूरण वर्तन भरि लेहू । लै कबीरके आगे धरिदेहू ॥
कहुहिसोमोहिं सुनावहु आई । हो कन्या यह सुन चित लाई॥
सन्मुख लै वर्तन धरिदेहो । जो कछु कहैं सो हमसे कहिहो॥
कन्या भौन तुरत चलि आई । आवतहीं अस वचन सुनायी ॥
कन्या अस वचन उचरंता । विप्र द्वार ठाढ बुधिवंता ॥
जिन्ह जल पत्रदीन्ह मोहिं पाहीं। वचन संदेस कहा कछु नाहीं ॥
तब हम उठके सुइ एकहेरा । जल मँहडारि दीन्ह तेहिं बेरा ॥
कन्या वरतन देहु तेहि जाई । पाछे हमहुं ताहिं पहँ आई ॥
जाइ द्विजहिं जलवरतन दीन्हा । कन्यहिं विप्र पूछि पुनि लीन्हा॥

सर्वानन्द वचन

अहो कन्याकसकहिनविचारा । भाषिसुनावह सोनिरुवारा ॥

कमाली वचन

कन्या कहै भाषिन कछु नाहीं । सूई एक डारि दीन्ह जलमाहीं ॥
पण्डित मूरख मरम न पावा । कहत न बूझै सुई प्रभावा ॥

गुनहीं विप्र बहुत हिय माहीं । पुनि हमहू गे भेटेऊँ ताहीं ॥
कुशल प्रश्न पूछी सनमाना ॥

सर्वानन्द वचन

कहे पण्डित सुई मरम नहिं जाना ॥

कबीर वचन

तब हम कहा सुनो द्विजराई । अम्बु सुईगमि कहो बुझाई ॥
पठयउ जलभरि अस अनुमाने। हम विद्या सम्पूर्ण अघाने ॥
जिमि वरतन जलअम्बु न समाई। तिमिहम विद्या रहे अघाई ॥
भरे महँ का भरै कबीरू । अस तुम्हरे चित सुनमतधीरू॥
तुव हियगमि जानि द्विजराई । तब दीन्ही जल सुई एक नाई ॥
जौ विद्या सम्पूरण हो भाई । तौशब्द हमार बेधि तोहिजाई॥
सुनिपण्डित चितसम्भत्र आना। हृदय कहै अगमइन ज्ञाना ॥
तेहि क्षण रहेऊ हिये अनुमानी । प्रातहिं करब गोष्टि कहानी ॥

छन्द–तेहि दियो आसन आत्म पोषन भाव सहित समर्पेऊ ॥
द्विज कीन्ह भोजन सेज पौढ़े रैनि हिये बहु तर्केऊ ॥
चिन्ता करत बहुत गुनावन वेद विधान ज्ञान अटावहीं ॥
होत प्रात कीजे वाद जो लइहिं जीव युक्ति अटावहीं ॥

साखी–बीतेउ रैन प्रभात औ, करि विचार मन माहँ ॥
सत्यनाम पद सुमिरिकै, पहुँच गये तिहि पाहँ ॥

सोरठा–भयेउ विप्र उठि ठाढ, गयेउ जंगलकी दिसा ॥
करत तरक चित गाढ, बैठे तजे शरीर मल ॥

चौपाई

हम गे रामनाम तेहि कहेऊँ । सुनतहिविप्रहृदय अति दहेऊ॥
भयेउकोप अतिकीन्हप्रसन जल। इच्छायुक्ति नासिकै तजीमल ॥

सर्वानंद वचन

कहै विप्र देख्यो तुव ज्ञाना। फिरिजोलहा तुम्हजातिअयाना॥
ऐसे समय राम तुम्ह बोले। कहा कहो हरि त्रास न डोले॥

कबीर वचन

अहोविप्र मोहिं कहहु बुझाई। कौनी समै रामलौ लायी॥

सर्वानंद वचन

कहा सर्वानन्दसुनहु जोलाहा। करम नीति भाषौं तोहि पाहा॥
वेद प्रमान लै माटी पानी। तबमुख शुद्धराम जपुजानी॥

कबीर वचन

अहो विप्र जौ हम अस करहीं। तौ मुख शुद्ध होय संचरहीं॥

सर्वानन्द वचन

कहै विप्र है वेद प्रमाना। तब मुख होय पवित्र सुजाना॥
यह कहिचलिभो सुरसरितीरा। कर पग मज्जहिं मुखदे नीरा॥
हम पुनिकर पग्र मज्जे लीन्हा। कर पखारि पुनि कुल्ला कीन्हा॥
कुल्ला कीन्ह द्विजवचन प्रमाना। एक कुल्ला तेहिं ऊपर ताना॥

सर्वानन्द वचन

चिहुँकि उठे द्विज यहका कीन्हा। फिरिजोलहातुम्हजाति कमीना॥

कबीर वचन

हो सर्वानन्दमुख शुचि भयऊ। कुल्ला कीन्ह अशुचि तर गयऊ॥
यहिविधि मुखशुचि तुम भाषा। तुम्हरो कहा हिये महँ राखा॥
हो सर्वानन्द तुह्म बड ज्ञानी। सत्य नाममर्मअजहूँ नहिजानी॥
रज अरु बीज नरककी देही। सदाअशुचि शुचिनाम सनेही॥
जो मल तजत प्राण करे गवना। करमुख शुचि हरिजप कवना॥
समुझि शब्दसो रहु मुखचाहू। उत्तर कछु तब दीन्ह न ताहू॥
पुनि द्विजमंजनलाग्र शरीरा। ताम्रपात्र एक लीन्ह कबीरा॥

गोबर घोरि ताहि भरि लीन्हा । वरतन कर मुख ढाँकन दीन्हा ॥
लै त्रिन रेनु जल मंजै ताही । झलकै अधिक प्रगट मल नाही ॥

सर्वानन्द वचन

कहा सर्वानंद सुनहुँ कबीरा । भो सुन्दर वर्तन मति धीरा ॥
केहि कारण अब मांजहु भाई । मल नहि तनिको देइ दिखाई ॥

कबीर वचन

सुनु पंडित नीक तुम्ह कहेऊ । अपर शुचि अन्तर मल रहेऊ ॥
मोंहडा खोलि उलटि दिखलावा । सर्वानन्द देखि घिन पावा ॥
सुनु सर्वानन्द अस नर बाता । अंतर मल प्रगट शुचि गाता ॥
जलमञ्जन तन मैल नशायी । मन मल कहो कौन विधि जायी ॥
विन गुरुज्ञान न मन शुचि होई । रैन दिवस तन मज्जै कोई ॥

सर्वानन्द वचन

कहै विप्र मन मल कहु मोहीं ।

कबीर वचन

कहै कबीर कहौं मैं तोहीं ॥
काम क्रोध तृष्णा हंकारा । लोभ मोह मन मैल विकारा ॥
परनिन्दा परघात अनीती । मन रहै अशुचि कुकर्म कुनीती ॥
छन्द–सुनु विप्र सोई पंडित सोई ज्ञाता जो परमोधै पाचहीं ॥
जहँ लगि योगी मुनी मुनीश्वर पांच वशि सब नाचहीं ॥
यहि पाँचके परपञ्च महँ सब परे शिव सनकादिक हो ॥
इन्द्र आदि अरु बहु भेष लूटै विष्णु ओ ब्रह्मादि हो ॥
साखी–असरे पखेरिन्ह लूटिया, को नर कीट पतंग ॥
कहैं कबीर सो ऊबरे, निरख परखि करे संग ॥
सोरठा–करि गुरु पद परतीति, सद्गुरु शब्द निरखत चले ॥
निश्चै पाँचो जीति, घर अंजोर जागत रहै ॥

चौपाई

सर्वानन्द मगन मन भयऊ। पै उत्तर कछुओ नहि दियऊ ॥
पुनि लागे जल अरपे सोई। चित निश्चल छल एक न होई ॥
हम जल उलिचन लागु करारे। सर्वानन्द पुनि मोहिं निहारे ॥

सर्वानन्द वचन

कहैं सर्वानन्द सुनहु कबीरा। काह कवन उलिचन हो नीरा ॥

कबीर वचन

कहैं कबीर सुनु विप्र सुजाना। फुलवारी गुरु केर सुखाना ॥
तेहि सींचन कहँ पठइन्हि नीरू। सुनु पण्डित अस कहहिं कबीरू ॥

सर्वानन्द वचन

कह सर्वानन्द यह अनरीती। बात अगम भाषहु विपरीती ॥
कहां धौं फुलवारी है भाई। जल सुरसरि महँ रहै समाई ॥

कबीर वचन

तब हम कहा सुनु पण्डित राजू। तुम्ह जल उलिचो कौने काजू ॥

सर्वानन्द वचन

कहा सर्वानन्द सुनहु गोसाई। देव पितर जल तृषित अघाई ॥

कबीर वचन

हो सर्वानन्द कहहु यह मोहीं। कहा पितर तुव पूछों तोहीं ॥

सर्वानन्द वचन

कहे सर्वानन्द सुनहु सुजाना। देव पितर मम स्वर्ग अस्थाना ॥

कबीर वचन

कहै कबीर जल ठामहिं रहई। कहहु पितरधौं केहि विधि लहई ॥
कीधौं जलहिं रहै तव पुरखा। पढ़हु वेद यह लखेउ न मुरखा ॥
वेद शास्त्र नहिं करहु विचारा। हरिके कचन आहिं जग सारा ॥
पित्ररूप जनार्दन भाखा। जनार्दन आप सन्तन्ह महँ राखा ॥

हमरे अस मति जानिय भाई। साधु माहिं प्रभु प्रकट रहाई ॥
जहाँ हरी तहाँ पितर अरू देवा। सब होइ तृप्त साधुकी सेवा ॥
कहाँ अन्तै प्रभु खोजौ जाई। हम देखैं प्रभु सन्तन आई ॥
हरिऔ सन्त दोय जनिजानौ। प्रभु कहँ सन्तन्ह माहिं पिछानौ॥
अस परतीति आनहु उरमाहीं। सन्तन्हतजि अन्तै प्रभु नाहीं ॥
जल तरंग जल आहै भाई। हरि हरिजन अस माँहि रहाई॥
जैसे वृक्ष वृक्षकी छाया। अस हरिहरिजनमाहिं रहाया ॥

छन्द–तुलसी अभूषण जीवदायातहाँ आपुहरि निशिदिन रहैं ॥
अरू तहाँ प्रकट निवास प्रभु गुरू साधु सेवा जो गहैं ॥
हैं आपु सर्व भूतमय प्रभु गुप्त प्रगट लेखिये ॥
हरि प्रगट सन्तन्ह गुप्त जग शास्त्र निगम विवेकिये ॥

दोहा–हरिपूरण सब माहिहै, पण्डित करहु विचार ॥
ज्ञान दृष्टि ते परखहू, कहै कबीर विचार ॥

सो०–ज्ञान दिव्य जब होंय, करम गरम तब छूटई ॥
पण्डित गहहु विलोय, देव पितर सब साधु महँ ॥

चौपाई

रहेउ मुग्ध होय कछु नहिं बोला। ज्ञाता शब्द परखि हिय डोला॥
पुनि चौकाकरि शिला विडावा। प्रतिमापूजन कहँ मन लावा ॥
वेद नित्य बहु करहिं विधाना। तहाँ हमहूँ उपाय यकठाना ॥
मुरतिन कहँ पुनि पूछहिंकुशलता। कहै न मूरति कछु मुखबाता ॥
हो पण्डित कस देव तुम्हारा। एकहु बात न सुनहिं हमारा ॥
तब हम पण्डित सो यह कहिया। प्रतिमा पूजन जेहिचितरहिया॥

कबीर वचन

हो पण्डित कस देव तुम्हारा। एकहुबात न सुनहिं हमारा ॥
मेवा मिठाई साजि धरू आगे। खाहिं न मूरति परम अभागे॥

आँख कान मुख नाही स्वासा । केहि विधिमूरति करहिं गरासा ॥
हो पण्डित जनि सुनत रिसाहू । कहो परमारथ शब्द उछाहू ॥
मुरति सरीजव पूजहु ताहीं । इन्ह ते सृष्टि उहै सुनु आहीं ॥
सरजिव पाती तोरि तुम आना। सो लै निरजिव पूजा ठाना ॥
हो पंडित तुम आप न चीन्हा । विनु गुरुज्ञान चक्षुबुधि हीना ॥
जग महँ ब्याह करै जो कोई । आपुते अधिक होय जो सोई ॥
आपुते अधिक मिलै जो नाहीं । तौ निज समन रखो जमिलाई ॥
तुम सर्जीव घट ब्रह्म समायी । कस निर्जीव अबोल मन लायी ॥
सरजीव होय सरजीव कहँ सेवे । ज्ञानी शब्द परखि हिय लेवे ॥
मैं तोहिं कहौं सुनो हो देवा । जिव है अमर अलेक अभेवा ॥
जीव अमर तन विनशै भाई । तन धरि जीव बहुत दुख पाई ॥
अमर नाम जब जीए भेटैं । जेहिजन्म मरणको संशय मेटैं ॥
अमर नाम खोजहु द्विज राई । जेहि प्रताप यम निकट न आई ॥
अमरनाथ सत्पुरुषको सारा । सत्यपुरुष सत्यलोक मँझारा ॥
अमरलोक सतलोकहि आहीं । तीनि लोक परलैतर जाहीं ॥
कृत्रिम कला नाम धरु जेते । जनमै मरै प्रलयतर भै तेते ॥
जासु चेतना अमर है भाई । तासु नाम अमर सुखदाई ॥
अमर देह सतपुरुषके आही । वो नहिं आवै गर्भके माही ॥
जो सतगुरु पद रहै समायी । ते हंसा सतलोकहीं जायी ॥
अमर नाम सतगुरुते पावै । सतगुरु अस्थिर ध्यान लखावै ॥
भूत भविष्य जंपै नर लोई । सत्यनाम विनु मुक्ति न होई ॥
वरतमान महँ सतगुरु सारा । सतगुरु भवतारण कँडिहारा[1] ॥
जागृत स्वप्न सुषुप्ति तुरीया । जागृत आहि संजीवन मुरिया ॥
जागृत रहै तुरिया सो पावै । स्वप्न सुषुप्ति जग भरमावै ॥
पुरुष विदेह तुरिया अस्थाना । जागृत ब्रह्म देहुमों जाना ॥

---

१ करणधारका अपभ्रंश है ।

तीरथ बरत जप पूजा पाती । करम भरम ओजाति कुजाती॥
यह मति स्वप्न सुषुप्ती अहई । जागृत विनु कोई भेद न लहई॥
जागृत ब्रह्म देह धरु सोई । सबसे श्रेष्ठ साधु गुरु होई ॥
बोलता तजि किमि जड़ लो लायी। जड़ पषान सेव कहँ पायीं ॥
इतना कहि फिरि हम कहिया ।तिन आपन हाथ यक बाहर रखिया॥
हो पण्डित यक बूझों तोही । करि विवेक चित कहिये मोही॥
बायूँकर चोका के बाहर । केहि कारण सो कहहु विद्याधर॥

सर्वानन्द वचन

सर्वानन्द कहै अस सूत्रा । बाएँ कर परसे मल मूत्रा ॥
केहि कारणयह कीन्ह निषेधा । चौकाके बाहर कर जिन्दा ॥

कबीर वचन

कहै कबीर यह अचरज बाता । उलटी रीति अपंथ जगजाता॥
तुम्हरे हृदय महँ मल भरिया । मलद्वारे मल त्यागित करिया॥
कर शुचि करै अशुचिमलद्वारा । ताहि निषेध तुम करिडारा ॥
विपरीति कथा कहो कस भाई । राजा पण्डित सब अन्याई ॥
धन्य पंडित धन्य तोर वेदा । कहै कबीर सिद्ध मत भेदा ॥
सुनिवाणी चितभयेउ अँजोरा । लागेउ शब्द प्रेम हित मोरा ॥
नायशिरतिन दुइकर जोरा । जो कछु कहो सो है सब थोरा॥
पुनि जलपान करै तिन चाही । जल माटीके वरतन माही ॥
करवा छुई दीन्ह हम भाई । सर्वानन्द चित रहेउ सकाई ॥
कर करवा लै रह मुख चाहीं । भरम बड़ो जल अँचवै नाहीं ॥

सर्वानंद वचन

कस छुयेउ मम वरतन स्वामी। हम ब्राह्मण तुम यती अनामी ॥

कबीर वचन

हो पंडित यह कहहु बुझायी । उत्तम मध्यम सो कोहै भाई ॥

छन्द-तन अस्थि माँस रुधिर त्वचा सर्व में सुनु एक है ॥
प्रकृति तत्त्व त्रिगुण सबै यह कौन भेद विधेकहै ॥
सो ब्रह्म विप्र सर्वमर्या सर्वमयी सुनु एक जो ॥
पढि शास्तर निगम पुराण बहु भरम कहा मंडेक जो ॥
दोहा-कर्म अशुचि जेहि देखिये, सो अस करैं विचार ॥
सन्त सों दुचिताइ किये, कहैं कबीर पुकार ॥
सोरठा-मन महँ रहेउ लजाय, सर्वानन्द अनीति लखि ॥
मम पदशीश नवाय, कहैं धन्य तुम्ह धन्य हो ॥

चौपाई

जब प्रसाद के कीन्ह अरम्भा । तब जमि बालकको देतहै थम्भा ॥
हमहिं कहसि गवनहँ प्रभुगेहा । करब प्रसाद पोषन निज देहा ॥
तासु हृदय बुधिलखिहमपाये । ताते वेगि भवन चलि आये ॥
तब उन अशुच कर्मयक कीन्हा । धर्मदास तुम सुनो प्रवीना ॥
अजा एक पुनि गुप्त मँगायो । गुप्तहि ताकर गला कटायो ॥
निज सेवकन सोकहि समुझावे । अजगा सुधि कबीर नहिं पावे ॥
गुप्त रसोई मासु रँधायेसि ।बहुविधि अन्तरपाट दिआयेसि ॥
तब चौका पर बैठे जबहीं । हाड़ एक कर लीन्हेसि तबहीं ॥
तेहि क्षण हमहूँ पहुँचे जायी । मोहिं देखत रहु शीश नवायी ॥

कबीर वचन

तब हम कह्यो सुनो द्विजराई । हमते अन्तर पाट दिवाई ॥
गुप्त अकर्म करै नर कोइ । प्रभु ते नाहिं छिपै पुनि सोई ॥
जगकर्ता तुम सङ्गहि देखै । नाहि न लखै नर वह सब पेखै ॥
पाप पुण्य नहिं छिपै छिपाये । केतिक जो नर राखु दुराये ॥
नरनारी जिमिलहसुन खायी ।गुपत खाहिं वह पुनि प्रकटायी ॥
तुम्ह अस श्रुतिधारी सज्ञानी । सो नहिं जलहु पाठ पहिचानी ॥
हाथ हाड मुख धारि हि हाडा । स्वान स्वाँग बन्यो अतिगाढा ॥

धन्य धन्य तुम्ह पण्डित राजू। तुम ब्राह्मण हो का कर काजू॥
करि अस्नानतिलक शुठि नीको। कांधजनेउ चाल वितुफीको॥
उत्तम जाति चालु किमि नीचा। छये चमार तब घालहु सींचा॥
तोहिं औ स्वानसो कस भीना। विप्र चमार चालु तुम्ह हीना॥
पछिली रीति नहि समुझहु भेवा। सनकादिक नारद शुकदेवा॥
किनअसकर्म कीन्ह कछु मोही। द्विजकी चाल न देखौं तोही॥
हो पण्डित तोहि दया न आई। कैसे परगल काटे भाई॥
कर्म कसाई विप्र कहावहु। मानुषदेह तुम वादिगँवावहु॥
सर्वमयी भाषहु भगवाना। केहि गरकाटेहु कहहु सयाना॥
जीव दया जेहि हृदये नाई। कहै कबीर सो आहिं कसाई॥
गीता भागवत देखु विचारी। जीव दया भाषै बनवारी॥
जिह्वा स्वाद काज जिव खोवे। जानि बूझि का जनम विगोवे॥
एक तो भूले गूढ अयाने। तुम्हका दृष्टि देखि बौराने॥
भूले मूढ जगत्के ज्ञानी। तुमको सृष्टि देखि बौरानी॥
लाग्यो शब्द सारहियमाहीं। चितगहिपरचे आउ हियमाहीं॥
तेजि हाँड़ पदगहि अकुलायी।
मोहि अचेत कहँ लियेउ जगायी॥

सर्वानन्द वचन

मैं भूलेउँ विद्या अभिमाना। अब हिय बेध्यो शब्द सहिदाना॥
मुख मंजन करि उठे तुरन्ता। पद गहि कहै तबकला अनन्ता॥
अब मोहि शरण लेहु तुम स्वामी। कृपा करहु प्रभु अन्तर्यामी॥
पुस्तक बहुत आनिधरि आगे। दीन वचनकहि अति अनुरागे॥
रामानन्द पहँ तेहि लै गयऊ। गुरुकी दीक्षा ताहि दिवयऊ॥
भक्ति भेष तिन्ह लीन्हेसि भाई। गुरु ढिगकहहि साधु सेवकाई॥
गुरुते बिदा मांगि दिन एका। जननी पहुँ कहि चले विवेका॥

धन्य धन्य जननी सुखदायी । जिन्ह यह मोहि उपदेश बतायी॥
जाय भवन निज पहुंचे जबही । धाय जननि पग लागे तबही ॥
छन्द–तुम धन्य माता मोहि उधारेउ कहेउ सार उपदेश हो ॥
जाय दास कबीर कहि उन्ह हरेउ कालकलेश हो ॥
मैं थकेउँ उनते वाद करि वे ब्रह्म अविचल नाथ हो ॥
कछु कहत बनै ना कला उनकी भयउ बहुत सनाथ हो ॥
साखी-सुनु जननी यह चित दै, हम उनकर शिक्षा लीन्ह ॥
मोहि प्रतीति उनसे वैसी, इन्ह गुरू के दिक्षा दीन्ह ॥
सोरठा-भै जन्म शुभ मोर, पहुंचेउ मोक्ष रु मुक्ति घर ॥
जननी गुण बड़ तोर, कबहुँ न हृदय तेविसारिहौं ॥

इति सर्वानन्दकी गोष्ठी

सतगुरु वचन–चौपाई

हे धर्मदास तोहि कहि समुझावा । सर्वानन्द सो जो बनि आवा॥

धर्मदास वचन

धन्यधन्यसाहिबअविगतनाथा। प्रभुमोहिनिशिदिनराखोसाथा॥
सुतपरिजन मोहि कछु न सोहाई। धनदारा तिहुं लोक बड़ाई ॥

सतगुरु वचन

सुनु धर्मनि तुम्ह हमरे साथा । मिलीसुरति तब दुइ नहिं बाता॥
निरखोसुरति नाम लौ लाओ । तनछूटे सत्यलोक सिधाओ ॥
जीवन शब्द चेतावहु भाई । चेतहिं जीव पुरुष लौ लाई ॥
अङ्ग मोर तुम लेहु सँभारी । जम्बूद्वीप तुम करहु कडिहारी॥
लै जीवन सतभक्ति दृढाओ ।तब तुम्ह सत्य पुरुष कहँ भाओ॥
सवालाख लै आरति करई । बोधहु जाहि लोक संचरई ॥

धर्मदास वचन

हे साहब मैं बूझों तोही । दयाकरी प्रभुकहिये सब मोही॥
सवालाख नहिं होय जेहि पाहीं। ताहि कहहु बोधबकी नाहीं ॥

सतगुरु वचन

धर्मदास जनि ताहि प्रबोधो । सवा लाख अरपै तेहि बोधो ॥

धर्मदास वचन

हो साहेब तब बनिहैं नाहीं । सवा लाख विनु जीव यम खाहीं ॥

सतगुरु वचन

सुनु धर्मनि जौ आधौ होई । करि आरति देउ पान सजोई ॥

धर्मदास वचन

हो साहेब भाषहु कछु थोरा । होय निस्तार जीवन बन्दीछोरा ॥

सतगुरु वचन

धर्मदास जो विन्ती करहू । सवा लाख चौथाई धरहू ॥

धर्मदास वचन

हो समरथ यह दाया कीजे । बोझ थोर जीवनपर दीजे ॥
द्रव्यहीन जिव केहि विधि तरिहैं। यम राजा तेहि भक्षण करिहैं ॥

सतगुरु वचन

धर्मनि चौथाइहु चौथाई । यहि प्रमाण लै आरति लाई ॥

धर्मदास वचन

अहो साहेब कलिजीव अयाना । भाषहु शब्द थोर परवाना ॥
भाषहु थोर तुव पद लौलीना । कलियुग जीव द्रव्यके हीना ॥

सतगुरु वचन

हो धर्मदास मानहु शिर नाई । अब जो कहा सो राखु दृढाई ॥
हम निःइच्छा चाव कछु नाहीं । है मर्याद गुरुसेवा चाहीं ॥
गुरू साधु सेवा नहिं करिहैं । कहोसो जीव कौने विधि तरिहैं ॥
चौथाई कर जो चौथाई । तासु चौथाई मान लेहु भाई ॥

धर्मदास वचन

हो प्रभु मैं चित बहुत सकाऊं । कत साहिब सो उत्तर लाऊं ॥
जाहि न होय शक्ति गुरु एता । सो जिव ऐसहि जाय अचेता ॥
औरौ थोर कहौ प्रभु राई । जेहि ते जीव न यम धरि जाई ॥

सतगुरु वचन

धर्मदास बहु कीन्ह निहोरा। कह्यो सो वचन मान लियो तोरा॥
यह जो कहेऊँ चौथाई तेहि होई। तासु चौथाई करि आरति सोई॥

धर्मदास वचन

हो प्रभु कलिके जीव दरिद्रा। जाहि न होइहैं एतिक मुद्रा॥
सो कैसे तोहिं पैहै स्वामी। कहहु थोर प्रभु अन्तर्यामी॥

सतगुरु वचन

धर्मदास बहु कियेहु महताई। सवा पाँच मुद्रा लेहु भाई॥

धर्मदास वचन

हो प्रभु विनती करों बहोरी। जाहि न एतिक किमि बंदी छोरी॥

सतगु वचन

सुनु धर्मनि दोय नारियर आनै। सवा पाँच आधो लै ठानै॥

धर्मदास वचन

सवा पांच आधो जेहि नाहीं। हो प्रभु सो जिव कैसत राहीं॥

सतगुरु वचन

धर्मनि जेहि इतनो नहिं होई। तासु प्रमोधेहु कहौ बिलोई॥
सवा सेर मिष्टान्न मँगाओ। पान सवा सै उत्तम लाओ॥
सवा हाथ बस्तर पुनि श्वेता। अग्र पुहुप पूँगी फल चेता॥
गोघृत शुचि दीपक बारी। बैठि सिंहासन नाम सुधारी॥
अन्तरध्यान सुरति संचरिये। सत्यसुकृत कहँ मालुम करिये॥
यम तृण तोरहु वीरा दीजै। शक्ति होय तब आरति कीजै॥
प्रति सम्बत गुरु आरति चाही। आरति करै शक्ति होय जाही॥
शक्ति अछतनहि आरति करई। भक्तिहीन बहु संकट परई॥
माया ठगनी आहि रे भाई। यह काहूके संग न जाई॥
जिन गुरु साधु सेवा चित लावा। सो माया कहँ जीति सिधावा॥
जिन माया कहँ जोगयो भाई। नहिं परमारथ स्वारथ लाई॥
सो जीव अन्त बहुत दुख पावै। भक्तिहीन यम नाच नचावै॥

धर्मदास वचन

होप्रभु तुम्ह सतपुरुष कृपाला । अन्तर्यामी दीन दयाला ॥
मोहि निश्चय तुवपद विश्वासा । यह माया स्वप्नेकी आशा ॥
जिन्ह जिन्ह माया नेह बढाया । तिन्ह२ निज२ जन्म गँवाया ॥
सवालाख तुम मोहि बतायो । सवा करोड प्रभु आरति लायो ॥
औ जन सम्पति मोर घरआही । अरपौं सभै संतन जो चाही ॥
तुम प्रभु निःइच्छा नहिं चाहो । धन्य समरथ मर्याद दिढाहो ॥
सो जिव पाँवर नरकै जायी । शक्ति अक्षत जो राखु छिपायी ॥
हो प्रभु कछु विनती अनुसारूं । बक्सहु ढिठाई तो वचन उचारूं ॥
सवाशेर भाषहु मिष्टाना । औरौ वस्तु सवासो पाना ॥
हो प्रभु कोई जिव भिक्षुक होई । भीख माँगि तन पालै सोई ॥
सो जिव शब्द तोहार न जानै । कहहु केहि विधि लोक पयानै ॥

सतगुरु वचन

हो धर्मनि जौ अस जिव होई । गुरु निज ओर करै पुनि सोई ॥
इतने विनु जिव रोकि न राखा । छोरी बन्ध नाम तिहि भाखा ॥

धर्मदास वचन

धन्य धन्य तुम दीन दयाला । दया सिन्धु दुखहरण कृपाला ॥
छन्द-तुम धन्य सद्गुरु जीव रक्षक कालमर्दन नाम हौ ॥
शुभ पन्थ भक्ति दिढायऊ प्रभु अमर सुखके धाम हौ ॥
मैं सुदिन आपन तबहिं जान्यो प्रथमपद जब देखेऊं ॥
अब भयेऊँ सुखी निशङ्क यमते सुफल जीवन लेखेऊं ॥
दोहा-विनती एक करौं प्रभु, कृपा करहु जगदीश ॥
दो सेवक जो तुम मिले, सो तो कहुँ नहिं दीश ॥

सतगुरु वचन

सोरठा-धर्मदास लेहु जानि, हम वो एकै थान है ॥
कहौ शब्द परमान, वो हम में उन माँहि हम ॥

धर्मदास वचन–चौपाई

हो प्रभु उन मोहिं बड़ सुख दीन्हा। तुम भये गुप्त राखि उन्ह लीन्हा॥
विरह सिन्धु बूड़त उन्ह राखा। उन्ह दरशनकी है अभिलाखा॥

सतगुरु वचन

हो धर्मनि हममाँहि उन्ह देखो। उन्हमोहिंद्वितिय भावजनिलेखो॥
स्वामी सेवक एकै प्रना। परिचै सुरति नाहिं विलगाना॥
हो धर्मनि तुमहूँ हम माहीं। मोहिं तोहिं अब अन्तर नाहीं॥
जो सेवक गुरु सुरति खमीरा। जीवनमुक्ति सो आहि कबीरा॥
जेहि सेवक गुरुहीं परशंसा। कहै कबीर सो निर्मल हंसा॥
सेवक कहँ अस चाहिये भाई। गुरुहिं रिझावे आपु गँवाई॥
जिमि नटकला मगन होय खेला। तिमि गुरुभक्ति मगन होय चेला॥
निजतनमन सुख स्वादगँवावै। मन वच कर्म गुरु सेवा लावै॥
निशिवासर सेवा चित देई। गुरुहिं रिझाय परम पद लेई॥
जगपहँ सेवावश भगवाना। धर्मदास यह वचन प्रमाना॥
सेवक सुरति प्रीति वश भाई। शून्य महा वस्ती होय जाई॥
तैसी प्रीति सुरति शुचि सेवा। किमि प्रसन्न नहिं होंहिं गुरुदेवा॥
धर्मनि सो सेवक मोहिं भावे। जो गुरुसाधु सेवा चित लावे॥
सेवा करि नहिं धरे हंकारा। रहै अधीन दास सोइ प्यारा॥
हो धर्मनि तुम्ह अससिख अहहू। हम तुम्ह एकसाँच हियगहहू॥

धर्मदास वचन

धर्मदास पद गहे अनुरागा। होप्रभु तुम्ह सोहि कीन्ह सुभागा॥
मैं पामर गुणहीन कुचाली। तुम्ह दीन्हेउ मोहि पन्थमराली॥
हे प्रभु नहि रसना प्रभुताई। अमित रसनगुणवरणि नहिजाई॥
महिमा अमित अहै हो स्वामी। केहि विधि वर्णौं अन्तर्यामी॥
जेहि सेवक पर होय तव दाया। ताके हृदय बुद्धि अस आया॥
पूरण भाग करै सेवकाई। धन्य सेवक जिन्ह गुरुहिं रिझाई॥
मैं सब विधि अयोग्य अविचारी। मोहि अधमहिं तुम लीन्ह उबारी॥

अब यह दया करो सुखदाई । दोउ सेवक के दरशन पाई ॥
बड़ इच्छा उन्ह दरशन केरा । हो प्रभु हम आहीं तुव चेरा ॥

सतगुरु वचन

सुनु धर्म निदरशन तिन्ह पैहौ । लीला देखि थकित होइ जैहौ ॥
आप तीनरूप प्रकट दिखावा । एक तीन होय एक समावा ॥
धरमदास अचरज ह्वै रहेऊ । समिता होय युगल पद गहेऊ ॥
लीला देखि चकित भये दासा । पुनि विनती एक कीन्ह प्रगासा ॥

धर्मदास वचन

हे प्रभु अविगति कला तुम्हारी । हम हैं कीट जीव व्यभिचारी ॥
सत्यलोक तुम्ह वरणि सुनावा । सोभा पुरुष हंसन सतभावा ॥
कैसन देश राज वह आही । चित इच्छा प्रभु देखन ताही ॥

सतगुरु वचन

धर्मदास यह निरघिन काया । यहि तन पुरुष दरश किमि पाया ॥
तन ठीका जब पुरि है आई । सत्यलोक तब देखहु जाई ॥

धर्मदास वचन

धर्मदास गहि चरण निहोरा । हे प्रभु तृषा मिटावहु मोरा ॥
चरण टेकि प्रभु विनवौं तोहीं । पुरुष दरश विनु कल नहिं मोहीं ॥

कबीर साहिबका फिर अन्तर्धान हो जाना और धर्मदास
साहबका विकल होना

गुप्त भये प्रभु अविगति ताता । धर्मदास मुख आवै न बाता ॥

धर्मदासविलाप

मैं मतिहीनकुमति मुहिंलागा । मोहिंसमको जग आहि अभागा ॥
मैं मूरख प्रतीति न कीन्हा । अस साहेब कहँ मैं नहिं चीन्हा ॥
अब कौने विधि दरशन पाऊँ । दरशन विनु मैं प्राण गवाऊँ ॥
चरणोदक बिनु करौं न ग्रासा । तजौं शरीर कहैं धर्मदासा ॥
दिवस सात लगि अन्न न खावा । भजन अखण्ड नाम लौलावा ॥

कबीर साहिबका पांचवीं बार फिर धर्मदासजीको दर्शन देना

सतयें दिन प्रभु प्रकट दिखाये । धर्मदास पद गहि अकुलाये ॥
घरहिं न श्वासहि निपट अधीरा । परे चरण महँ क्षीण शरीरा ॥
कर गहि साहब तबहिं उठावा । शीश हाथ दै अंक मिलावा ॥
धर्मदास चरणोदक लीन्हा । चरण पखारि आचमन कीन्हा ॥

सतगुरु वचन

हो धर्मदास प्रसाद कछु पाओ । करि प्रसाद तव मोपहँ आओ ॥
छन्द–चित सकुचि धर्मनि विछुरन गुनि सर्वत्र सब हौरा किये ॥
कछु जाइ अलप प्रसाद ततक्षण तृण जल अंचवन लिये ॥
पुनि वेगि समरथ निकट आये सकुचि चित ठाढे भये ॥
अनुशासनो कहु धर्मनि कहा चित चिन्ता भये ॥

धर्मदास वचन

दोहा–धर्मदास कह नाइ शिर, सुनु प्रभु अगम अपार ॥
सात दिवस कहवाँ रहे, कौन दिशा पगु ढार ॥

सतगुरु वचन

सोरठा–धर्मनि सुनु चित लाय, जौन दिशा हम गौन किये ।
कालिंजर पहुँचे जाय, तहाँ पुनि शब्द प्रकाशेउँ ॥

धर्मदास वचन–चौपाई

हो साहेब कै जीव परमोधा । कौन शब्द सो आन समोधा ॥
आरति चौका नरियर मोरचो । कै जीवन यमते तृणतोरचो ॥

सतगुरु वचन

धर्मनि सुनहु ताहि सहिदाना । तहाँके जीवहिं नहिं दीन्ह प्रवाना ॥
आरति चौका तहाँ न कीना । नहीं तहाँ नरियर मोरु प्रवीना ॥
वचन बंध जीवनकहँ कियेऊँ । साखी शब्द रमैनी दियेऊँ ॥
कहि आयेऊँ तहँ वचन ठिकाना । धर्मदास सो न लियेहु प्रवाना ॥

जम्बूद्वीप कलिके कडिहारा । धर्मनि बाहु जीव होयँ पारा ॥
धर्मनि बाँह जिय पहुँचे आयी । देहु दान जेहि आरति लायी ॥
शब्द मानि पुनि मस्तक नाया । पुरुष दरशकै बात जनाया ॥

धर्मदास वचन

हो प्रभु चिन्तागण करु मोरा । पुरुष दरश देउ करों निहोरा ॥

सतगुरु वचन

धर्मदास यह हठ का करहू । मानहुँ शब्द शीश पर धरहू ॥
हमरे गहे पुरुष पहँ जैहा । विना गहे उहां जान न पैहा ॥
हमसों पुरुष सो ऐसी अहई । जल तरंगजल अन्तर रहई ॥
जिमिरवि औ रवि तेजप्रकाशा ।तिमिमाँहिपुरुषअन्तरधर्मदासा॥
हमरी सुरति गहो चितलायी । तबहीं पुरुष पद दर्शन पायी ॥
शिष्य हृदय प्रतीति अस आनै। गुरु औ पुरुष भिन्न नहिं जानै॥
जौ लौं चित्त अस रीति न आवै। तौ लौं जिवनहिं लोकसिधावै॥
धर्मदास चित बहुत सकाने । चरण टेकि बहु विनती ठाने ॥

धर्मदास वचन

हो प्रभु सत्य कहौं तोहि पाहीं । तुम्हते कछु दुचिताई नाहीं ॥
मोरे तुमहिं पुरुष हो स्वामी । यमते छोड़ावहु अन्तर्यामी ॥
हो प्रभु बरणेउँ लोककी शोभा । ताते आहि मारममलोभा ॥
तव लीला बहुतै हम देखा । पुरुष दरशविनु रहै हिय रेखा ॥
जौ किंकर पर होहु दयाला । तौ छिन महँ हायगत उरसाला॥

सतगुरु वचन

धर्मनि जौ ऐसो चित कीन्हा । तनुतजि चलौ लोकप्रवीना ॥
राखेउ तन गौने लै हंसा । तहँ पहुँचे जहँ कालै संसा ॥
लवन एक महँ पहुँचे जाई । अविगति लीला लखै को भाई॥
शोभालोक देखि सुख माना । उदित असंख्य शशिऔ भाना॥

जितदेखिये जगमगझलकाहीं । देखत छकित भये हियमाहीं ॥
द्वारपाल हंस जो रहिया । ता महँ एक हंसहिं असकहिया ॥
एहि संसहिं तुम्हजाहु लिवाई । पुरुष दरश दे आनहुँ भाई ॥
चले लिवाय पुरुष पहँ जबहीं । झझकि हंस बहु आये तबहीं ॥
करत कोलाहल मंगल चारा । शोभा अद्भुत अंग अपारा ॥
हंसन शोभा कहाँ बताऊँ । कछुक प्रभाव सो वरणि सुनाऊँ ॥
रतनमाल ग्रिव शोभित हंसा । और मणिमाल किमि करौं प्रशंसा ॥
जगमग देह हंसन करहीं । अमर चीर बहु शोभा धरहीं ॥
उडुराख चिकुर शोभा छबि आछे । रविका करतार रोम छबि काछे ॥
हंसन्ह भाल शोभा किमि कहऊँ । षोडस चन्द्र भाल छबि लहऊँ ॥
हंस कान्ति प्रतिरोम प्रकाशा । हीरामणी उदित रोमासा ॥
कोटिक विधु हंसन छबि मोहा । देह प्राण शोभा अमी गिरोहा ॥
षोडश रवि हँसन छबि मोहा । देह प्राण शुभ अमृत सोहा ॥
कञ्चन कलश जडित मणि लोना । रतन थार आरति महि सोना ॥
हंस मगन शब्द मुख उचारा । क्रीडा विनोद रतन मणियारा ॥
सुरति हंस कहँ आगे लीन्हा । नृत करत चले हंस प्रवीणा ॥
सुरति हंस अघानि अघाने । पुरुष सकल देखत हरषाने ॥
सिंघासन छबि देखत मनमोहा । अद्भुत अमित कलातन सोहा ॥
पुरुष राम एक कला अनन्ता । वरणत कोउ न पावै अन्ता ॥
एक रोम रवि शशि कोटीशा । नखकोटिन्ह विधु मलिन रवीशा ॥
पुरुष प्रकाश सतलोक अँजोरा । तहां न पहुँच निरञ्जन चोरा ॥
पुरुष कबीर देखा एक भाई । धर्मदास पुनि रहे लजाई ॥
पुरुष दरश करि आयेउ तहँवा । प्रथम कबीर बैठे रहे जहँवा ॥
इहां कबीर बैठे पुनि देखा । कला पुरुष तन अचरज पेखा ॥
का अजगुत कीन्हेउँ भाई । उहां मोहिं प्रतीति न आई ॥

कबीर पुरुष यक उहाँ छिपाये । सत्य पुरुष जग दास कहाये ॥
धाये चरण गहु अति सकुचायी। हे प्रभु हम परिचै अब पायी॥
यह शोभा कस उहाँ छिपावा ।कस नहिंजगमहँप्रगट दिखावा॥

सतगुरु वचन

धर्मनि जोवहि छबि जग जाऊ। तो होंय विकल निरञ्जन राऊ॥
सब जीव तब मोहि लौलावै । उजरै भौ सब लोकहि आवै ॥
ताते गुप्त राखो जग भाऊ । शब्द सँदेश जीवन समुझाऊ॥
शब्दपरखि चीन्हैं माहिं कोई । गहि प्रतीति घर पहुंचे सोई ॥
कहै कबीर सुनहु सुकृति हंसा । दरश पुरुष मिटेहु चित मंसा॥
अब तुम्ह वेगि चला संसारा । जिवहि चेतावहु करहु पुकारा॥

धर्मदास वचन

हो साहेब अब उहाँ न जाही । यह सुख घर तजि कहां झुराही॥
वहि यम देश अपरबल काला । नहिं जानौंधौंमति होयवेहाला॥

सतगुरु वचन

धर्मदास तोहि चिन्ता नाहीं । तुमरे सङ्ग हम सदा रहाहीं ॥
तुम देखो सत्य लोक प्रभाऊ । हंसन कहो संदेश सुनाऊ ॥

धर्मदास वचन

मानेउँ शब्द शीश पर राखा । लैचलु अंश सुकृत तब भाषा ॥
छिन एक महँ जगहीं चलि आये। पैठि देह धर्मनि अकुलाये ॥
परेउ चरण गहि साहब केरा । करि बिनती पदगहि मुख हेरा॥

छन्द-धन्य साहेब सतगुरू तुम सत्य पुरुष अनादि हो ॥
तुवअमितलीला कोलखै प्रभु सकल लोकके तुम आदिहो॥
त्रिदेव मुनि सनकादि नारद कोईना लखि तुम पावई ॥
तेहि हंस भाग सराहिये जो नाम तुव लौ लावई ॥

दोहा-निर्गुण सर्गुण आदिहौं, अविगति अगम अथाह ॥
गुप्त भये जग महँ फिरो, को तुव पावे थाह ॥

सोरठा-मोहि परचै तुम दीन्ह, ताते चीन्हेउँ तोहि प्रभु ॥
भये चरण लौलीन, दुचिताई सकलो गयी ॥

चौपाई

कीट ते भृंङ्ग मोहि प्रभुकीन्हा । निश्चलरंग आपनो दीन्हा ॥
जिमिनिलते जग होय फुलेला । तिमिमोहिं भयोसमर्थपदमेला॥
पारस परसि लोहा जिमिहेमा । तिमि मोहिं भयउनाथव्रतनेमा॥
अगर परसि जिमिभयोसुवासा । जल प्रसंग बसन मल नासा ॥
सनपट शुद्ध सूत कहै न कोई । प्रभुगुण लखित शिरनावे लोई ॥
हे प्रभु तिमिमाहिं भयउ अनंदा। जिमिचकोरहरहितलखिचंदा ॥
जनम मरण भौ संशय नाशी । तवपद सुखनिधान सुखराशी ॥
हे प्रभु अस शिख दीजे मोहीं । एको पल न विसारौं तोहीं ॥

सतगुरु वचन

जस मनसा तस आगे आवै । कहै कबीर ईजा नहिं पावै ॥
धर्मनि गुरुहिं दोष देइ प्रानी । आपु करहिंनर आपनहानी ॥
जो गुरु वचन कहै चित लाई । व्यापै नाहिं ताहि दुचिताई ॥
जो गुरुचरन शिष्य संयोगा । उपजे ज्ञान न नासै भ्रम रोगा ॥
जिमि सौदागर साहु मिलाहीं । पूँजि जोग बहु लाभ बढ़ाहीं ॥
सतगुरु साहु सन्त सौदागर । सजीशब्द गुरुयोगा बहुनागर॥
जो गुरु शब्द कहै विश्वासा । गुरु पूरा पुरवहिं आसा ॥
विनु विश्वास पावे दुखचेला । गहै न निश्चय हृदय गुरुमेला॥
सुत नारी तन मन धन जाई । तन जोरहै न प्रीति दृढाई ॥
शूरा हंस सोई कहलावै । अग्नि रहै तो शोक न लावै ॥
जो विचलै तौ यम धरि खायी । अड़ा रहै तो निज घर जायी ॥

काल कसौटी ठहरे हंसा । कहैं कबीर सोइ सुकृत अंसा ॥
सत्य असत्य जानि किमि जायी। कादर विचलै सूर रहायी ॥
धर्मदास तोहि बहुत बुझावा । रहनि गहनि सतपन्थ बतावा ॥
बहुते बेर सिखायो तोही । देखो अयश न पावे मोही ॥
बहुरि कोटि शिखापन तोहीं । देखहुँ कोइ हंसै ना मोहीं ॥

रहनी वर्णन

अभ्यागत जो आवे द्वारा । सन्त असन्त सोहि विचारा ॥
दीजे भिक्षा हरष सो ताहीं । एहि सम योग पुण्य तप नाहीं ॥

धर्मदास वचन

हे साहेब विनती एक करऊं । समरथ जानि पट उतर धरऊं ॥
हे प्रभु रंक होय कोइ दासा । जाय अभ्यागत ताहि अवासा॥
ताके घर कछु सुकृत न होई । सो कस करै कहो प्रभु सोई ॥
सो कस करै कहो प्रभुराई । केहि प्रकार तेहि सेवा लाई ॥

सतगुरु वचन

सुनु धर्मनि पथ नीती भाखे । शक्ति अछत पुनि गोय न राखे ॥
तन बस्तर लै गोय न भाई । जब अशक्त तब काह कराई ॥
आप खाय तब ताहि खिआवै । नहि तो यक सम समय गँवावै ॥
तीरथ व्रत जप तप बहु करमा । काहे परै याहि निज धरमा ॥
कोटि तीर्थ भ्रमर फल पावै । सो फल भरहीं साधु जिवांवै ॥
मानो गुरु साधुनका बानी । कह कबीर शब्द सहिदानी ॥
कहै कबीर सत्यगुरू औ साधू । सत्यनाम गहि मिटै उपाधू ॥
सत्यकवीर सत्यगुरु औ साधू । सत्यनाम कहँ सत्य अवराधू ॥
सत्य नाम गहि तजे दुचिताई । कहैं कबीर हम ताहि सहाई ॥
सत्यनाम कहँ चीन्हैं सोई । कहैं कबीर गुरु गम जेहि होई ॥
को हम को तुम को है अनन्ता । कहैं कबीर यह बूझैं सन्ता ॥

सोइ हम सोइ तुम सोइ अनन्ता। कहैं कबीर गुरु पारस सन्ता ॥
सन्त चेतु चित सतगुरु ध्याना। कहैं कबीर सद्गुरु परमाना ॥
सतगुरु शब्द ज्ञान गुरु पुंजा। कहैं कबीर लखु मोहनकुंजा ॥
कुंज मोहि मोहन ठहरावै। कहैं कबीर सोइ सन्त कहावै ॥
सन्त कहाय जो सोधै आपू। कहैं कबीर तेहि पुण्य न पापू ॥
पुण्य पाप नहिं मान गुमाना। कहैं कबीर सो लोक समाना ॥
जिन्दा मुरदा चीन्हैं जीवा। कहैं कबीर सतगुरु निज पीवा ॥
मुरदा जग जिन्दा सतनामा। कहैं कबीर सतगुरु निज धामा ॥
यक जग जीतै यक जग हारै। कहैं कबीर गुरु काज सवाँरै ॥

धर्मदास वचन

कौन जग जीतै कौन जग हारै। कहौ कौन विधि काज सवाँरै ॥

सतगुरु वचन

इन्द्रिन जीते साधुन सो हारै। कहैं कबीर सतगुरु निस्तारै ॥
सतगुरु सो सत्यनाम लखावै। सतपुर ले हंसन पहुँचावै ॥
सत्यनाम सतगुरु तत भाखा। शब्द ग्रन्थ कथि गुप्तहिं राखा ॥
सत्य शब्द गुरु गम पहिचाना। विनु जिभ्या करु अमृत पाना ॥
सत्य सुरति अम्मर सुख चीरा। अमी अंकका साजहु वीरा ॥
सोहं ओहं जावन वीरू। धर्मदास सो कहै कबीरू ॥
धरिहौ गोय कहिहौ जिन काहीं। नाद सुशील लखैहो ताहीं ॥
प्रथमहि नाद विन्द तब कीन्हा। मुक्ति पन्थ सो नाद गहि चीन्हा ॥
नाद सो शब्द पुरुष मुख वानी। गुरुमुख शब्द सो नाद बखानी ॥
पुरुष नाद सुत षोडश अहई। नाद पुत्र शिष्य शब्द जो लहई ॥
शब्द प्रतीति गहै जो हंसा। शब्द चालु जेहिसे मम बंशा ॥
शब्द चाल नाद दृढ़ गहई। यम शिर पग्र देइ सो निस्तरई ॥
सुमिरण दया सेवा चित धरई। सत्यनाम गहि हंसा तरई ॥

बिन्दो होय शब्द मम धावैं । नाद बिन्दु दोउ मोहिं पहँ आवे॥
नाद सखा जेहि अहंविशुरचे । अहं रहित सो निज घर पहुँचे॥
केते पढि गुणि नर्कहिं जेहैं । केते पढ़ि गणि लोक सिधैहैं ॥

धर्मदास वचन

हो सद्गुरु मैं तुम्हारो दासा । विनती करौं खसम तुव पासा॥
पढ़े गुणे दुइदिशि किमिजाहीं । सो चरित्र वरणों मोहिं पाहीं ॥

सतगुरु वचन

सुनु धर्मनि बहु पढ़ि अरथावे । शब्द कहै सो चालु न पावे ॥
पढ़ि गुणि नीति विचारे नाही । अस पढुआ सुनु नरकहिं जाही॥
जिन्ह पढिशब्दचाल गहिभाई । सुनु धर्मनि सो लोकहि जाई ॥
छन्द–जो कथत बकतौ तरै जग तो जग सबै तरि जायहो ॥
तजि तख्त सुलतान उबरे नृप क्यों बनजाय हो ॥
तातें कहूँ निज समुझ पापी शब्द पढि सतपद गहै ॥
जो सत्य पद निरखत चले तो नहिं फेरि जो नीवहै ॥
दोहा–सत्यनाम सुमिरण करे, सतगुरुपद निज ध्यान ॥
आतम पूजा जीव दया, लहै सो मुक्ति अमान ॥
सोरठा–सद्गुरु कहै पुकारी, चाल चले पथ निरखिके ॥
हंस होय भव पारि, शब्द गहन सद्गुरु कृपा ॥

चौपाई

गुप्त भयो कहि शब्द प्रमाना । कालिंजर पुनि आय तुलाना॥
कहैं कालिंजर विनै बडाई । देहु पान मोहिं अहो गुसाई ॥
धर्मदास कहै देउँ परवाना । साहिब मोहि कह्यो सहिदाना ॥
कह कालिंजर सुनहुँ गोसाईं । का सहिदान आहि तुव ठाईं ॥
तब सहिदान कहा सुख बासा । सतगुरु बोल कीन्ह परगासा ॥
समय संयोग बोल सो कहेऊ । सुनि भौमौन मुगुध होई रहेऊ॥
जात कमीना सुनत परायी । केहि कारण आरती लायी ॥

औरहिं और बुझा उन्ह भाई । पान नलीन्ह वैसहिं चलिजाई ॥
तेहि गौनत प्रभु प्रगटे तुरन्ता । कला अमित को पावै अन्ता॥
धर्मदास गहि चरणशिर नायी । युगकर जोरि ठाढ़ भो जायी ॥
बैठे पुनि आज्ञा प्रभु पाई । विमुख जीव कर बात जनाई ॥

धर्मदास वचन

प्रभु विरतन्त कहो अब ताहीं । वह पान मुक्तिके लीन्हेसि नाहीं॥
मैं भाषेऊँ तुमरी सहि दाना । दुर्मति बूझेसि कछु आना ॥

सतगुरु वचन

धर्मनि उन्ह जोन पान न लीन्हे । परिहैं कालमुख जायकमीने ॥
तजि रणभूमि टरै जो भाई । तेहि जीवहिं निश्चै यम खई ॥
वह यम चोर कालके हंसा । धर्मराय धरि करै विध्वंसा ॥
धर्मदास तुम सुनहु हमारा । निशिदिन रहिहो नाम अधारा ॥
अब तुम आपन करहु विचारा ।करिहहु निशि दिन ज्ञान विचारा॥
दुष्ट मित्र सों प्रेम बढै हो । भक्ति भजन आनन्द रहै हौ ॥

अर्थ–दुष्ट और मित्र दोनोंमें किसीसे राग द्वेष न रखकर समान प्रीति रखना सबकी भलाई चाहना किसीकी बुराई नहीं चाहना ॥

जो सुख होय तो जनि इतरैहौ । दुख परै तौ जनि विललैहौ ॥
संकट महँ बहु साहब कीजे । निश्चल नाम ध्यान चित दीजै॥
चित निश्चन्त रहै जो भाई । तो तेहि संकट जाय नसाई ॥
यह मम देश दोउ है भाई । दुख सुख तन धरि चाखै आई॥
चहिये साधु न नहिं चित्त डोलावैं । दृढ प्रतीतिनाम गुरु गावैं ॥
कच्चे जीवन कर यह लेखा । संकट परै विकल हिय पेखा ॥
सुख सम्पति धन पुत्र सगाई । यह सब सपना आहै भाई ॥
धर्मनि शूरा हंस जो होई । गनै न दुख सुख एकौ सोई ॥
अरु घर झगरा निवेरेहु भाई । गुरु गमहि पन्थ कहौं उपाई ॥

पाँचौ के परपञ्च मिटावै। पांच भूतकै स्वाद गँवावै॥
नासा श्रवण रसना चक्षु इन्द्री। पांचौं चोर काल मतिमन्द्री॥
पाँचहु स्वाद विषयकी पूजा। गुरुगमिपन्थ परखहिं तेहि दूजा॥
चक्षु स्वाद रस रूप सलोना। राँचि रहैं जग अकिलविलोना॥
साधु चक्षु राते सतरूपा। गुरुपदनिरखत अकिलि अनूपा॥
श्रवण स्वाद रस गीत कवीता। मगन होई सुनु रसमत चीता॥
सन्तन श्रवण स्वाद गुरु बानी। शब्द भजन पद सार समानी॥
नासा वास सुवास अघाहीं। कुबास वासके निकटन जाहीं॥
सन्त न लागे वास कुवासा। नाम बिदेह जपै निःस्वासा॥
रसना स्वाद षटरस मधुभोजन। तजे विलोना सुरस परोजन॥
सन्त न स्वाद नाम रससारा। षटरस व्यंजन छार असारा॥
निःइच्छित जो पहुँचे आई। सुरस व्यंजन प्रीति सोपाई॥
इन्द्री स्वादु काम रति नेहा। नारी भोग रतन तजि देहा॥
सत्य सुरति अनुराग समावे। निशिदिन प्रेमभक्ति चितलावे॥
पांचौ आहिं प्रबल घट माहीं। मन राजा पांचो कर नाहीं॥
सत्यगुरु ज्ञान मन धरि राखे। पांच चोरसाधि सत्यसुखमाखे॥
छन्द-धरि मनहिं बाँधहु पाँच साधहु सारसतगुरु ज्ञानते॥
यह देशहै यमराजको तरैं सो विदेही नामते॥
सतनामव्रतगहिशब्द हियधरि करहु सेवा तासु हो॥
तत्त्वध्यान सतपदरूप स्थित होय अमर लोकैनिवासुहो॥
दोहा-गुरु मुखशब्द प्रतीति करि, हर्ष शोक विसराय॥
दया क्षमा सतशील गहि, अमरलोक को जाय॥
सोरठा-वर्ण्यो ज्ञान प्रकार, धर्मदास सम्बोध मत॥
कहै कबीर कबीर, जेहि मम शब्द प्रतीति दृढ॥
इति श्री धर्मदास बोध ज्ञान प्रकाश समाप्तः॥
इति श्री बोधसागरे धर्मदास बोधज्ञानप्रकाश वर्णनो नामप्रथमस्तरंगः॥

सत्य कबीराय नमः

बोधसागर

द्वितीयस्तरंगः

अमरसिंहबोध

धर्मदास वचन–चौपाई

धर्मदास उठि ठाढे भयऊ। दोउकर जोरि सो विनती कियऊ॥
जुग जुग जीव चेताये ज्ञानी। कालफांस ते छुडाये आनी॥
युगकमोद कीना जिव काजा। सोई तुम भाषि कहो निज साजा॥
यमराजाते भये छुटारा। निर्भय हंसालोक सिधारा॥

सतगुरु वचन

धर्मदास मैं कहि समुझाऊँ। युगकमोदकी खबर सुनाऊँ॥
जब हम हते पुरुषमें पाँही। तबकी बात कहू सब तोही॥
युग परवान चाकरी भयऊ। युग जुग पंथपसारा कियऊ॥
अर्ब खर्बजिव असंख्य अपारा। सब उबार लाये पुरुष दरबारा॥
रहे सब हंस पुरुषके पासा। करते कुतूहल लोकनिवासा॥
भूख प्यास निद्रा नहिं भाई। पुरुष ध्यानमें रहे समाई॥
पुरुष दयाल दयाकरि भारी। षोडश रवि हंस उजियारी॥
सेज पुष्प बनी अति भावन। सुख विनोद सब लोकसुहावन॥
बैठे पुरुष सेजपर आयी। तत्क्षन ज्ञानी लिये बुलाई॥
ज्ञानी तुम जाओ संसारा। जाइ करो अब हंस उबारा॥
सिंगलद्वीप अमरपुर गामा। अमरसिंह राजा करनामा॥
ताको अबै चेताओं जायी। चेतन अंश जग रहे भुलायी॥

ज्ञानी वचन

ज्ञानी वचन कहै कर जोरी। सत्यपुरुष एक विनती मोरी ॥
पुरुष मोहिं पठवो संसारा। कौन नामते हंस उबारा ॥
साखी-कौन नाम हंसन कहँ, कौन देऊँ कडिहार ॥
कौन नाम नारिन कहँ, जाते होई उबार ॥

चौपाई

कालफाँस जासे कटि जावे। सहजे हंसलोक महँ आवे ॥
इतना बोल पुरुषसे पाऊँ। तब भवसागरमें चलिजाऊँ ॥

पुरुष वचन

अहो ज्ञानी बचन सुनि लेहू। मान सिखापन शिरपर देहू ॥
सब राह दिखाऊँ मैं तोही। उबरे हंसा अधिकारी सोई ॥
साखी-बालककू बीरा कह्यो, तिरिया कुटिल सनेह ॥
सुरतवंत को यह शब्द है; पुरुष नाम निज लेह ॥

चौपाई

पुरुष हुकम दीना तेहि बारा। ज्ञानी वेग जाओ संसारा ॥
मूलनाम परवाना देहू। सकल जीव अपना करि लेहू ॥
ज्ञानी चले लोकते जबहीं। धर्म धीर मिले पुनि तबहीं ॥
देखत धर्मरायमनहिं संकाना। आपन हानि मनहिं अनुमाना॥
ज्ञानी तुम सुनो वचन हमारा। काहेको आये तुम संसारा ॥
चौदा भुवन राज लिख दीना। अब काहेको चितवन कीना ॥
आहार यही हम कहँ दियऊ। पुरुष दया अब काहेकु कियऊ॥
राज हमारो है संसारी। सुख दुःख जीवन देहुँ अपारी ॥
ब्रह्मा विष्णु महेश कहाई। मेरे अंस जगमाँहि रहाई ॥
हमतो रहही शून्य मँझारी। गम नहिं पावे कोइ हमारी ॥
राज भार सब उनको दियेऊ। हम न्यारे होइ देखत रहेऊ ॥

ज्ञानी तुम जाओ संसारा । वचन एक अब सुनो हमारा ॥
पुरुष वचनकी तुम कहँ लाजा । ता पाछे करियो जिव काजा ॥

ज्ञानी वचन

सुनहु वचन निरंजन राई । सबै बात मैं कहूं समुझाई ॥
कोटि ज्ञान हम तुम कहँ हारा । द्वादश पंथ चले संसारा ॥
ताते चलिहै आहार तुमारा । इतना वचन धर्म कहँ हारा ॥
धर्मदास सुनियो चित लाई । धर्मधीर ऐसा ठहराई ॥
तब हम आये यहि संसारा । जीवनकाज पृथ्वी पगु धारा ॥
अमरपुरी एक नगर रहाई । सिंगलद्वीपके मांहि बसाई ॥
तहाँ आई हम कीन्ह पसारा । पहुँचे रायके महल मँझारा ॥
षोडश रविकी ज्योति पसारा । महलन मांही भयो उजियारा ॥
अमरसिंह राजाको नामा । लागी कचहरी बहु विधि धामा॥
देख प्रकाश उठे तब राई । नृप धाये महलनमें आई ॥
आये महलमें सतगुरु पासा । सतगुरु चरन गहे विश्वासा ॥

अमरसिंह वचन

अहो संत एक विनती करिहो । पूछत वचन क्रोध जनि धरिहो ॥
के तुम तीन देवनमें कोई । के परब्रह्म तुम आये सोई ॥
और गम्य नहिं चलत हमारी । सो तुम वचन कहो निरवारी ॥

सतगुरु वचन

साखी–हम आये सतलोकसे, जीवन करन उबार ॥
कालफांस निवारके, ले जाऊँ लोक मँझार ॥

चौपाई

यह कहि गुप्त भये प्रभु राई । राव परे धरनी मुरझाई ॥
बिकल भये मुख आवे न बानी । तलफत मीन जैसे बिन पानी ॥
सतगुरु बिन तलफत नृप तैसे । स्वाँति बुंद बिन चात्रिक जैसे॥

छन्द चर्चरी

मोहि कहा जानि दरशन दिये प्रभु गुप्त पुनि काहे भये ॥
हग पलक देत बिलंब नाहीं कवन दिशि कहँवा गये ॥
हमहीं अभागी कीन्ह सतगुरु दरस देके छिप रहे ॥
कैसे धरूँ मन धीर तबलग दरश तुम ना देखिहे ॥

सोरठा-भये अभाग मुहि जान, दरश देहके छिप रहे ॥
नहीं करूँ जलपान, जबलग दरश न देखहूँ ॥

चौपाई

दिवस पाँच तब ऐसे बीता। निपट राय उर बाढ़ी चींता ॥
सुनी खबर तब पंथ चलि आये। तिन राजाको आन उठाये ॥
ले झारी मुख मंजन कीना। संत चरण चितवहु विधि दीना ॥
सतगुरु दरश दिये तेहि वारा। महल मांहि कीनो उजियारा ॥
तहां जाइ जब ठाडे भयऊ। राजा चरण धाय तब गह्यऊ ॥
हमहि सनाथ किये प्रभुराई। हम निज सेवक तुमरे आई ॥

सतगुरु वचन

ज्ञानी कहे सुनो हो राई। यमफांसीते लेहों छुडाई ॥
सब जग परचो कालके फंदा। बहुविधि तिनको बांधे बंधा ॥
नेम धर्म कुल कर्म लगाये। ये फंदा सब जगत फँदाये ॥
जो कोइ हंसा होय सुभागी। काल फांसते बचिहै भागी ॥
धर्मकाल ताको नहिं पावे। सुरति निरति ले शब्द समावे ॥

साखी-शब्द सुरत युग बांधई, कर्म भर्म दे छोर ॥
हंस गति जब आवई, कहा करे यम चोर ॥

अमरसिंह वचन-चौपाई

हे साहेब जो आयेसु पाऊँ। तो रानीको वचन सुनाऊँ ॥
अबके सतगुरु जाहु दुराई। तो हमकूँ नहिं जीवत पाई ॥

सतगुरु वचन

सतगुरु कहे सुनो हो राई । भक्ति प्रेम बस कतहुँ न जाई॥
तत्क्षण राजा चलिभे जबहीं । सात खण्डपर पहुँचे तबहीं ॥
सुस्वरकला रानि तहँ रहेऊ । तासों राय वचन एक कहेऊ ॥
सुनो रानी एक वचन हमारा । अपने जीवका करौ उबारा ॥
साखी-राजा रानीसों कहैं, मानो वचन हमार ॥
साहेब आये लोकसे, चरन सोगहो सम्हार ॥

रानी वचन-चौपाई

रानी कहै सुनो हो राजा । विलख वदन आये केहि काजा॥
केहि कारन आये तुम खरारी । हमसे वचन कहो निरुवारी ॥

राजा वचन

रानी तुमसों कहूँ हवाला । जो सतगुरुने दीनो प्याला ॥
एक दिना लीला अस कियेऊ। महलनमें उजियारा भयेऊ ॥
तब हम तत्क्षण धाये जबहीं । महलन बीच पहूँचे तबहीं ॥
दरशन पाये भयउ अनन्दा । बारहि बार चरण गहि वंदा ॥
पलक ओट प्रभु गये विलायी । चार दिवस परे धरनि मुरझाई॥
प्रोहित विप्र सब आये जबहीं । कहे समुझाइ हमकूँ तबहीं ॥
बनिया मोदी सगरे धाये । छीया सेठ चौधरी आये ॥
भाई भतीजे परजा धाई । काहे राय मरत हौ भाई ॥
सबे मिलि आनि उठाये जबहीं । ले झारी भर दीना तबहीं ॥
ले झारी मुख धोवत भयऊ । साहेब दरश बेगि तब दयऊ ॥
दरश पाय मैं भयउ सनाथा । रानी सत्य कहत हौं बाता ॥

रानी वचन

राजा बात कहत हौं तोही । सत्य कहूँ जो मानो मोही ॥
अब तुम बात कहत हो नीका । तेहि पाछे पुनि लागे नहिं फीका॥

राजा बात कहीहौ आछी। पाछे जगमें होय न हाँसी॥

राजा वचन

रानी मानो कहा हमारा। साहेब चरन बेगि चितधारा॥
धन जौबन तनरंग पतंगा। छिनमें छार होत है अंगा॥
तुरत मान जो रानी लीना। संत दरश कामिनि जो कीना॥
हाथ नारियल आरति लीना। सात खंडसे उतर पग दीना॥
सात सहेली संग लगी जबहीं। स्वरकला पुनि उतरी तबहीं॥
सब उमराव बैठे दरबारा। रानी आइ बाहिर पग धारा॥
तब उमराव उठे भहराई। स्वरकला कस अचरज लाई॥
रानी कबहु न देखी भाई। सो रानी कस बाहेर आई॥
गजमोतिन से पूरे मांगा। लाल हिरा पुनि दमके आंगा॥
आधा मस्तक कीन्ह उघारा। मानिक दमके झलाहलपारा॥
तब रानी सतगुरु पहँ आई। नारियल भेट जो आनचढ़ाई॥
रानी थाल हाथमें लियऊ। करत निछावर आरति कियऊ॥

साखी-रानी ठाढ़ि मैदानमें, सुनो संत धर्मदास॥
सुरजकिरन अरु रानिको, एकही भयो प्रकाश॥

चौपाई

लगि चकाचौंधि अधिक पुनि जबहीं। देखि न जाय रानीतन तबहीं॥
राजा रानी दंडवत कीन्हा। ऐसी भक्ति हृदयमें चीन्हा॥
दोउ कर जोरि राय भयो ठाढा। उपज्यो प्रेम हृदय अति गाढा॥
साहेब हमपर दया जो कीजे। भुवन हमारे पांव जो दीजे॥
तबहीं हम मंदिर महँ आये। पलंग बिछाय तहां बैठाये॥
झारी भर तब राजा लीना। चरनामृतकी युक्ति कीना॥
राजा ऊपरते डारत पानी। चरन पखारे स्वरकला रानी॥
चरण पखारि अँगोछा लीना। जैसी भाव भक्ति उन कीना॥

चरणामृत तब शीश चढावा । लेचरणामृत बहु विनती लावा ॥
जैसी भक्ति राव जो पावा । धरमदास तोहि बरनिसुनावा ॥

धर्मदास वचन

और कहो राजाकी करनी । सो साहेब तुम भाखो वरनी ॥

सतगुरु वचन

तुरतहि तब सब साज बनावा । हमको सो अस्नान करावा ॥
हम अरु राय बैठे जेंवनारा । आनेउ सार धरे दोउ थारा ॥
अधर थार भूमिते रहई । रानी तबहीं चितवन करई ॥
रानी कहे रायसों तबहीं । लीला निरखो गुरुकी अबहीं ॥
अधर अग्र जिनका पनवारा । महा प्रसादते आइ अपारा ॥
नर नारी तब ठाढे भय आई । महा प्रसाद अब देहु गुसाई ॥
तब हम दीनेउ तहां प्रसादा । पाय प्रसाद भई तब यादा ॥
पुरुषलोककी भई सुधि तबहीं । ज्ञानी आय चेताये भलहीं ॥
हम भूले तुम लीन चेताई । फिरि न विगोवे आइ यमराई ॥
या यम देश कठिन है फांसी । काम क्रोध मद लोभ विनाशी ॥
साखी–काम क्रोध अरु लोभ यह, त्रिगुन बसे मन माहिं ॥
सत्य नाम पाये विना, जमते छुटको नाहिं ॥

चौपाई

श्रवन लागिनिजलाम सुनाई । तुरत राय कह चले लिवाई ॥
पहुँचे जाय सुमेर पहारा । पुर बैकुंठ रच्यो जेहि ठारा ॥
जय विजय जो तहां रहेऊ । तेहि साहेबको देखत भयेऊ ॥
देखत पौरिया ठाडे भयऊ । आदर करि साहेबको लयऊ ॥
कहे पौरिया विनती लाई । भूपति लोक कहांको जाई ॥
तब हम पौरीयन सो कहेऊ । एक जिव सत्यनाम जो गहेऊ ॥

१ डरे !

पुर वैकुंठ दिखायो चाहीं। ताते हम आये यहि ठाहीं ॥
तहांते हम चले रिगाई। पहुँचे चित्रगुप्तके ठांई ॥
लग्यो दरबार चित्रको जहँवा। पुण्य पापको निबेरो तहँवा ॥
देखि साहेबको ठाडे भयऊ। हाथ जोरिके बिनती कियऊ ॥
डार सिंघासन बैठक दीना। तब साहेब सो बिनती कीना ॥
धन्य आजबड भाग्य हमारा। साहेब आये इहां पग धारा ॥
आये गुप्त साहेबके पासा। विनति करत बहुभये उदासा ॥
हे साहब हम पूछत तुमपै। कह लाये भूपन कहु हमपै ॥
यह तो हमरो चोर कहाई। अधम पापि राजा यह आई ॥
तब साहेब गुपेतसे कहेऊ। लीखनी तुमारी देहिं चुकोई ॥
यह सुनि गुप्ततवे रिसियाना। हमरी लिखाई बाद बखाना ॥
गुपत कर्म करे नर कोई। सो निज चोर हमारा होई ॥

साखी–प्रकट करम जो करहिं नर, सोई चित्र लिख लेहुँ ॥
भूपतिलोक कहावहीं, पाप पुन्य कर येहु ॥

चौपाई

तब साहेब एक जुगति बनाई। पारसपथरी तहां दिखाई ॥
अनेक कर्मसे लोहा भरिया। पारस भेटत कंचन करिया ॥
साहेब गुप्तसे कहे समुझाई। इनकू लोहा करो रे भाई ॥
लोहासे जो कंचन कियेऊ। यहि विधि हंसा निरमल भयऊ ॥
इतनी सुनि यम भये अधीना। फेर न तिनसे बोलन कीना ॥
अहो जमराय वचन सुनु मोरा। कही करो तो करहू चोरा ॥
राजाकू ले जाओ भाई। इनकू यमपुरी लाओ दिखाई ॥
तबयमराज हुकुम करिदीयऊ। दूत दोय राज संग गयऊ ॥

---

१ चित्रगुप्त।

दूत रायको चले लिवाई । पहुँचे जाय यमपुरी मांही ॥
त्रास जीवको देतहै जहँवा । देखत राजा मन पछितावा ॥

नरकको वर्णन

एक तो कोल्हू मांहि पिराई । ऊंधे मस्तक एक झुलाई ॥
एक तो बांध खंभसू ताते । चीसे देत बहुतही भांते ॥
एक जीवको खात चबाई । भागत फिरे बचत नहिं भाई ॥
एक जीव कुंडमहिं डारा । मोगरी शिरपै मारे अपारा ॥
कुंड चौरासी बने है ति भाई । भांति भांति यम त्रास दिखाई॥
ऐसे त्रास जीवनको दियऊ । देखत राजा व्याकुल भयऊ ॥
एक कुंड तो रुधिर भराई । दूजा कुंड तो पीब कहाई ॥
त्रीजो कुंड हि मूत्र भराई । योजन एक ताकि गहराई ॥
योजन चारकी है चकराई । योजन चार लगि गन्ध उडाई॥
परे जीव ता माहिं अपारा । चौथा कुंड नरककी धारा ॥

साखी-परे जीव ता कुंडमें, कोइ अब हमहिं उबार ॥
मारत मोगरी शीरपर, बहुतहिं करत पुकार ॥

चौपाई

पांचैं कुंड सो अग्नि कहाई । बहुत जीव तहँ जरहीं भाई ॥
योजन लक्ष है ता गहिराई । पांच लक्षकी है चकराई ॥
करत पुकार तहँ जीव अपारा । यहि अवसर कोउ हमहिं उबारा॥
राजा यमपुरी देखि बनांई । कहत न बने रहे शिरनाई ॥
झूँठी वचन कहत है जोई । जीभ्या काटिलेत पुनि सोई ॥
झूँठी बांह देखाई जो कबही । काटे बांह यम ठूंठा करही ॥
झूँठी साख भरे जो भाई । विषधर ताके जीभ लगाई॥

१ अच्छी तरहसे ।

बिन अपराध मारे जो कोई। बहुत मार तेहि ऊपर होई ॥
स्वपुरुष तजि पर पुरुष संग जावे। अगिनपुरुष तेहि संग मिलावे ॥
पुरुष होय नारी कहँ त्यागे। नारी और सो मन जो लागे ॥
अग्निनारि तेहिसंग मिलावें। यहि विधि जीवनत्रास दिखावें ॥
एक एकको त्रास दिखावें। हाथ छूरी ले कण्ठ चलावें ॥
एक जीवको ठाडे कीना। काग गीधको हुकम करि दीना॥
काग गीध नोचत हैं भाई। भागत फिरे त्रास अधिकाई ॥
जे नर नारी मदिरा पावें। तप्त तेल पुनि ताहि पिलावें ॥
संत साधुकी निंदा करई। जूठी साख पंचमें भरई ॥
ताको फल पावत है सोई। सब अँगमें कुष्ठ पुनि होई ॥
ऐसी यमपुरी देखी बनाई। देखत राजा मन पछताई ॥

साखी–देखी राजा यमपुरी, मनमें भये हुशियार ॥
साहेबसो विनती करे, हमको लेउ उबार ॥

चौपाई

नृप अरु दूत पहुँचे तहवाँ। चित्रगुप्तको दरबार रहे जहवाँ ॥
जहाँ विराजे ज्ञानी सिंहासन। गहे चरन तहां नृपति ततक्षण॥

राजा वचन

तब राय चरण परस्यो आयी। अबकी साहेब लेहु बचाई ॥
यह यम देश कठिन है गांसी। सुरनर मुनि परे यमफांसी ॥

साखी–सुनि कथा जब नरककी, धर्मदासभय मान ॥
सतगुरु सो कहने लगे, औरो कहहु बयान ॥

सतगुरु वचन–चौपाई

कहैं कबीर सुनो धर्मदासा। नरक वृत्तान्त करौं परकासा ॥
धर्मराय अस बाजी लावा। पाप पुण्य दोउ कीन उपावा ॥

पाप पुण्य रचि जीव फँसाया । जो जस करे सो तस फल पाया ॥
करे पाप तेहि नरक भुगतावें । करै पुण्य तेहि स्वर्ग पठावें ॥
कर्महिं भुगुति गरभमें जावे । यहि विधि कालजीव फँदावे ॥
सुनु धर्मदास नरककी बाता । सबही तुमसन कहूं विख्याता ॥
सकल सुनहु यमपुर इतिहासा । अद्भुत सुनि होय जीव त्रासा ॥
ठीका पुरै जब जिवकी भाई । धर्मराय मन चिन्ता आई ॥
आयसु किंकर गण तब पावें । हुकुम चित्रगुप्त ताहि सुनावें ॥
ते जग आवें आयसु पायी । जीवहिं पकरि तहाँ लै जायी ॥
लै जांहिंसो यम सदन मंझारा । करैं ताहि यम सन्मुख ठारा ॥
रवि सुत तहाँ सिहाँसन बैठे । यमगण तहाँ विराजत ऐंठे ॥
काल सेन तहँ सबहि विराजैं । शास्त्र प्रवर्तक मुनिवर छाजैं ॥
धर्मशास्त्र के जे जे करता । सबही देखैं जो जिव मरता ॥
व्यास पराशर आदिक सबहीं । पहुँचैं यमपुरि तन त्यागे तबहीं ॥
ये सब यम सहाय सो करहीं । पाप पुण्यकर लेखा धरहीं ॥
सबहिं मुसाहिब कालके आहीं । निज नैनन हम देखत जाहीं ॥
धर्माधर्म विचारत नीको । सब मिलि न्याय करत करनीको ॥
चित्रगुप्त जब बही सुनावे । धर्म राय कहिके समुझावे ॥
जिन २ पाप किया जग आयी । तिनकर लेखा जब सुनि पायी ॥
ते सुनि दूतन कहत जनायी । यथा योग्य भुगतावहु जायी ॥
जब कोई जीव सुकर्मा आवे । शुचि सुन्दर दूतन तन धावे ॥
रविसुत कहविलसाओ स्वर्गा । अर्थ धर्म अभिमत सुखवर्गा ॥
यही सुकृत जब श्रुतिपथ आही । बहुत समुझायो हम तुव पाही ॥

साखी पापी मनुषहिं पाइ यम, दूतन कहे रिसाइ ॥
रौरवादिक की यातना, इनहिं भुगावो जाइ ॥

चौपाई

सुनहिं वचन यमगण यमकेरा । त्रास दिखावहिं नरहिं घनेरा ॥
लोह दण्ड मुद्गर हनि कोपैं । रौरवादि महँ तिनही तोपैं ॥
यहि विधि यम करहिं विलासा। अब विस्तर ते सुनु धर्मदासा ॥
बहु विधि विद्या जग महँ पावै । वेद बिचारि जो ब्रह्म समावै ॥
आतम ब्रह्म एक करि जानै । ब्राह्मण सो तेहि वेद बखानै ॥
ऐसे नर कहँ जो कोइ मारै । ब्रह्महत्या तेहि वेद पुकारै ॥
ब्रह्मरूप ब्रह्मविद जानै । तेहि वधन कहँ ब्रह्मवध अनुमानै ॥
जानि ब्रह्म वध पाप कराला । तव दूतन कह यम ततकाला ॥
कुंभीपाक माहि लैडारौ । मुद्गर परिघ मार बहु मारौ ॥
इन रिस करि मार्‍यो महिदेवा । सुनी न मम अनुशासन भेवा॥
रौरव माँहि गिरावहु घाती । काहू कहै सुनौ नहिं बाती ॥
जो तिय मारै गर्भ गिरावै । तेल यंत्र तनु तासु पिरावै ॥
जिन गुरु हनै हनै निज स्वामी । छुरा धार ते पीडित नामी ॥
जे विश्वासघात नर करहीं । ते नर कालसूत्र महँ परहीं ॥
बाल वृद्ध कर हरै जो प्राना । तप्त तेल महँ पचत अयाना ॥
परदारा परक्षेत्र जे हरहीं । जे नर परपुर सीम विगरहीं ॥
ते गुरु पाप नरक महँ पचहीं । हाहाकार शब्द तहँ मचहीं ॥
चक्रन ते तिनके तनु छेदैं । मुद्गर परिघ शूल बहु भेदैं ॥
गम्य अगम्य विचार न करहीं । खाज अखाज नहीं चित धरहीं॥
तिनके तन को करकच छेदैं । बहुत भांति चोचनसों भेदैं ॥

साखी—चोर वृत्ति करि जो जीवै, करै जो परसे द्रोह ॥
झूठ बोलि अरु मद पिवै, पर निन्दा करै जोह ॥

तिन पापिन कहँ यम विकरारा । ठौर भयंकर माँझ तेहि डारा ॥
जे नर कन्यादान मँझारी । विघ्न करत रौरव अधिकारी ॥

दान देत लखि भांजी मारे। योग्य अयोग्य जो नाहिं उचारे॥
पर तप महँ कर विघ्न अनेका। नहिं हिय महँ जो करत विवेका॥
आप छूँछ औरन व्रत टारे। वेद शास्त्र जिन नाहिं उचारे॥
हरि यश सुनत दहै मन माहीं। दूसर सुने तो चित विचलाहीं॥
तिनकर देह सो कूकर भखहीं। पुनि असिपत्र मांझ दुख भरहीं॥
एकहु अक्षर गुरुसों सीखै। ताहि न मानै मन कर तीखै॥
ते परहीं नर रौरव माहीं। बहुविध दुख भुगतहिं सो ताहीं॥
जे नर हरत दीनके प्रानन। मित्रहि मारत दाहत कानन॥
तिनहि अँगारन मांझ सुतावैं। यमगण दारुन त्रास दिखावैं॥
जे गुरुधन हारक संसारा। क्रिम कूप महँ परत निहारा॥
जौन गुरू व्यभिचारी होई। प्रजहिं दुःख देई नर जोई॥
शिष्य शंक जो नाहिं मिटावत। प्रजहि न्याय जो नाहि चुकावत॥
युक्त अयुक्त न जानत जोई। करत सपक्ष न्याय शठ कोई॥
ते नर अंध तामिस्र मँझारे। गिरत लखे पावत दुख भारे॥
विन देखे पर दोष गिनावैं। यम गण तिनके नैन ढँकावैं॥
अप्रिय वचन औरहीं कहहीं। कारण छेददुख ते शठ लहहीं॥
देव साधु ब्राह्मण धन हरई। तृष्णावश लोभहि मन धरई॥
सूचीमुख नरकहि कर नाऊँ। ते तहँ जाइ वसावैं गाऊँ॥
जे परतिय अभिलाषत प्रानी। निन्दत सुर गुरु भूसुर जानीं॥
धर्मशास्त्र तीरथ हरिजन कर। निन्दा करत सुनहु दुख तिनकर॥
पहिले शूलन पर बैठावैं। मुद्गर शूलनसे करि घावैं॥
पाछे काक श्वान तेहि खाहीं। छेदहिं दुख सुख हेरत नाहीं॥
भोगी बहुत काल प्रिय नारी। त्यागत ताहि अधम अविचारी॥
विनु वैराग ताहिको त्यागे। ताहि त्यागि औरनि महँ पागे॥
सो शठ नरकमाँहि दुख पावै। कहँ लग कहौं कहत नहिं आवै॥
कर पद बाँधि यम सासत देहीं। जो जस किये सो तस फल लेहीं॥

सूरज सुत जस आज्ञा देई। दूत उठाय सबै शिर लेई ॥
चित्रगुप्त सो लिखनी लेखै। धर्मराय न्याय तहँ पेखै ॥

साखी—करै कमाई जो कछू, कभी न निष्फल जाय ॥
सात समुन्दर आडा परै, मिलै अगाऊ धाय ॥

भूमि ताम्रमय तहां बनाई। तापर अग्नि प्रचण्ड बिछाई ॥
दहकत ज्वाला सो महि कैसी। अति दुस्सह प्रलयागिनि जैसी ॥
तहँ नर जाइ जरत दुख पावैं। यमगण हानि तेहि मांझ जरावैं ॥
तीव्र नख रद शूचीकच केते। पापिन कहँ दुख देहिं सब तेते ॥
अति तनु कृश तनु बहु पापी। तहँ दुख पावत जन परितापी ॥
सांकरि बांधि बांधि गज लावैं। अति दृढ मुद्गर हानि तेहि ढावैं ॥
दुख लहि जब इतउत नर धावैं। यमगण धरि तिहि माहिं गिरावैं ॥
पुनि निज कृतकर याद करावैं। परिघन हनि बहु त्रास दिखावैं ॥
तप्त थम्भ बहु ठाड रहावैं। पर तिय गामी ताहि सटावैं ॥
निज पति छोड परपुरुष लुभावैं। सोइ तिया तहँ लाइ मिलावैं ॥
यमगण ताहि मारि भिटावत। कर वचन पुनि ताहि सुनावत ॥
यमके दूत अस कहैं पुकारी। तबतौं तन मन सकल बिसारी ॥
प्राण समान चही परनारी। अबकिन भेटेहु रुचि किमि मारी ॥
उन्नत कुच भुजभरि जिमि भेंटे। मुख चुम्बन रति करि दुख मेंटे ॥
रही जो तव जीवन जग नारी। यह सोइ अपर न करहु विचारी ॥
कलनहिंछनजेहिविनतोहिपापी। मिलहु न तिय सँग करत अलापी ॥
यहिविधि यमगण वचन सुनावैं। हनि हनि अधमन खम्भ लगावैं ॥
मद पीवत सँग जे करि प्रीती। मांसहिं खाइ करत अनरीती ॥
तप्त तैल तेहि मारि पियाई। कहत मदहि पीवहु शठ आई ॥
हाहाकार करै जब सोई। करै विनती सो बहु रोई ॥
ता ऊपर तैलहिं सो डारैं। भीतर बाहर दोऊ विधि जारैं ॥
इतना करैं बहुरि सो आगे। करन शासना सो फिर लागे ॥

असिपत्र बिपिन महँ चलहू । खायो माँस सोई फल लहहू ॥
तहँ अहँतरु दल अतिही तीखैं । ऊपर परत कटत तनु दीखैं ॥
रहत न बनै तहाँ पुनि भाजत । करिविलापबहुविधिदुखपावत॥
करि परघात पाल निज देही । कूटकरमबहु विधिकिय जेही ॥
ते असिपत्र नरक महँ जावैं । पुनि रुकटाइशिर दुख पावैं ॥
एक शिर काटि फेरि होइ आवै । बहुरि कटैं बहुरि ह्वै जावै ॥
जे परहिंसक अधम नरेशा । तेलयंत्र तनु पिसत हमेशा ॥
तेल चुराय जो जगमहँ लेते । यमगण तेहि बहुत दुख देते ॥
तेल चोर कहँ तेल कराही । घृत चोरहिं घृत माँझ गिराहीं॥
जेपर दूध मधू दधि हरहीं । ते गण रक्त कुण्ड महँ परहीं ॥
पाश बांधि गल तेहि महँ डारैं । यम गण दारूण त्रास विडारैं ॥
तीरथ चलत जानि फन हरहीं । ते नर रक्त पीव दह परहीं ॥
देव सदन महिसुर गुरूधामा । जे तोडत मन करहिं अरामा ॥
बन वाटिका पुहम बहु छेदैं । मठ मख[1] भवन सुरभिधर[2] भेदैं॥
दीन भवन चटशाल गिरावैं । अस्थिचूर्ण महँ ते दुख पावैं ॥
पर उपानत[3] वस्त्र शठ हरहीं । पर भोजन छिपाय जो धरहीं ॥
लोहयंत्र बिच ताहि पिरावैं । बहुविधि तेही दुःख दिखावैं ॥
जे नर घर पुर विपिन जरावत । अग्निकुण्ड तनु तासु गिरावत॥
जे निज स्वामिहिं दोष लगावैं । पर अपवाद प्रीति करि गावैं ॥
तिन कहँ नर्क शाल्मली डारै । पाश बाँधि लटकात तरारै ॥
मुद्गर परिघन यमगण मारैं । निर्दय तनक न करूणा धारैं ॥
जो तिरिया परपति रत होई । नाथवती विधवा किन होई ॥
तप्त लोहमय खम्ब नराकृति । यम वशसे तेहि तिय भेटति ॥
लोह शूल खर तप्त विशाला । जीभ छेद मुख करत विहाला ॥
इमिदुख लहँहि अधम नरनारी । कहँ लगिकहौं सो लेहु विचारी॥

---

1 यज्ञशाला । 2 गोशाला । 3 जूता ।

यहिविधिजोयम शासतिकरई । कहँ लगि कहौं पार नहिं परई ॥
सुनत हाल व्याकुल धर्मदासू । मुख प्रस्वेद नहिं आवे श्वासू ॥
देखि दशा सद्गुरु बोले । केहि कारण धर्मनि तुम डोले ॥
धरि धीरज तब धर्मनि भाषा । नरककथासुनिभयमन भाखा ॥

धर्मदास वचन

हो साहेब यम बड विकरारा । केहि विधि हंसा पावे पारा ॥
यही भय मम मन महँ आवै । चितवत चितव्याकुलहोयजावै

सतगुरु वचन

सुनत वचन प्रभु मन विहँसाये । कही शब्द धर्मनि समुझाये ॥
धर्मनि तुमही भय कछु नाही । सतगुरु शब्द है तुमरे पाही ॥
अपर कथा सुनहु चितधारी । संशय मिटै तो होहु सुखारी ॥
जब राजा विनती ममकीन्हा । तब हम ताहि दिलासा दीन्हा ॥
शब्द गहै सो नाहि डराई । तुम किमि डरहु सुनहु हो राई ॥
सत्य शब्द मम जे जिव पैहैं । काल फांस सो सबै नशैहैं ॥
सुनत वचन राजा धरु धीरा । बोलै वचन काल बलबीरा ॥

चित्रगुप्त वचन

है साहब तुम काह विचारो । नगर हमार उजारन धारो ॥
हो साहब जो तुम अस करहू । न्याय नीति सबही तुम हरहू ॥
सुनो साहेब एक बात हमारी । पंथ तुम्हारा चले संसारी ॥
ताते बिनती करैं बहोरी । सुनो गुसाइयाँ अरनो मोरी ॥
ब्रह्मा विष्णु शिव अधिकारी । तीनकी आश जगतमहँ भारी ॥
उनको हम नहिं कबँहु डरावैं । चूक चाल तो ताहि नचावैं ॥
और जीवकी कौन चलावे । हमते उबरन एको न पावे ॥
सीधि चाल चलुजीव सुजाना । सो जीव देहों लोक पयाना ॥
परपंच करी साहेबको धावे । हम ते जीव जान नहिं पावे ॥
चाल चलत लागै बडिबारा । ताते नाहीं दोष हमारा ॥

सतगुरु वचन

ज्ञानी कहे सुनो जमराई। हमरो हंसा न्यार रहाई॥
परपंच तुमरो देखि डराये। जीवघात कबहू नहिं लाये॥
निशिदिन जीव दया उर धारे। ज्ञान ग्रंथ मन माहिं बिचारे॥
अहो यमराय जाहु वैकुंठा। राजा विष्णुसों करावहु भेंटा॥

चित्रगुप्त वचन

चित्रगुप्त उठे कर जोरी। साहेब चूक जो बखशो मोरी॥
तुम हो धनी मैं दास तुम्हारा। अपने दिल हम कीन बिचारा॥

साखी—इतना कही चलत भये, राजा लीना पास॥
मध्य चौक ठाडे भये, देख्यो सबको बास॥

चौपाई

अगिन कौन है इंद्र कुबेरा। दक्षिण दिशा है काल बसेरा॥
नैर्ऋत कौन सुरनको बासा। पश्चिम देवी कीन निवासा॥
देव वास वायव है भाई। गण गंधर्व मुनि देव रहाई॥
उतर दिशा भगवान जो होई। निज वैकुंठ कहावैं सोई॥
कनक भूमि रतननकी पोती। बने वैकुंठ अधिक जग जोती॥
सकल देव दरशनको आये। लक्ष्मी सहित बैठे प्रभु राये॥
राजा साथ हमहूँ चलि गयऊ। देखि विष्णु तब ठाडे भयऊ॥
डारि सिंहासन बैठक दीना। आज सुफल तुम हमको कीना॥
भले आय तुम दरश दिखाये। भूपति लेइ कहां तुम लाये॥

अमरसिंह वचन

ओ भगवान सुनो मम वानी। सेवा तुम्हरी निष्फल जानी॥
हम एकोत्तर मँदिर बनावा। तामें मूरति लै पधरावा॥
साधु राखि मंदिरके मांही। छाजन भोजन दीना ताही॥
जेता धर्म हम सुने पुराना। विप्रन कहे धरम ठिकाना॥
सुरभी सोने सींग मढाई। पीतांबर पुनि ताहि ओढाई॥

भगवान वचन

यहि विधि गौ एकशत भाई। दइ विप्रनको सुनो प्रभुराई॥
यहि विधि सेवा कीन तुम्हारी। तहू कर्म तुम हम शिर डारी॥
सुनु राजा तोहि कहि समझाऊं। पाप करे कस धरो छिपाऊं॥
राजालोक कर्म बहु धरहीं। जीव मारिके भक्षन करहीं॥
तुरी चढ़े बन खेलै शिकारा। नाहक मारैं जीव बिचारा॥
मारे जीव तुमहु सुनाई। इतनो पाप कहां धरो छिपाई॥

साखी-चार खानमें भरमहु, कीनो कर्म अपार॥
विष्णु कहै राजा सुनो, कैसे होइ उबार॥

चौपाई

सतगुरु ऐसी जुगति बनाई। लीला करी एक तेहि ठाई॥
नृप शिर हाथ धरचो तेहि वारी। निकसे कागमुखमांहि अपारी॥
बहुत काग जरे उद्र मंझारा। बहुतक भये पिंडते न्यारा॥
लखि भगवान रहे शरमाई। फेर बात ना बोले भाई॥
ततखन हमहूँ चले रिगाई। पहुँचे मानसरोवर जाई॥
कामिनि शोभा बहुत अपारा। राजा परचो तव चरण मँझारा॥
दयावंत भल लोक दिखाई। जुत्थजुत्थ कामिनि अधिकाई॥
करे ध्यान पुरुषको जहवाँ। चारभानुकी शोभा जहवाँ॥
झलके अंगकामिनिके भाई। रैन दिवस तहां जानि न जाई॥
सिंहासन एकधर्यो तेहि ठांई। चंद्रअंश तहां बैठक पाई॥
भाव प्रीति साहेब सो कीना। भले ज्ञानी तुम दरशन दीना॥
बैठे एक सिंहासन दोई। राजा संग इत पुनि सोई॥
अहो अंश दया अब होई। राजाकूं लै जाओ सोई॥
चन्द्रअंश तब शीश नवाई। आतुर हम तब चले रिगाई॥
लै राजा तब शरीर समाया। भूपति बेगि उठे अकुलाया॥
तबही राजा शीश नवाई। हमको तारो बेग गुसाँई॥

सतगुरु वचन

राजा सुनो वचन अब मोरा । करो आरती तिनुका तोरा ॥
धर्मदास सब तोहि सुनाई । अमरहिंको वैकुण्ठ दिखाई ॥

धर्मदास वचन

धर्मदास तब दोउ कर जोरा । दया करो तुम बंदीछोरा ॥
और कथा मोहि वरनि सुनाओ। दया करो जनि मोहि दुरावो ॥
धर्मदास मैं कहुं समुझाई । जो कछु भगति करी सो राई ॥
जेतक जीव मुक्ति पद पाई । सो अब तुमकूं बरनि सुनाई ॥

अमरसिंह वचन

साखी–राजा शीश नमाइके, बिनति करे कर जोर ॥
हमको सतगुरु तारिये, हम सो अधम न ओर ॥

सतगुरु वचन –चौपाई

सुन हो राय तजो मुरखाई । युग कंकवत हम चल आई ॥
मानसिंह भूपति बड राजा । तासो कीना ज्ञान समाजा ॥
तीस लाख अरु सात हजारा । इतने हंसलोक पग धारा ॥
युग परवान चौकरी गयऊ । इतने युग मोहि आवत भयऊ ॥
कहैं लेख पूछो राय सुजाना । अपने जीवको करो छुटाना ॥
छन्द–गुरुचरण पद्मपराग पावन मृदुल मंजुल सोहावनी ॥
तरु सम सील परकासते तिमिर मोह नशावनी ॥
करहिं आरती बिसरि जन उरमांहि जे नर लावहीं ॥
भक्ति ज्ञान वैराग्य प्रगटे मोक्षपद तब पावहीं ॥

अमरसिंह वचन

सोरठा–तव चरनन अनुराग, और न दूजी आस ॥
मैं किंकर पद लाग, करहु अनुग्रह दास पर ॥
छन्द–आदि ब्रह्म अचिंत अविगत आदि अदली गाइए ॥
अजर नाम अचिंत अमर अकह अविचल धाइए ॥

अक्षय नाम आनंदरूपी अखिल सम अस्थिर मही ॥
अधम उधारण अखिलपति अखंडसरूपी हौ सही ॥

सोरठा–हंस उवारण नाम, हंसराज हंसनपति ॥
हंस श्रवण सुखधाम, सारशब्द दातार गुरु ॥

चौपाई

मैं कृमि गुरुभृंगी होय आये । अमी पिलाइके रूप फिराये ॥
मैं हूं लोह कुधात कहाया । गुरु पारस मोहि हेमबनाया ॥
एक मुख महिमा कही न जाई । जो मुख कहूँ पदमसत पाई ॥
जिमि पंछीका जोडा होई । नर नारी जुग बंध है सोई ॥
जिमि मोहि शब्द दीन गुरुराई । तिमि रानीको करिय मुक्ताई ॥
तुम बँदिछोर सबै विधिलायक । हम हैं जीव अकाम अलायक ॥
तेहि ते अरज करौ प्रभु साईं । करि दया जिव मुक्ताऊ भाई ॥

ज्ञानी बचन

सुनो अमर हम कहे तुम सो । करनी बने करो कछु तुम सो ॥
हम कहे सोइ सुन तुम राई । भक्ति करो अब सुरति लगाई ॥
तन मन धन साहेबको दीना । शिरके साटे भक्ती लीन्हा ॥
रंभा नाम पुरेथ[1]की नारी । गुरु सेवामें रहे हुशियारी ॥

राजा बचन

तब राजा गुरुसे विनती कीना । अपनाकर मोहि निजकर लीना ॥
अब साहेब परवाना दीजे । जो कछु कहो सोई हम कीजे ॥
कौन वस्तु आनू गुरुदेवा । सो साहेब भाषो मोहि भेवा ॥
जेहि विधि तरन होय भवसागर । शब्द सरूप कहो तुम नागर ॥

साखी–मुक्त लोक जाते मिले जहां पुरुष अस्थान ॥
जरा मरण व्यापे नहीं सदा पुरुषको ध्यान ॥

---

१ पुरेथ शब्द राजा अमरसिंहका सम्बोधन है ।

ज्ञानी बचन-चौपाई

भलमत बुझे राय ते मोही । निज गत कहूं बचन दृढ तोही ॥
तब हम दीन सिखापन राजा । जाते होय जीवका काजा ॥

साखी-चौदा कदली खंभ ले, उत्तम ठौर गडाय ॥
मध्य चँदवा बांधिये, सिंहासन कनक बनाय ॥

चौपाई

गजमुक्ताहल थाल भराई । चन्दन चूनको चौक पुराई ॥
कंचनके पनवारा करहू । कंचन झारी जल भर धरहू ॥
तीन हजार मँगाये पाना । कंद पसेरी सात प्रमाना ॥
सात पसेरी मिष्टान्न मँगाओ । छतिस नारियल संगहि लाओ ॥
दुइसे एकतिस आनु सुपारी । तितनी खारक कहूं संभारी ॥
एतिक लौंग इलायची धारी । मेवा अष्ट लाओ यहि वारी ॥
मिर्च जायफल आनो भाई । द्राख जावत्री बेगि मँगाई ॥
शकर बदाम कपूर बखाना । सात हाथ बस्तर परवाना ॥
कंचनथाल गजमोती भराओ । मध्य आ ती मानिक धराओ ॥
कंचन कलस धरो बहु भांती । तापर बारो पाँचो बाती ॥
फूल चमेली अगर मगाई । परिमल और सुगंध धराई ॥
नाना पुष्प बताये माला । सब कछु आनि धरे ततकाला ॥
तब हम बैठे सिंहासन जाई । सकल समाज शब्द धुनि गाई ॥
अचिंत नामका चौका कीन्हा । ततक्षण थार हाथमें लीन्हा ॥
ठाढे सकल लोग अनुरागा । शब्द विरह सबहिन मिलि पागा ॥
दिवस कोकिला जिमि आनंदा । सकल हंस तिमि आनँदकंदा ॥
तब हम बैठे थार धराई । अति आधीन परे सब पाई ॥
जब हम नारियल लीन्हा हाथा । सकल जीव तब भये सनाथा ॥
नरियल मोरि अंसगहि लीना । तिनुका तोर परवाना दीना ॥
भय छूटे जप निरभे नामा । सतगुरु नाम भए विशरामा ॥

कालजालते हंस छुडाये। राजा रानी भक्ति मन लाये ॥

साखी-राजा रानी प्रेमसे, और सकल जिव साथ ॥
नाम पान सबहिन दिये, मस्तक धरिके हाथ ॥

चौपाई

कीन्हा दंडवत सब बहु भांती। राजा रानि पुत्र औ नाती ॥
पुरेथभाणसा लीनो पाना। रंभा नाम पुरेथनी जाना ॥
तबही दिवान खेमसिंह आये। नर नारी परे गुरुके पाये ॥
आये बखशी लीन्हा पाना। भाव भक्ति मन माहि समाना ॥
नाम रतनचंद्र कहे कर जोरी। दया करो मम बंधन छोरी ॥
आये चौधरी प्रेमचंद नामा। तन मन अरपी कीन्ह प्रनामा ॥
तबहीं शेठ शामजा आये। प्रेमभावसे शीश नवाये ॥
और जीव बहु लीन्हा पाना। सबको चित्त गुरुचरण समाना ॥

छन्द-राजा खडा करे विनती प्रभु दीनबंधु दयाल हो ॥
हंस नायक प्रभू लायक शब्द दीन्हा रसाल हो ॥
जेहि खोज ऋषि मुनि नारद ब्रह्मा हरि हर थक रहे ॥
नहि पार पावत शारदा सोइ नाम सतगुरु मोहिं दिये ॥

सोरठा-मोहि अनुग्रह कीन्ह, दास जानि दाया करी ॥
भक्तिदान मोहिं दीन्ह, लेइ चलो समरापुरी ॥

ज्ञानी वचन-चौपाई

ज्ञानी कहे सुनो हो राऊ। तुमरी अवध सो सबै रहाऊ ॥
एते दिवस रहो भवसागर। पीछे चलो लोक कहँ नागर ॥

राजा रानी वचन

राजा रानि कहे कर जोरी। सतगुरु सुनिये विनती मोरी ॥
कठिन दुःख भवसागर मांही। क्षण भर हमपे रह्यो न जाही ॥
इकइस लाख जीव तुव शरना। बहुत बरसमें होइ निज मरना ॥

जो तुम सतगुरु हंस सहायक । होहु दयाल हंस सुखदायक ॥
अधम उधारन नाम तुम्हारा । अवगुन मोर न करहु बिचारा ॥

ज्ञानी वचन

ज्ञानी वचन कहे गोहराई । राजा सकल हंसा बुलवाई ॥
सकल हंस सतगुरु संग लागा । इकइस लाख हंस तन त्यागा ॥
पावत पान गये एक ठारा । पहुँचे जाय पुरुष दरबारा ॥
भाव भक्ति भल कीन्ह बनाई । सर्वस अरपि चरनामृत पाई ॥
काल जालको चिह्न जो पावे । सार शब्दमें सुरति लगावे ॥
मन निरंजन तेज ओंकारा । ये सब चीन्हे काल पसारा ॥
नाभि कमलते सुरति लगावे । मकरतार चढि शब्द समावे ॥
पुरुष दरश पावे जब हंसा । जनम मरणको मेटै संसा ॥
षोडश भानु हंस तेहि रूपा । समझ न परे रंक औ भूपा ॥
एक बरन राजा औ रानी । ताकी भेद सब जाने ज्ञानी ॥
पुरुष सज्या हंस तहां आये । अमृत भोजन करत अघाये ॥
काया अमर अमरवर पाई । दुःख और द्वंद सबे मिट जाई ॥
एही विधि सकल जीव तहँ आवा । सबही हंस एक नाम समावा ॥

सोरठा–कहा जीव करनी करे, कहा चलेगा चाल ॥
सतगुरु नाम प्रतापते, कबहुँ न खावे काल ॥
कहन सुननकी है नहीं, देखा देखी नाय ॥
सार सवद जो चिन्ही, सोइ मिलेगा आय ॥

चौपाई

पुरुष हुकुमसे जीव बुलाये । राजा रानी हंस तहां आये ॥
हंसन कह तब वचन सुनाये । भाग बडे तुव दरशन पाये ॥

पुरुष वचन

अहो जीव कस कीन्ह कमाई । हंस सज्जन मोहि कहो सुनाई ॥

राजा रानी वचन

माथ नवाय कह राजा रानी । बार बार विनती बहु ठानी ॥
करनी चाल हम नहि जाना । परे ते कूपमें अति अज्ञाना ॥
आय जगाये अंध अचेता । सतगुरु शब्दते बांधे हेता ॥
पुरुष हुकुमते ज्ञानी चलि आये । कहो जीव कस करहिं कमाये ॥
ज्ञानी वचन कहैं परमाना । इन सम हंस और नहिं आना ॥
इनकी डोरी जीव सब आवा । पुरुष सुनी यह आनंद पावा ॥
अंक मिलाई हंस तब लीना । अरध सिंहासन बैठक दीना ॥
सेत छत्र शिर दीन्ह तनाई । सूरज कोटि छबि राजा पाइ ॥
यहिविधि राजा लोक सिधाये । सुनत बोध धर्मनि मन भाये ॥
एक वचनको संशय आई । सो मोहिं नाथ कहौं समुझाई ॥
षोडश रवि सब हंस सराई । कैसे रायको दइ अधिकाई ॥

कबीर वचन

धर्मदास तोहैं कहि समुझाऊँ । तुमरे मनको धोख मिटाऊँ ॥
राज गुमान उन दिये विसारा । और जीवकी मुक्ति सुधारी ॥
पुरुष रायको पूछ न कीना । निज करनी कर नाम न लीना ॥
अपने मन तजि मान बडाई । ताते पुरुष दया उर आई ॥
धर्मदास सुनो चित लाई । यहिते राजा बढती पाई ॥

धर्मदास वचन

धर्मदास कहे युग कर जोरी । दया करी तुम बंदीछोरी ॥
दीनदयाल दयाके सागर । अच्छी कथा सुनाये आगर ॥

साखी–धर्मदास आधीन होइ, विनती करै कर जोर ॥
कथा कही अमरसिंहकी, संशय मिटायो मोर ॥

इति श्रीबोधसागरे कबीरधर्मदाससंवादे राजा अमरसिंहबोध कथा वर्णनो नाम द्वितीयस्तरंगः ॥ श्री अमरसिंहबोधः समाप्तः

अथ बोधसागर

तृतीयस्तरंगः

बीरसिंहबोध

❋

धर्मदास वचन-चौपाई

धर्मदास पूछे चित लायी । साहब मोहि कहो समझायी ॥
बीरसिंहराय किमि कीनी सेवा । करिके दया कहो गुरुदेवा ॥
बीरसिंहदेव बडा अभिमानी । कैसे साहिब सेवा ठानी ॥
सो वृत्तान्त कहो मोहि स्वामी । दया करि कहिये बहु नामी ॥

कबीर वचन

धर्मदास भल पूछहु बाता । तुमसे बरनि कहूँ विख्याता ॥
तन मन धन अरु मोहन लावे । जो जिव हमरे संग सिधावे ॥
आदि अन्त सुरति हम कीना । तबही पग धरतीपर दीना ॥
और दिशा देख्यो हम जायी । पूरब पश्चिम दृष्टि फैलायी ॥
बीरसिंह देव काशीकर राऊ । हम पहुँचि तहँ कीन गोहराऊ ॥
प्रथमहिं चले भक्तपर गयऊ । सकल संत जहँ भक्ति करयऊ ॥
नामदेव भक्ति करन मन लावा । सेना धनाजाट तहँ आवा ॥
राँका बाँक सदन कसाई । पद्मावती दीपक लै आई ॥
चौहटे तान चँदेवा दीना । ठाडे भक्त सब गायन लीना ॥
नामदेव लोटन हुरे भाई । हाथ ताल रैदास बजाई ॥

धना मृदंग पट्ट उजियारा । जुरे भक्त सब संत अपारा ॥
धर्मदास तहँवा हम गयऊ । राम राम सबही मिलि कियऊ ॥
तब हम वचन एक कहि लीना । सकल भक्तके हिये मन दीना ॥
नामदेव केहि पुरुषहिं ध्याओ । भक्त करतका कर्म तुम लाओ ॥

नामदेव वचन

नामदेव कहे सन्त भुलाओ । दोसर पुरुष कौन ठहराओ ॥
हरि हर ब्रह्म हैं बड देवा । तिनकी करै सकल जग सेवा ॥
वे जगकर्ता सब कछु अहहीं । वेद शास्त्र सब तिनकहँ कहहीं ॥
है प्रभु आदि मध्य अरु अंता । शीश मुडाय जपो केहि संता ॥

कबीर वचन

हरि ब्रह्मा शिव शक्ति उपायी । इनकी उत्पन्न कहहुँ बुझायी ॥
विना भेद सब फूले ज्ञानी । ताते काल बांधि जिव तानी ॥
अजर अमर है देश सुहेला । सो वे कहहिं पंथ दुहेला ॥
ताका मरम भक्त नहिं जाना । किरतम कर्तासे मन माना ॥
हम तो अगम देशसे आये । सत्यनाम सौदा हम लाये ॥

साखी—किरतम रस रंग भेदिया, वह तो पुरुष न्यार ॥
तीन लोकके बाहिरे, पुरुष सो रहत निनार ॥

चौपाई

बीरसिंहदेव बघेला राजा । बैठे आय महलके छाजा ॥
राजा नजर सबन पर कीना । सबकी भाव भक्ति चित दीना ॥
गावें भक्त आनन्द व्यवहारा । एक भक्त बेटा सो न्यारा ॥
टोपी एक अनूपम दीने । माथा तिलक कूबरी लीने ॥
स्वेत स्वरूप भगतकी काया । महा आनन्द पुरुष छबि छाया ॥

राजाबीरसिंह वचन

छरीदार राजा हँकरायी । नामदेवको आनु बुलायी ॥

छड़ीदार वचन

वेगहिं छड़ीदार चलि आये। नामदेव राजा बुलवाये ॥

नामदेव वचन

नामदेव पूछे चित लायी। राव संग को और रहायी ॥
छडीदार तब वचन सुनावा। कोउ नहिं साथ रायके भावा ॥
नामदेव छडी हाथमें लयऊ। चले चले राजापहँ गयऊ ॥
राजा देखि ठाढ उठि भयऊ। कर गहिके आसन बैठयऊ ॥

राजा वचन

राजा कहै सुनौ हो देवा। कहौ कौनकी करत हो सेवा ॥

नामदेव वचन

साखी-भक्ति करौं गोविंदकी, एक चित ध्यान लगाय ॥

राजावीरसिंह वचन

श्वेत रूप जौ भक्त है, सो कस न्यार रहाय ॥

नामदेव वचन

राजा सुनो वचन यक मोरा। हम तुम हरि हर ब्रह्मा दोरा ॥
ताकर भक्ति करे वह हांसी। कहै पुरुष यक और अविनासी ॥
माला मेखली श्याम शरीरा। मिली जुलाहा सत्य कबीरा ॥
किरतन कहे सकल सब देवा। कहे साँचु देख नहिं सेवा ॥
मूर्ति कूटि पाथर का लाई। कारीगर छाती दे पाई ॥
काँसा ताँबा मूर्ति बनावा। तामें कैसे ब्रह्म समावा ॥
ऐसे कहे कबीर जुलाहा। झूठे देवन हमैं मनाहा ॥
वह तो कहे हम पुरुष अभेवा। नहिं कोइ जाने हमरो भेवा ॥
आप अपनपौ बहु विधि थापे। आपे देव सेवक पुनि आपे ॥
भक्ति ज्ञान योग को भेवा। तीरथ व्रत तप अरु सब देवा ॥
सबको काल जाल बतलावे। एकोको नहिं मनमें लावे ॥
हम सन बहु विधि वाद विवादा। नहि माने वह अनहद नादा ॥

साखी–जोलहा निंदत सबनको, बन्दत काहू नाहिं ॥
झूठ कहत हरि ब्रह्महीं, कहै निर्गुण एकै आहिं ॥

राजावीरसिंह वचन

राजा नामदेव कह बानी । अगम ज्ञान वह करत बखानी ॥

नामदेव वचन

कह नामदेव सुनो हो राजा । बहु विधि कहै शब्द को साजा ॥
जो को निर्गुण नामहिं धावै । योनी संकट बहुरि न आवै ॥
राजा छरीदार पठवाई । जाय कबीरहिं आनु बुलाई ॥

राजावीरसिंह वचन

परम खुशी हमरे मन आवै । जो कोइ निर्गुण नाम सुनावै ॥
अस्तुति वेद करत है जाको । पार न पावत हरि हर ताको ॥
अहिपति अस्तुति करे जो ताही । कोउ विधि पार न पावत जाही ॥
तेहिकर भजन करै जो कोई । तब विधिसे पूरा है सोई ॥
नाम देव सुनु संत सुजाना । वह निन्दक नहि संत प्रमाना ॥
छडीदार भेजि तुरत बुलवाऊँ । निर्गुण भेद अबहि खुलवाऊँ ॥
रूप संत हृदय मम भावै । शांत रूप वह भजन प्रभावै ॥
देखो अबहीं आवत सोई । सब कहिहै तेहि भावत जोई ॥
छडीदार तुरते चलि आयऊ । जहंवा हम वहँ बैठे रहेऊ ॥

छडीदार वचन

छडीदार तब विन्ती लावा । अहो कबीर तोहि राय बुलावा ॥
विन्ती राय कीन कर जोरी । लावा कबीर वेगि तैं दोरी ॥

कबीर वचन

कहै कबीर वचन अरथाई । केहि कारण मोहि राय बुलाई ॥
ना हम पण्डित ना परधाना । ना ठाकुर चाकर तेहि जाना ॥
ना हम विराना देश बसावें । ना हम नाटक चेटक लावें ॥

पैसा दमरी नाहिं हमारे । केहि कारणे मोंहि राय हंकारे ॥
गरज होय तो यहाँ चलि आवे । हम तो बैठे भजन करावे ॥

साखी—छडीदार तुम जायके, कहो रायके पास ॥
महा प्रचण्ड बघेल है, हम नहिं मानत त्रास ॥

चौपाई

छडीदार अति क्रोधित भयऊ । तुरतहिं चलि रायपहँ गयऊ ॥

छडीदार वचन

छडीदार कहै कर जोरी । महाराज एक विनती मोरी ॥
भक्त न आवे मोर हँकारे । कुछ भयभीरन राखु तुम्हारे ॥
कहैं हमारे कौन है काजा । तृणहि समान गिनत हौं राजा ॥
एता वचन राय सुनि लीन्हा । अगम बात कछु घटमों चीन्हा ॥
वह तो परमपुरुष है सोई । और होय तो आवे कोई ॥
सत्य भाव जाके उर आवे । मान बडाई लोभ सब जावे ॥
निर्गुण भक्ति जोई लवलीना । ताहि न उपजे भाव मलीना ॥
आशा तृष्णा जेहि घट व्यापै । धनवन्ता सो चाह मिलापै ॥
यह तो संत अविकल अविकारी । केहि कारण आवे केहु दुआरी ॥
शोचत राजा मनमें गूने । नामदेव मन रहे अलूने[1] ॥
मान बडाई जो नर पागे । करत खुशामद नृपती आगे ॥

साखी—नामदेव राजा कहे, जुलहा यहाँ न आव ॥
है अभिमानी बहुत सो, बहु अहँकार जनाव ॥

चौपाई

कीन विवेक राय दिल माहीं । नहिं आये कबीर हम जाहीं ॥
वह तो सत्य भक्ति चित दीन्हा । कारण कौन त्रास मम कीन्हा ॥
यहि विधि कीन विवेक विचारा । तबहीं राजा आप सिधारा ॥

---

१ नामदेवजीने राजाके विचारका भाव नहीं समझा ॥

हुकम पाय आय असवारा। गज औ तुरंग सु साज सँवारा ॥
आवत देखा जब हम भाई। तब हम लीला एक बनाई ॥
आसन अधर कीन तेहि वारा। सवा हाथ धरतीसे न्यारा ॥
माला तिलक औ टोप विराजे। हाथ स्वेत कुवरी सो छाजे ॥
नृपति देखि अचरज मन कीन्हा। यह तो पुरुष अगम कछु चीन्हा॥
कौन अवलोकन जग हम सबहीं। ऐसे पुरुष न देखे कबहीं ॥
धन्य धन्य अस्तुति सब गावैं। धन्य कबीर चरण सब ध्यावैं॥
राजा चरण पकड़ि दोउ भाई। धन्य धन्य नृप करई बडाई ॥
कहे राय धन भाग हमारा। दर्शन दीन्ह आय करतारा ॥

राजा बीरसिंह वचन

छन्द–अस्तुति करत नृपति भाषेउ तुम ब्रह्म निर्गुण आप हौ ॥
अनाथ नाथ सनाथ करि दिये माथ हाथ अनाथ हौ ॥
अपनो दास करि जानि साहब दरश दीनेउ आयके ॥
कीजे कृपा यहि दासपै चलि भवन दरस दिखायके ॥
सोरठा–कृपा कीन जस मोहिं, तस मन्दिर पग दीजिये ॥
विनय करौं प्रभु तोहिं, वेगि विलम्ब न कीजिये ॥

कबीर वचन–चौपाई

कहैं कबीर तहाँ नहिं काजा। तुम परचण्ड बघेला राजा ॥
काम क्रोध मद लोभ बडाई। रोम रोम अभिमान समाई ॥
तुरी सवा लक्ष सँग तोरे। लक्ष सवा दो प्यादा दोरे ॥
हस्ती चलत सहस तव संगा। निशिदिन भूले कामिनि रंगा ॥
कंचन कलसा महल अटारी। कैसे शब्द गहै नर नारी ॥
हम भिक्षुक जानै संसारा। कौन काज है तहाँ हमारा ॥

राजा बीरसिंह वचन

तुम सतगुरु हो दीन दयाला। करमवश्य हम अहैं विहाला ॥
माया तिमिर नैन पट लागी। दर्शन पाय भये अनुरागी ॥

करो दया अपनो करि लीजे । दास जानि आयसु प्रभु दीजे ॥
दीन जानि मन्दिर पगु धारो । भक्तराज तुम वेगि पधारो ॥
हम हैं पापी अधम अजाना । तव विनु कृपा काल धरि ताना ॥
देइ उपदेश प्रभु मोहि बचावो । पाप जालते वेगि छुडाओ ॥
तुमरी कृपा सुनहु हो साहब । अस विश्वास भवहि तरि जायब ॥
अब जनि लावहु बार गुसाईं । चलहु कृपा करि हंसन राई ॥

साखी—भक्तराज दाता अहो, कीजे मोह सनाथ ॥
मैं आधीन शरण तुव, चलो हमारे साथ ॥

चौपाई

बहुत अधीन तेहि जब देखा । चलन विचार कीन तब लेखा ॥
ततक्षण राजा हस्ति मँगावा । लै हमहीं तब हस्ती बैठावा ॥
गजते आसन अधरहिं धारा । चले राय तब वजे नगारा ॥
जबै राय मन्दिर लै गयऊ । तबै रानि कहँ तुरत बोलेऊ ॥
मानिक देइरानी चलि आयी । तासे राजा बात सुनाई ॥

राजा बीरसिंह वचन

हम रानी गुरु कीन कबीरा । आदि ब्रह्म हैं मतिके धीरा ॥
चरण धोय चरणामृत लीजे । सतगुरु दया करम सब छीजे ॥
तब सो रानी कहै सुनु बाता । ओढे चीर सुभग निज गाता ॥

रानी मानिकदेवी वचन

राजा विन्ती सुनो हमारा । समुझि बूझि गुरु करो भुवारा ॥
तुम राजा हौ बहुतै ज्ञानी । विनय हमार लेहु सुनि मानी ॥

राजा बीरसिंह वचन

इतना सुनत राय मुसुकाये । रानी ज्ञान कौन बहुराये ॥
तुम हौ नारि भक्ति कहँ मानौ । साहबकी गति नहिं तुम जानौ ॥
कर्ता आप देह धरि लीना । भक्तरूप होय दर्शन दीना ॥

हम अरु राय बैठे जेवनारा । आनि सो वार धरे दोय थारा ॥
कंचन थारी झारी पानी । कंचनवटुकी व्यंजन आनी ॥
अधरसु थार भुई ते न्यारा । महाप्रसाद राय चित धारा ॥
पाय प्रसाद राय जब लीन्हा । हम अरु राय बाहर पगु दीन्हा ॥
एकहि आसन बैठे दोई । नामदेव तब ठाढे होई ॥
नामदेव कह आसन दीन्हा । बहु सन्मान ताहिकर कीना ॥
नामदेव बैठे जब जायी । प्रश्न करन तिन चित तब लाई ॥

नामदेव वचन

कहहु कवीर मोहि समुझाई । कहँ तव गुरु शब्द कित पायी ॥
साहिव कौन सबनके पारा । मोसे कहहू वचन विचारा ॥
साहिव कौन जाहि तुम ध्याओ । कहँवा मुक्ति सुरति कित लाओ ॥
कौन भाँति यमसे जिव बाँचे । भिन्न भिन्न कहहु मोहि साँचे ॥
आप न समझो बोधो राजा । राम विना होय जीव अकाजा ॥
केतो पढे गुने अरु गावै । विनु हरि भक्ति पार नहिं पावे ॥

कवीर वचन

नामदेव भूले तुम जैसे । हमको मति जानहु तुम तैसे ॥
निर्गुण पुरुष आहि यक आना । अस्तुति ताकर वेद बखाना ॥
शिव ब्रह्मा नहि पावत पारा । और जीव है कौन विचारा ॥
छन्द—नित्य निगम अस्तुति अराधै हारि थके विरंच महेश हो ॥
सबै ऋषिदेव अस्तुति अराधई तेहि गावत सुरपति शेष हो ॥
जेहि गावत नारद शारदादि पार कोई ना लहे ॥
सो भेद सतगुरु गावही कोइ संत ज्ञानी चित गहे ॥
सोरठा—पूजहिं हरि हर देव, जड मूरति पूजत बहै ॥
निशिदिन लावत सेव, जो रक्षक भक्षक अहै ॥
नामदेव तब सुनत लजाने । नहिं पाये भेद मनहिं पछताने ॥
सुनि लजायके उठि सो गयऊ । राजा तबहिं कहत अस भयऊ ॥

राजा बीरसिंह वचन

तब राजा अस वचन उचारा । हम सँग साहिब चलो शिकारा ॥
आगे सेना सबही ठाढे । हस्ती घोडा बाहर काढे ॥
आगे चले निशान नगारा । सवा लक्ष सँग चले असवारा ॥
सवा लक्ष द्वय प्यादा दौरा । ठाडे भाँट करत बड शोरा ॥
हरनी स्वान लीन सँग चीता । कोइ सचान वाज कर लीता ॥
बहु दल हस्ती लीनी साथा । यहि विधि चले शिकार नरनाथा
भाँतिन भाँति खिलौना लीना । आयसु सकल लोक कहँ दीना ॥
आगे सेन चली सब साजा । हस्ती बैठि चले गुरु राजा ॥

कबीर वचन

जबही राजा चले रिंगायी । तब हम तासों बात सुनायी ॥
राजा संग मोहि लै जाओ । जीव एक मारन नहिं पाओ ॥
कोटिक यतन करो तुम राजा । जीवन मिलै होय तोहि लाजा ॥

राजा बीरसिंह वचन

ततक्षण राजा वचन सुनावें । मारन कहौ तोहि जाइ चुकावें ॥
तब हम कहा हमका कहहीं । यह नहिं धर्म मनुषकर अहहीं ॥
यह सुनि राजा घोड कुदावा । शेर शिकारी रूप बतावा ॥
एको जीव फन्द ना परई । क्रोध अग्नि घट भूपति जरई ॥
खेलत रमत दूर होय गयऊ । कितहुँ न भेंट जीवसे भयऊ ॥
फिरत अहेरे परे भुलाई । कतहुँ न ठौर नीर कहँ पाई ॥
विना नीर सो तडपे राजा । व्यापी तृषा बने नहिं काजा ॥

साखी—बहुत दूर राजा गये, पीछे फिरे भुआर ॥
कटक सकल सबही फिरे, व्याकुल सबै अपार ॥

ग्रंथकर्ता अथवा पश्चात् के लेखक महाशयकी बलिहारी है, शिकारके लिये इतनी तैयारी बतलायी है ।

पानी पानी सबहीं गोहरावैं । विनु पानी सबहीं मरि जावैं ॥
राजा कहै देखो सब जायी । बडो धूप जिव गयो ढरायी ॥
बहुत लोग जल ढूँढन लागे । बहुतक लोग भाग चले आगे ॥
ठावँ ठावँ सब गये भुलाई । हस्ती घोरा सबहिं नशायी ॥
राजा तब कहन अस लागा । संशय बहुत तेहि मन पागा ॥

राजा बीरसिंह वचन

आज अहेर एको नहिं आवा । एको जीव जन्तु नहिं पावा ॥
पाना कतहुँ न पावा भाई । कैसी कर्ता कीन गुसाई ॥
जो जनितों अस होइहैं बाता । करन अहेर न आइत ताता ॥
सेना हमार प्राण सम प्यारी । सोऊ मरत प्यासकी मारी ॥
अब कहां जाइ केहि विधि करिहैं। विना नीर सब इतही मरिहैं ॥
व्याकुलता बहुतै मन बाढी । बहुत करौं सकौं नहिं काढी ॥
तेहि अवसर चर बहुतक आये । खोजि थके नहिं जल कतहूँ पाये॥

साखी–सेना सकल मरत है, पानि पानि गोहराय ॥
छाँह छाँह सब ढूँढहीं, राजा रहे शिर नाय ॥

चौपाई

तेहि अवसर हम कीन विचारा । राय प्रतीति देखों यहि वारा ॥
बीरसिंहदेव बघेला राजा । देइ प्रतीति करों यहि काजा ॥
विना प्रतीति भक्ति नहिं होई । विना भक्ति जिव जाय विगोई ॥
विनु भक्ती गुरु नाहीं भेटे । विनु गुरु संशय नाहीं मेटे ॥
विनु मेटे हिय संशय भाई । काल दयाल कहु को विलगाई ॥
मन परतीति होय जेहि प्रानी । होय तुरत चौरासी हानी ॥
करे प्रतीति नर सो पावैं । पाइ श्रद्धा गुरु शरणहिं जावैं ॥
गुरुके वचन जाहि विश्वासा । फिर नहिं होय नरकमें बासा ॥

गुरु विनु मुक्ति न पावत कोई । चौरासी भय मिटत न लोई ॥
याते इम सब कीन्ह उपाई । राजा मन प्रतीति जेहि आई ॥
सरवर रच्यो अनूपम ठामा । बाग बगीचा औ लखरामा ॥
नाना भांति फूली फुलवागी । बहु मेवा लागे तेहि बारी ॥
नाना भांति फूल तहँ फूले । बास सुबास पाइ मन भूले ॥
नाना पक्षी करत कलोला । जहँ तहँ उड़ैं सो टोलम टोला ॥

छन्द–फूल नाना भांति फूले, केतकी जूही आदि है ॥
चम्पा चमेली मोगरा तहँ फूल दाख गुलाब है ॥
खम्भा कदली खडे तहाँ सेबती दवना बहु अहै ॥
कदम्ब जाही मालती चमेली बहुत सुखदा लहै ॥

सोरठा–नारियल अम्ब बदाम, कटहर बडहर पीसता ॥
बहुविधि कहे सुनाम, फल लागे चहु ओर सो ॥

चौपाई

ऐसो बाग बनी फुलवारी । बनी सो तुरत लगी नहिं वारी ॥
इहवाँ सैन रही कुम्हलायी । पानी पानी सबै गोहरायी ॥
तब हम कहे राय सुनु बाता । सत्य वचन भाखूं विख्याता ॥
उत्तर दिशा राय पगु धारो । थोडहि दूर जल बहे अपारो ॥
कहे मरत ससैन कुम्हलाई । सेना सकल चलो तहँ भाई ॥
यह सुनि राय ठाढ तब भयऊ । दोय कर जोरि सुविन्ती कियऊ॥

राजा वीरसिंह वचन

सतगुरु वचन कहो जनि ऐसो । पाहन ऊपर जल बह कैसो ॥
बार अनेक अहेरे आये । पर्वत पर जल नाहिं रहाये ॥
साहिब कछु जनि ऐसी बानी । हँसे लोग गुरु झूठ बखानी ॥

---

१ महल

दीवान वचन

राय दिवान कहे अस बाता । गुरुके वचन झूठ नहिं जाता ॥
कहत दिवान जोरि दोउ हाथा । गुरुके वचन सत्य धरु माथा ॥
का जानो को आहि गुसाईं । वेगि राय उठि टेके पाईं ॥

राजा वीरसिंह वचन

करो क्षमा सुनु हे गुरुराई । दास गुनाहहि देहु बहाई ॥
जस कहिहो सोई हम करिहैं । बचन तुम्हार सदा अनुसरिहैं ॥

कबीर वचन

तब हम कह्यो सुनो तुम राई । उत्तर दिशा तुम देहु रिगाई ॥
सैन सिपाइ ठाढे सब भयऊ । ततक्षण उत्तरदिशि चलि गयऊ ॥
राजा कुंजर दीन रिगाई । बाज निशान भेरि शहनाई ॥
चलत राय देखे चहुँ फेरा । राजा नजर दूर लगि फेरा ॥
दूरिते देखि परा सो ठावा । सुंदर बाग जहँ रहै शोभावा ॥
राजा देखि हरष मन भरेऊ । गुरुके चरण शीश तब धरेऊ ॥
सरवर निकट राय चलि जाई । देखत बाग रहै हरषाई ॥
अम्ब निम्ब औ कदलि घनेरा । दौना मरूआ लगे बहुतेरा ॥
भांति भांति तहँ मेवा लागा । भई प्रतीति राय मन जागा ॥
ऐसी शोभा बनी बनायी । देखत बने बरनि नहिं जायी ॥

राजा वीरसिंह वचन

छन्द-राय कुंजर उतारि ठाढे चरण सतगुरुके गहे ॥
हम कुटिल अधम अघकर्म राशी बचन पावन तुव अहे ॥
बालभाव सुभाव पितु हित बचन कबहिक टार जो ॥
पितु कण्ठ लावत आपने हिय तात और न आव सो ॥
सोरठा-जो पितु तामन लाव, तो बालक कासों कहै ॥
अधम उधारन नाव, दीन जानि जन तारिये ॥

साखी–सेन सरोवर देखिया, उत्तम वरन सो नीर ॥
गिरिवर पर सरवर रचे, धन धन सत्यकबीर ॥

चौपाई

करी प्रणाम राय गहि पाई। महाप्रसाद देहु गुरुराई ॥
कीन प्रसाद राजा कहँ दीना। राजा बहुत लोक मिलि लीना ॥
मेवा सकल लोक मिली पाये। बहुत भांति सब लीन धराये ॥
राजा प्रजा सब करे बडाई। काहि कहौं कछु कहत न जाई ॥
जैसा मेवा सत्यगुरु दीना। नहि मिल सो सुरलोकहिं चीना॥
खात खात सो जनम सिराई। नहि देख्यो अस मेवा भाई ॥
लेइ प्रसाद जल अचवन कीन्हा। दुख संताप भुलाय सो दीन्हा ॥
फिरन लगे सो बगीचा माहीं। नहि गर्मी नहिं शीत तहांहीं ॥
परिमल वास उडे चहुँ ओरा। बहुविधि पक्षी करे कलोरा ॥
ज्यों २ देखैं शैल बगीचे। त्यों २ मन आनन्द रस सींचे ॥

साखी–तृषा सबनकी बुझि गयी, ऐसा निर्मल नीर ॥
मेवा पाये सब मिली, तृपित भये शरीर ॥

कबीर वचन–चौपाई

तब मैं कह्यो सुनो हो राजा। सेना सकल भयो सब काजा ॥
होय असवार जाहु घर राई। जहँको जल तहँ देऊँ पठाई ॥
अब हम अपने लोक सिधायब। सत्य पुरुषका दर्शन पायब ॥
वहँकी शोभा अनन्त अपारा। शिव ब्रह्मा नहिं पावत पारा ॥
सुनत बचन राजा भय माना। जानि बिछोहै मनहि सँकाना ॥
हाथ जोरि विन्ती सो कीना। बहुत अधीन भयो परवीना ॥

राजा वीरसिंह

राजा चरण परे अकुलायी। अब सतगुरु जनि करहु दुरायी॥
अब स्वामी मन्दिर पगु दीजे। सकल जीव अपना कर लीजे ॥

अब मन जनि दोय करि जानो । हम सेवक तुम निज के मानो ॥
राय प्रतीति बहुत मन भाई । देखि प्रीति चलन फरमाई ॥
कुंजर राय भये असवारा । ले हमहीं पुनि तहाँ बैठारा ॥
सब सेनाकी भयी तैयारी । बजा निशान लगी नहिं बारी ॥
ततक्षण राय वचन कहि दीना । भरि भरि वर्तन सबही लीना ॥
छोडि सरोवर चले रिंगायी । क्षणहि सरोवर छार उडायी ॥
जब राजा पुनि पाछे निहारा । नहीं सरोवर उड़ैं तहँ छारा ॥
देखत राजा चकित न थोरा । मंम पद गहि चित्त बहु मोरा[1] ॥

साखी—धन्य कबीर सरोवर रची, दलहिं लीन जिवाय ॥
जहवाँको जल लायक, तहँको दीन पठाय ॥

चौपाई

आगे मोहि करि जबही लीन्हा । तब पीछे राजा पग दीन्हा ॥
चले राय महल पग दियऊ । सतगुरुको आगे करि लयऊ ॥
मन्दिर कञ्चन पलंग बिछावा । लै सतगुरुहि तहाँ बैठावा ॥
मानिक देइ रानी चली आयी । कहै राय रानी गहु पायी ॥

राजा बीरसिंह वचन रानी प्रति

चरण टेकि चरणामृत लीजै । गुरुकी दया अमृत रस पीजै ॥
लोक लाज तुम तजहु बडाई । गुरु कबीरकी शरणे आई ॥
गुरु कृपा होय दास पर जबहीं । काल त्रास ना व्यापे तबहीं ॥
ज्ञान भक्ति विन गुरू न पावै । काल फन्द स्वपने नहिं जावै ॥
सर्गुण भक्ति जगत बतलावे । निर्गुण भक्ति गुरूसे पावे ॥
बिन निर्गुण नहिं जीव छुटावे । बार बार यम फन्द परावे ॥

छन्द—गुरु कृपा होय जेहि दासपै तेहि काल त्रास न व्यापई ॥
गुरु भक्ति मुक्ति दाता भक्त त्राता छुटै जीव तहँ तापई ॥

---

१ मेरे पग पर पडकर मनके अभिमानको छोड दिया ॥

संशय हरन अघ कर्म दाहन है सदा हंस सहाय हो ॥
गुरु पद मते अपवर्ग वासा पुरुष लोक सिधाय हो ॥

चौपाई

सरवर एक रचे गुरु तहवाँ । पर्वत ऊपर जल नहिं जहवाँ ॥
बाग एक रच्यो तेहिके तीरा । निर्मल जल बहे त्रिविध समीरा ॥
नाना भांती तरु जेहि माहीं । सुर पादप तेहि देखि लजाहीं ॥
कदम्ब निम्ब अम्ब कचनारी । वडहल बेल बदाम सुपारी ॥
नाना रंग फुली फुलवारी । फल रस भरे झुकीं सब डारी ॥
रानीसे अस कहि सो राजा । विन्ती करन लगा जिवकाजा ॥

राजा बीरसिंह वचन

चरण टेकि राजा कहे बाता । भये दयाल दयानिधि दाता ॥
आवागमन रहित करु मोही । अब मैं खसम चरण गह्यो तोही ॥
मो कहँ अपना लोक दिखाओ । अब हम धरचो तुम्हारो पाओ ॥

कबीर वचन

सत्य प्रतीति जब राजहिं देखा । बहु विधि ताकी कीन परेखा ॥
श्रवण लागि निज नाम सुनाया । तुरतहि राजा लेइ सिधाया ॥
तबहीं दूत रोक गहि बाटा । छलन दूत बैठा तहँ नाटा ॥

दूत वचन

साहब तुम निर्मल असवारा । भुईं तरे कहवाँ पगु धारा ॥

कबीर वचन

तबै हम दूतनसे कहेऊ । यह जिव नाम खसम कर रहेऊ ॥
इतना सुनत दूत उठि भागा । देखत नृपति भयो अनुरागा ॥

राजा बीरसिंह वचन

धन्य सतगुरु धन्य भक्ति तुम्हारी। धन्य हंसा जेहि शब्द उचारी ॥
चले हम अरु राय तेहि ठौरा । जहँवा गम पावत नहिं चौरा ॥
पहुँचे मानसरोवर जायी । शोभा कामिनि बहुत सुहायी ॥

गुत्थ गुत्थ बैठी सब पाँती। एक रूप तहवाँ नहिं जाती॥
चार भानु कामिनिकी काँती। नहिं तहँ दिवस नहिं तहँ राती॥
राजा परे चरणतर आयी।

राजा बीरसिंह वचन

। दयावंत भल लोक दिखायी॥

कबीर वचन

देखिनि राय लोककी शोभा। चकित होय राजा मन लोभा॥
पुनि राजा कहन अस लागा। देखि लोक लोभ महँ पागा॥

राजा बीरसिंह वचन

अब जनि लेइ चलो संसारा। राखो लोक शरण मंझारा॥

कबीर वचन

तब हम कहा सुनु राय सुजाना। तुम राजा सत्यलोक भुलाना॥
राजा मानो कहा हमारा। चलो तहां जहँ राज तुम्हारा॥
बरबस बाहँ गही तब राई। ले राजा तहँवा बैठाई॥
छिन यक गहर तहां नहिं कियऊ। देह जायके जागृत भयऊ॥
दोय कर जोरि राय रहे ठाढे। बहुत प्रेम हरष मन बाढे॥

राजा बीरसिंह वचन

अब लगि साहब मैं नहिं जाना। सकल भक्त सम तुमको माना॥
अब हम जाना भेद तुम्हारा। सोई करहु जेहि हंस उबारा॥
राजा कहे कौन विधि करऊँ। सकल द्रव्य गुरु चरणे धरऊँ॥
जाते जीव कालते बांचे। सोई जतन करो गुरु सांचे॥

कबीर वचन

तब हम कहा होहु निर्वाना। राय मँगाव मिठाई पाना॥
चौका जुगति करो सब साजा। देउ सार पद मेंटो लाजा॥
नरियर धोती पान मँगाओ। महा कन्द ले तहाँ धराओ॥

कलश ले अरु पांचो बाती। साधु संत बैठे बहु भांती॥
कंचन झारी जल धरवाई। तापर खरचा सात चढाई॥
स्वेत चँदेवा स्वेत कनाता। सत्यपुर कह सुकृत बाता॥
सत्यलोक स्वेत है फूला। स्वेत सब देह जीवका मूला॥
स्वेत सिंहासन चौका चारी। सतगुरु बैठे आसन मारी॥
कदली पत्र मेवा संयूता। चन्दन श्वेत सुगन्ध बहूता॥
राजा सकल साज लइ आये। साधु संत बैठे सब आये॥
विधिपूर्वक शुभ चौक पुराया। हाथ जोरि ठाढा भयो राया॥
बोले साधु शब्द धुनि तबहीं। रानी राय चरण गहे जबहीं॥

राजा बीरसिंहका सतगुरुकी स्तुति करना

राजा लीन्ह नारियर हाथा। बहुत जीव तहँ भये सनाथा॥
करी दंडवत विन्ती कीना। हंस राज मोहि दर्शन दीना॥
धन्य भाग मम काह सराहू। हे प्रभु तुम हो सत्य मम नाहू॥
छन्द-आनन्द कन्द सर्वज्ञ रूप अखिल त्राता अविगतं॥
दास जानि दीजै अभय पद ज्ञानदाता अस्थितं॥
अविनाश सागर दयाके आगर धर्म कंटक मर्दनं॥
संशय खण्डन रिपुविहंडन अजर बीरा सुमिरावनं॥
सोरठा-अमर पुरी तुव बास, अमर स्वरूपी हंस जहँ॥
वास दीजिये दास, सुरतिवंत प्रभु कीजिये॥

कबीर वचन-चौपाई

करि चौका तब नरियर मोरा। करि आरती भयो पुनि भोरा॥
तिनका तोरि पान लिखि दयऊ। रानी राय अपन करि लयऊ॥
बहुतक जीव पान मम पाये। ताघट पुरुष नाम सात आये॥
जो कोइ हमारा बीरा पावे। बहुरि न योनी संकट आवे॥
बीरा पावे भवते छूटे। बिनु बीरा यम धरि २ लूटे॥

सत्य कहूँ सुनु धर्मदासा । बिनु बीरा पावे यम फांसा ॥
बीरा पाय राय भय भागा । सत्य ज्ञान हृदयमें जागा ॥
काल जाल तब सबै पराना । जब राजा पायो परवाना ॥
गद्गद कंठ हरष मन बाढा । विनती करे राजा होय ठाढा ॥
प्रेमाश्रु दोइ नयन ढरावे । प्रेम अधिकता वचन न आवे ॥

राजा बीरसिंहका स्तुति करना

करुणारमन सद्गुरु अभय मुक्तिधामी नाम हो ॥
पुलकि सादर प्रेम वश होय सुधरे सो जीवन काम हो ॥
भवसिन्धु अति विकराल दारुण तासु तत्त्व बुझायऊ ॥
अजर बीरा नाम दे मोहि पुरुष दरश करायऊ ॥
सोरठा–राय चरण गहे धाय, चलिये वहि लोकको ॥
जहवाँ हंस रहाय, जरा मरण जेहि घर नहीं ॥

कबीर वचन

आदि अन्त जब नहीं निवासा । तब नहिं दूसर हते अवासा ॥
तीन नाम राजा कहँ दीना । सकल जीव आपन करि लीना ॥
राय श्रवण जब नाम सुनायी । तब प्रतीति राया जिव आयी ॥
सत्यपुरुष सत्य है फूला । सत्य शब्द है जीवको मूला ॥
सत्य द्वीप सत्य है लोका । नहीं शोक जहँ सदा अशोका ॥
सत्यनाम जीव जो पावे । सोई जीव तेहि लोक समावे ॥
ऐसो नाम सुहेला भाई । सुनतहिं काल जाल नशि जाई ॥
सोई नाम राजा जो पाये । सत्य पुरुष दरशन चित लाये ॥
साखी–ऐसो नाम है खसमका, राय सुरति करि लीन ॥
हर्षित पहुँचे पुरुष घर, यमहिं चुनौती दीन ॥

चौपाई

जब हंसा यम छेके आयी । चलत बेर निज मना सुनायी ॥
मंडल अखण्ड ब्रह्मण्डे वासा । नीर पवन हंस रहिवासा ॥

सुकृत जहां आपे शठिहारा। रतन पलीता दीपक बारा ॥
फोडि ब्रह्मांड हंस घर जायी। दीप लेसि उजियार करायी ॥
हंस चले पुरुष दर्बारा। उघरे कूँची कुलुफ किवारा ॥
तहँ हंसन रोकत हैं दूता। देखत तहां बहुत अजगूता ॥

साखी—चले हंस सतलोकको, सुरति शब्द गहि डोर ॥
दोय पाँजीके बीचमें, बैठ काल तहँ चोर ॥

चौपाई

धरती माथ स्वर्गको नाका। तहाँ दोय पाँजी है बाँका ॥
तहवाँ दूत रहत है भाई। पुरुष नाम सुनि निकट न आई॥
युगदानी ठाढे बटपारा। मागे देहू जीव हमारा ॥
प्रथमहि है युगदानि जगाती। दूजे पाछे वज्ररघाती ॥
तीजे मृत्यु अंध बटपारा। परलम्बित चौथे सरदारा ॥
पँचयें दूत स्वयम्बर जानी। पांचो यम जिव छेदत आनी ॥
जा घट नाम धनीका होई। सो हंसा नहिं बूझे सोई ॥
नाम पान हृदये में गहई। सो हंसा यम सो निर्बहई ॥

साखी—नहिं धरती न अकाश जब, नहीं हाट अरु बाट ॥
तबका खसम कबीर है, दूसर यमकी हाट ॥

राजा बीरसिंह वचन—चौपाई

साहब शब्द सार मोहि दीजे। आपन करि प्रभु निजकै लीजे ॥
औघट घाट बाट कहि दीन्हा। पाँजी भेद सकल हम चीन्हा ॥
दयावंत विनती सुनु मोरी। हम पुरुषा परे नरक अघोरी ॥
महा कुटिल बड कामी रहिया। ताते नरक अघोर बड परिया॥
ते जिव तारो अरज गुसाई। विन्ती करों रंककी नाई ॥
भरमें जीवनको मुकताऊ। सो भाषों प्रभु शब्द प्रभाऊ ॥

कबीर वचन

अजर नाम चौका विस्तारो । जेहिते पुरुषा तरे तुम्हारो ॥
गाव तुम्हारे ब्राह्मणि जाती । धोती कीन्ही बहुते भांती ॥
बारी माहिं कपास लगायी । बहुत नेम से काति बनायी ॥
सो धोती तुम राजा लाऊ । पाछे चौका जुगुति बनाऊ ॥

राजा बीरसिंह वचन

तब राजा अस विन्ती कीन्हा । कैसे जान्यो को कहि दीन्हा ॥
ब्राह्मणि मंदिर नगर रहायी । ताकी सुधि हमहूँ नहिं पायी ॥

कबीर वचन

तब राजा आपे चलि गयऊ । साथ एक नेगीको लयऊ ॥
पूछत ब्राह्मणि राजा गयऊ । वही पुरीमें जाइ ठाढ रहेऊ ॥
राजा आवन सुनी जब सोई । आदर देन चली तब ओई ॥
माई पुत्री आगे चलि आई । दधि अछत औ लुटिया लाई ॥

ब्राह्मणी वचन

ब्राह्मणि कहे दोई कर जोरी । राजा सुनिये विन्ती मोरी ॥
भाग मोर हम दर्शन पावा । मैं बलिहारी यहाँ सिधावा ॥

राजा बीरसिंह वचन

राजा कह ब्राह्मणीसे बाता । तुव घर धोती एक रहाता ॥
सो धोती हमको देहू । गाँव ठौर तुम हमसे लेहू ॥
एतो वचन जो राखु हमारा । धोती देइ करु काज निवारा ॥

ब्राह्मणी वचन

ब्राह्मणी कहे सुनो हो राऊ । धोती सुधि तुहि कौन बताऊ ॥

राजा बीरसिंह वचन

हम घर सतगुरु कहि समझायी । धोती सुधि हम गुरुपे पायी ॥

कबीर वचन धर्मदास प्रति

वचन सुनत तेहि सुधि सो भूली । मन पछताय विनय मुख खोली ॥

ब्राह्मणी वचन

छन्द-माइ पुत्री करइ विन्ती धोती नाथ अनाथकी ॥
गाव मुल्क नहिं चाहीं मोहि धोती अहै जगन्नाथकी ॥
हम दीन हैं आधीन भिक्षुक शीस बरु मम लीजिये ॥
करि जोडि विन्ती मैं करूं जस चाहिये अब कीजिये ॥

कबीर वचन

सोरठा-राजा घरहिं सिधाइ, टेके चरण तहँ खसम कर ॥
कहे उत्तर समुझाय, धोती मांगे न दीनेऊ ॥

राजा वीरसिंह वचन-चौपाई

साहिब ब्राह्मणी लग हम गयऊ । धोती माँगत हम नहिं पयऊ ॥
कहे धोती मोहि देइ न जायी । जगन्नाथ हेतु धोती बनायी ॥
कहे बरु शीस लेहु तुम राजा । धोती देत होय व्रत अकाजा ॥

कबीर वचन

एती सुनते हम विहँसाये । राजा कहँ एक वचन सुनाये ॥
छरीदार दोउ देउ पठायी । ब्राह्मणी संग क्षेत्रहीं[1] जायी ॥
यहि प्रतीति लेहु तुम जाका । हम विन धोती लेइ को ताका ॥
राजा छडीदार पठवाये । ब्राह्मणी संग क्षेत्र चलि जाये ॥
नरियर लेइ ब्राह्मणी हाथा । करि अस्नान परसि जगन्नाथा ॥
लै धोती जब परस्यो जायी । तब धोती बाहर परि आयी ॥

ब्राह्मणी वचन

अब यह धोती काम न आयो । धोती फेरि कहो कस लायो ॥

जगन्नाथ वचन

जाके व्रत तुम काति बनायी । सो घर बैठे माँगि पठायी ॥
अब तुम अपने घर लै जाहू । लै धोती दै डालो काहू ॥

१ जगन्नाथपुरीको ।

ब्राह्मणी वचन

तबै ब्राह्मणी कहै कर जोरी । ठाकुर सुनिये विन्ती मोरी ॥
राय बीरसिंह मो घर आये । धोती माँगि कबीर पठाये ॥
उनके मांगे मैं नहिं दीना । हम कहि जगन्नाथ व्रत कीना ॥
तब राजा अपने घर गयऊ । हम ले धोती इहां सिधयऊ ॥

जगन्नाथ वचन

जगन्नाथ तब कहि समझायो । तुम अपनी भल भाँति नशायो॥
उनके मांगे धोती देती । आपन जनम सुफल कर लेती ॥

कबीर वचन

जगन्नाथ जस कहि समझायी । छडीदार तब लिये अथांयी ॥
छडीदार अरु ब्राह्मणी आये । जहाँ राय अरु हम बैठाये ॥
ब्राह्मणी ले धोती धर दीनी । दोय कर जोरि सो विन्ती कीनी॥

ब्राह्मणी वचन

हम अजान कछु जान न जायी । धोती नहिं दीनी मम पायी ॥

छडीदार वचन

छडीदार तब शीस नवाये । राजासे उठि विन्ती लाये ॥
जगन्नाथ धोती नहिं लीना । मंडप बाहर धोती कीना ॥
जगन्नाथ अस वचन सुनावा । यह धोती हम काम न आवा ॥
जब राजा से मांग पठाई । कस ना धोती दीनेउ माई ॥
जब हम मांगा तब ना दियऊ । अब कस देन यहाँ चलि अयऊ॥

कबीर वचन

छडीदार उत्तर जब कहेऊ । तब मम चरण राय शिर लयऊ ॥

राजा बीरसिंह वचन

सांचे सद्गुरु हैं तुव बचना । सत्य लोककी सत्य है रचना ॥
अब मोहि धनी सिखापन दीजे । हम पुरुषा आपन करि लीजे ॥
जाते अजर अमर पद पाई । सोई विधि तुम करो गुसांई ॥

कबीर वचन

जब हम राजहिं दीन बुझाई । अजर आरती साज मँगाई ॥
वीरसिंहराय तब साज मंगावा । बहुत भांति पकवान बनावा ॥
मेवा भांति भांति मँगवायी । भांतिन भांति सुगन्ध धरायी ॥
सकल सुगन्ध खोजकर आने । फूलन माला बहुत बखाने ॥
चौका विस्तार थार मँगवायी । कोरा वासन आनि धरायी ॥
ततक्षन मन्दिर नये सँवारी । नये चन्दोवा कंचन झारी ॥
पाँचो बाती कलस धरायी । ततछिन सकल साज बनवायी ॥
अगर चौका तब करि दीना । मन प्रतीति राजा गहि लीना ॥
तब राजा अस्तुति अनुसारा । बहुविधि विन्ती करे प्रचारा ॥
छन्द–अजरनामको कीन्ह चौका दिवस चारि विराजिके ॥
अजर सुमिरन कीन्ह ततक्षण पुरुष प्रकटे आनिके ॥
धनी जब ठाढे भये नृप दर्शन तबही लीन हो ॥
धाय राजा चरण गहे प्रभु अधम पावन कीन हो ॥

राजावीरसिंह वचन

सोरठा–तुव चरण बलिहार, पाछिल पुरुषा मम तरे ॥
धनि २ धनी हमार, कागाते हंसा किये ॥

कबीर वचन-चौपाई

यहि विधि प्राणी चौका करई । कुलमाहीं बहु हंसा तरई ॥
दिवस चारि चौका विस्तारे । तहँवा आप खसम पगु धारे ॥
निशि वासर सुमिरे निज नामा । छूटे पिण्ड चले निज धामा ॥
रहिहो राजा सुरति लगायी । यकटक ध्यान शब्द मन लायी ॥
शशि चकोर सम गुरु पद लागे । छूटे जनम मरण भ्रम भागे ॥
यही सिखापन राजहिं दीना । मन वच करम राय शिर लीना ॥

राजा वीरसिंह वचन

राजा रहे दोउ कर जोरी । साहब सुनियो विन्ती मोरी ॥

पुत्र व्याह कहँ आयसु पाऊँ। तौ साहब हम व्याह कराऊँ ॥
महा कठिन दोनो दिशि धारा। पुत्र काज हम तहाँ विचारा ॥

कबीर वचन

आज्ञा लेइ राय दल साजा। साजि कटक बहु ठाढ भे राजा ॥
तब मम चरण शीस नृप लाये। करन विनय टेके गहि पाये ॥

राजा बीरसिंह वचन

विन्ती कीन भरि करुणा। नहिं जानू होय धोखे मरणा ॥
साहब॰रहिहो सदा सहाई। देह विदेह हंस मुकताई ॥

कबीर वचन

तब हम हाथ सीस तेहि दीना। करुणा कहा राय तुम कीना ॥
तुम तौ राय हंस मम आहू। दीन आशीष निडर होय जाहू ॥
चरण टेकि नृप भये असवारा। चले कटक जब पेलि नकारा ॥
बाजत बंब चले नृप जबहीं। भांति भांति बाजा बाजे तबहीं ॥
साजि बरात राजा चलि गयऊ। लीला एक रचत हम भयऊ ॥
तब हम तन तजि भये न्यारी। रानी चिता रचन मन धारी ॥
रानी बहुत शोच मन कीन्हा। राजा गये गुरू अस लीन्हा ॥
विजलीखाँ सुनि आतुर धाये। चिता माँझते मुरदा लाये ॥
गोर बनाय उन कीन निवाजा। कीन कटोरी बहुविधि साजा ॥

बिजलीखां वचन

कहत पठान पीर भल लाये। ना तो रानी देत जराये ॥

कबीर वचन

यहवाँ रानी हिय अकुलाती। बीरसिंह देवको भेजी पाती ॥

छन्द–भेजी रानी रायको पाती सद्गुरु गये लोक सो ॥
नृप जात गुरु तन तजे मोहि देख भो बड शोक सो ॥
चिता रची मुर्दा धरी तब आय विजलीखान हो ॥
जोर करि करि हमसो ले गये ले गाडि गोरहिं दीन हो ॥

सोरठा—बेगि नृपति चलि आव, सतगुरु काया लीजिये ॥
हँसे लोक बड चाव, नृप गुरु कहिके म्लेच्छ सब ॥

कबीर वचन

पाती गही देखु जब राया । महाक्रोध आतुर चलि आया ॥
डारत घृतहि हुताशन जैसे । रोम रोम पावक वरु तैसे ॥
चले सकल दल छोडि बराता । व्याकुल राय कहे तब बाता ॥

राजा वीरसिंह वचन

अरे दिवान सुनो मतिवाना । वेगि चलौ गुरु कैसे ठाना ॥
बिजुली मारहु शत्रु हमारा । करी विचार बैठ हंकारा ॥

कबीर वचन

आतुर चले बाजि गज धाये । कूहुक बाण गहि लीन चढाये ॥
खड्गतुपक औ सेल कटारा । धनुष बान करि वेगि सवाँरी ॥
कुहुक बाण हाथ करि लीना । अगनित बाजा बाजत दीना ॥
ठाढा भांट अनेक पुकारे । गुण वरने चारन बहु पारे ॥
भेजे राय पाँति तेहि बारा । खोदि कबर गुरु देहु हमारा ॥
नहि तो विजली बचै न पाई । एक एकको मारि गिराई ॥
आई पाँति तब कहे पठाना । सुनि विजली गहि लीन कमाना ॥

विजलीखाँ वचन

हिन्दू काफिर पीर न पावे । जान माल जो सब गलि जावे ॥

कबीर वचन

विजली खान सेना ले ठाढा । आपुन दीस बहुत बड गाढा ॥
पीर आपना हम नहिं देते । विरसिंह राय करेगा केते ॥
तब हम रानी दर्शन दीना । मानिक दे चरणामृत लीना ॥
छोटी है कमलापति रानी । सो मम चरण पखारे आनी ॥
रानी राय कहा मोहि चीन्हा । मानुष विधि तुम हमकूँ कीना ॥
हाड मांस हमरे नहिं काया । काहे दोनों रार बढाया ॥

राय पठान दोनों गुरु भाई। काहे दोनों करें लड़ाई॥
पाती भेजहु राय पठाना। खोदि कबर देखो मतिवाना॥
गोर माँहि मुरदा जो होई। राय पठान लड़ो तुम दोई॥
जो मुर्दा तुम ढूँढ न पाओ। काहेको तुम रार बढ़ाओ॥
मथुरा रतना कदोइन नारी। तिन बड प्रीति हमारी धारी॥
सात दिवस लगि अन्न न पावा। हमरे दरस को सुरति लगावा॥
ताको दर्शन दिये हम जाई। काहे मरो दोऊ गुरु भाई॥
अन्तर्धान तब हम होइ गयऊ। तत्क्षण रतना दर्शन पयऊ॥
यहँ राना पाती पठवायी। राय देखि अचरज मन लायी॥
गये बांचि जहँ रहे पठाना। सुनत पठान अचम्भो माना॥
सुनत सलाह कीन पुनि दोई। राय पठान आये सब कोई॥
आइ पठान गोर खुदवाई। देखो तहां देह नहिं पाई॥
भये अधीन देख सब लोगा। करुणा करहिं सकल भयो सोगा॥
छन्द–भये सुकृत उदास सबही रंक निधि जैसे हर्यो॥
धन्य गुरु कहा बंदना तब चीन्ह गुरु मम ना पर्यो॥
अमी पाय गुरु पंकज गहेसो काग होय मराल हो॥
पाय अस्थिर सदन निर्बंध हंस होय बड भाग हो॥
अखंड धर्म विराज सतगुरु जहाँ काल नहिं पहुँच है॥
असंख्य रवि अरु कोटि दामिनि अग्र शोभा तहाँ रहैं॥
दयासागर असहिं विराजत पुष्प सज्या सोहहीं॥
करहिं कलोहल हंस सबही पुरुष दरश विलोकहीं॥
सोरठा–षोडश रवि प्रभाव, चकोर उडगन पोहिया॥
श्रवण आहि रवि भाव, अमृत फल हंसा चुगे॥

चौपाई

गोर बनाय चले सब कोई। हिन्दू मुसलमान पुनि दोई॥
नाना भाँति करत सब सोभा। कंठी तिलक देखि सब लोभा॥

धन्य गाय धन्य पठाना । ऐसे गुरु पाये मतिवाना ॥
ऐसे बहुत दिन गये बिताई । रानी केरि अवधि नियराई ॥
सुन्दरदेइ रानी कर नाऊ । पाये शब्द न प्रीति लगाऊ ॥
शब्द पाइ गुरु प्रीति न लागी । विना प्रीति सतभक्ति न जागी ॥
पाय शब्द नहिं कीन कमाई । ताते यम बहुते दुख लाई ॥
चारि दूत हरि तबहि बुलावा । तासे सकल मता समुझावा ॥
नगर गहो जाय नृप रानी । तहँवा जाय वेगि तुम आनी ॥
तब यमदूत गहि राजा गयऊ । जाय ठाढ मन्दिरमें भयऊ ॥
घट घट यम देखा व्योहारा । काया पैठि सो कीन विचारा ॥
तब रानीके वेदन भयऊ । व्याकुल करी दूत चित रहऊ ॥
राजा बूझे रानी बाता । कहे रानी मोहि नाहि सुहाना ॥
एक बात सुनिये मम राई । साधु संत सब देहु बुलाई ॥
राजा सकल साधु बुलवाये । सतगुरु भक्ति करो चित लाये ॥
बाढ विथा रानीकी काया । ततक्षिन आप पुरुष होय आया ॥
तबहीं यम जिव घेरे आयी । अरध अरध स्वासा चलि धायी ॥
भागि हंस त्रिकुटी में गयऊ । तहवाँ यम जिव घेरे लयऊ ॥
चारो जीव यम घेरे लायी । काहे बल तुम बचिहो जायी ॥
चलो हंस हरि कीन बुलाऊ । तब हंसा यक वचन सुनाऊ ॥
यहवाँ कस आये बटपारा । हमरे हैं समरथ रखवारा ॥
हम घर गुरू खसम यक आही । सो मोहि नाम दीन बतलाही ॥
धूत भूत यम तोहि चिन्हाई । आज्ञा देइ खसम घर जाई ॥
जे साहेब मोहि नाम सुनाया । सो आवे गुरु जाय लिवाया ॥

साखी–तबही यम अस बोलिया, कहँ है धनी तुम्हार ॥
ताकहँ वेगि बुलावहू, नहिं चलु हरि दरबार ॥

चौपाई

तब जिव यमसे कहवे लीना । साहब एक वचन कहि दीना ॥
निगमके पार अगमके आगे । सो सतगुरु मम श्रवणहि लागे ॥
धरनि अकाशते नगर निनारा । तहाँ विराजे धनी हमारा ॥
जहँ नहिं चन्द सूरकी कांती । तहाँ नहीं दिवस अरु राती ॥
अगम शब्द जब भाषे नाऊ । तब यम जीव निकट नहिं आऊ॥
चलो जीव हरि ब्रह्मा पासे । तुम्हरे धनी मोहि ना आसे ॥
तबहीं हंसा कीन पुकारा । कहँवा हो तुम धनी हमारा ॥
मोसे यम कीनी बरि याई । कस नहिं राखहु सद्गुरु आई॥

छन्द–कीन जीव पुकार ततक्षण खसम बेगहिं आइये ॥
बेग लागु गुहार सतगुरु हंस लोक पठाइये ॥
काहि करों पुकार साहब मातु पिता नहिं कोइ जना ॥
करि ढिठाई मारि जीव यम झूठ जग महँ बन्धना ॥

सोरठा–लगे खसम गुहार, घाट घाट यम छेकिया ॥
कठिन परी यमधार, अति व्याकुल अकुलाय जिव ॥

चौपाई

तब सतगुरुका आसन डोला । काल दग्ध जिव व्याकुल बोला॥
आइ खसम तब दर्शन दियऊ । चरण बन्दि हंसा तब लियऊ ॥
साहब देखि भगा यमराई । अति आतुर होय हरि पै जाई ॥

हरिहर वचन

हरिहर बूझे यमसे बाता । कस नहिं कियो जीवकी घाता ॥

दूत वचन

कहे यम स्वामी विन्ती मोरी । हम जिव छेकि कीन तेहि सोरी ॥
वह सुमिरे सतसुकृत नाऊ । सुनत पुकार धनी चलि आऊ ॥
आवत धनी भयो उजियारा । हम भागे चारो बटपारा ॥

कबीर वचन

वहाँ दूत पहुँचे हरि पासा। यहाँ जीव कहत सुखवासा॥

जीव वचन

विनय जीव सुनु बन्दी छोरा। हम कहँ कष्ट दीन बड चोरा॥
नाम तुम्हार बूझे यमराया। कहा नाम तब बचने पाया॥
तब हम ततछिन कीन पुकारा। वेगहि आओ खसम हमारा॥

ज्ञानी वचन

सुनो जीव नहिं शब्दहिं ध्यावा। राजा गुरु मानुष विसरावा॥
गहे नाम अरु करे कमाई। तब यम दूत निकट न आई॥

जीव वचन

जेहि ते हंसको घर पठवायी। तौन नाम मोहि भाषि सुनायी॥
जाते जीव अमर घर जावे। दूत भूत यम खबर न पावे॥

कबीर वचन

साखी-गुप्त नाम मुख भाखिया, अकह अमर निज नाम॥
अमर कृपा निधि जीव कूँ, पहुँचे जीव निज ठाम॥

चौपाई

पहुँचे जीव खसम घर जबहीं। सुख आनन्द भये बड तबहीं॥
कंचन कलस बरत तहँ बाती। आरति करे हंस बहु भांती॥
देखत जीव हंस उजियारा। अंग अंग शोभा चमकारा॥
देख द्वीप शोभा बहु भाँती। रविशशि मनि लागे जिमि पाँती॥
ता मध्ये जिमि लाल जडाई। बीच बीच चुनि ले बैठाई॥
मोतीसर झालरि बहु पोहा। देखत हंस रहे तहँ मोहा॥
तबहिं पुरुष ज्ञानी हँकराई। कौन वचन तुम जीव सुनाई॥
कौन वचन तुम जीवन दीना। जाते जीव अटक यम कीना॥

ज्ञानी वचन

दोय कर जोरि कहे शठिहारा। मुक्ति वचन जिव डार बिसारा॥
विसरे नाम छेके यम आयी। भाषि नाम यम जीव छुडायी॥

पुरुष वचन

आज्ञा जीव पुरुष हंकराई। कहो जीव कस कीन कमाई॥
कैसे पहुँचे लोक हमारे। सत्य वचन सो कहो विचारे॥

हंस वचन

मस्तक नाय हंस कर जोरी। अमर पुरुष विन्ती यक मोरी॥
हे साहब हम कछू न चीन्हा। गुरुको वचन मानि शिर लीन्हा॥
जा दिन गुरु मोहिं दीनेउ पाना। तब मैं जानवो पद निर्बाना॥
साधु गुरू मैं जान्यो एका। काम क्रोध छोडचो टेका॥
साधु संत कर बन्देउ पायो। विसरचो नाम गुरु मोहि सुनायो॥
अब पुरी यम छेकेउ आयी। पल यक दुख मोहिं तहाँ दिखायी॥

साखी–खसम आइ दर्शन दिये, दीना नाम सुनाइ॥
तब आये हम लोककूँ, यम शिर पाँव चढाइ॥

चौपाई

जो नहिं नाम मुक्तिको पावे। माला डारि जगत बौरावे॥
सुने नाम अरु करे कमाई। छाडे पाखण्ड अरु अधमाई॥
निर्मल काया होय संसारा। जाकहँ दया करे करतारा॥
नाम कबीर जपे बड भागी। उन मन ले गुरुचरनन लागी॥
जापर दया जो होय तुम्हारी। ताकहँ कहा करहि बटपारी॥
पुरुष दया जब होय सहायी। सत्यलोकमों जाय समायी॥

छन्द–पुरुष दाया कीन ततछिन अटल काया तब भयो॥
पुहुप दीप निवास कीना सुमन सज्या आनन्दमयो॥

हंसन शिर क्षत्र राजे अमृत फल आनन्द घना ॥
रूप षोडश भानु हंसा कोटि शसिहिं अति बना ॥

सोरठा–धाम जो पाय अमोल, हंसा सुख तहँ विलसही ॥
द्वीपहिं द्वीप कलोल, जरा मरन भ्रम मेटिया ॥

इति श्रीबोधसागरे कबीरधर्मदाससंवादे बीरसिंहबोधवर्णनो
नाम तृतीयस्तरंगः ॥

ग्रन्थ बीरसिंहबोध समाप्त ।

सत्यकबीराय नमः

यस्योपदेशमाराध्य नरो मोक्षमवाप्नुयात् ।
तं कबीरमहं वन्दे मनोवाक्कायकर्मभिः ॥

अथ श्रीबोधसागरे

चतुर्थस्तरंगः

श्रीग्रन्थ भोपालबोध प्रारंभः

धर्मदासवचन चौपाई

धर्मदास कहे बन्दी छोरा । कैसे जीवन मारत चोरा ॥
केहि विधि जीवन मारत आई । साहिब सो मोहि भाष सुनायी॥
कारण कौन मारत यम जीवा । मारन काल कौन है नीवा ॥

सतगुरु वचन

सद्गुरु कहे अंश सुनु वानी । महा कालकी कहौं निशानी ॥
धर्मराय आज्ञा जब करई । तबहीं मीच पृथ्वी पग धरई ॥

धर्मराय वचन

भयी सृष्टि बहुत अधिकाई । पृथ्वी भार न जाय सहाई ॥
ताते मीच पृथ्वी तुम जाऊ । जीवन धरि हम पर ले आऊ ॥
आनो जीव हमारे पासा । जाहु मीच पृथ्वी करु वासा ॥
पवनरूप घट जाइ समाओ । जीवन जाय बाँधि ले आओ ॥
खांसी जूडी ताप तिजारी । काम क्रोध होव रोग अपारी ॥

लोभ मोह भ्रम फाँस अपारा । यह नहिं मर्म लखै संसारा ॥
यहि फन्दा जग सबहिं फन्दाओ । विरले हंस सुकृत बन्दाओ ॥

साखी-यहि विधि जगमें जाइके, जीव लाउ हम पास ॥
फन्दा डारहु जीव पै, होहु मीच दुख रास ॥

चौपाई

यहि विधि काल जब आज्ञा दीना । चले यमदूत सब साज सजीना ॥
उत पुरुष आज्ञा मोहि दीन्हा । जीव मुक्तावन कहँ पठावन लीन्हा
कहे पुरुष सुनु ज्ञानी बाता । काल करे अब जीवन घाता ॥
घात करी सो भक्षण करिहै । बहुरि जीव भौसागर परि है ॥
काल दुष्ट बहु जीव सतावै । सारशब्द बिनु मोहि न पावै ॥
याते जगमहँ अब तुम आओ । जीवहिं चिताय लोककहँ लाओ ॥
आज्ञा मोरि लेहु सहिदाना । जाइ जगत जीव लाओ निदाना ॥

साखी-सुकृत जाहु संसार में, उल्टी राह चलाउ ॥
शब्दसार जीवन कहो, काल हंस मुक्ताउ ॥

चौपाई

पुरुष आज्ञा हम शिर मानी । करि प्रणाम तब जगत पयानी ॥
देश जलंधर राय भोपाला । गयउ तहां जिन्दाके हाला ॥
जाई पौरिमें ठाढ रहायी । कह्यो पौरिया बहुत चितायी ॥
राजहिं लाउ हमारे पासा । दर्शन करे कर्म नृप नासा ॥
लागे कुंजी कुलुफ किवाँरा । बहुत लोग बैठे रुठिहारा ॥
कोइ कहै न्याय जिन्द चाहै । कोइ कहै बटपार यह आहै ॥
कोई कहै मारि यहि खेदो । निर्गुण भेद तिन्हे नहिं भेदो ॥
चारि पहर तब रैन बितावा । भयो भिनसार भोर हो आवा ॥
तब हम चरित दिखावन लागे । फूटि कपाट भये दोइ भागे ॥

सबै कँगूरा भुइ खसि परेऊ । ज्ञानी चली राय पहँ गयऊ ॥

साखी–चकित सकल पौरिय, पाछे लगि सब धाय ॥
जहाँ राय भोपाल हैं, तहाँ पोरिया जाय ॥

चौपाई

करत गोहार पौरिया जाई । मार मार बहुत हकराई ॥
राय भोपाल बैठि जहँ राजे । गये पौरिया तहँ सब भाजे ॥
कीन्ह सलाम दोई कर जोरी । यह जिन्दा बटपार बडचोरी ॥
कहँ पौरिया पौर उघारो । तुरत बुलाओ राय यहि बारो ॥
जिन्दा वचन नहीं हम माना । बीत रैन भये भोर सुजाना ॥
मंत्र एक जिन्दा तब करिया । फूट कपाट कँगूरा गिरिया ॥
तब जिन्दा आयो महराजा । हम आये तेहि पीछे भाजा ॥
ना जानौं कौन यह आही । होय बटपार धसा घर माहीं ॥

साखी–हो राजा महराज मम, कह्यो सत्य हम बात ॥
तत्क्षण जिन्दा मारहू, नातो सब पर घात ॥

चौपाई

सुनो पौरिया कहे अस राजा । सुनिये वेद् करौं तब काजा ॥
विप्र बुलाय सुनो मतिमाना । करिये तबै विवेक सुजाना ॥
आज्ञा वेद होय तब मारा । नहिं तो जिन्दा कहा बिगारा ॥
एतिक वचन राय मुख बोला । साहब आसन तबहीं डोला ॥
तत्क्षण हम अस लीला कीन्हा । रायमहल सोने करि दीन्हा ॥
कंचन कपाट रतनकी पांती । विपरीत बने खम्भ बहु भांती ॥
बने कंगूरा रतन रसाला । चकित राजा भये भोपाला ॥

साखी–भयो विवेक मन रायके, देखत मन पतियाय ॥
कौन पुरुष तुम समरथ, मोहँ कहँ दरश दिखाय ॥

ज्ञानीवचन चौपाई

सत्य पुरुषके हम शठिहारा । जीवन काज आये संसारा ॥
पुरुष लोक सत्य परवाना । ताका मरम कोई नहिं जाना ॥
साखी–हो राजा भोपाल सुनु, चीन्हों यमका जाल ॥
शब्द हमारा परखहु, नातो पैहो काल ॥

चौपाई

छोडहु राम नाम हित जाना । सद्गुरु वचन गहो मतिमाना ॥
अलख निरञ्जन छाडो देवा । भ्रम तजि करु सतगुरुकी सेवा ॥
सुमता होय करो दृढ करनी । पहुँचो लोक पुरुषकी शरनी ॥
आवागमन रहित होय जाऊँ । जो प्राणी सत्यगुरु कहँ पाऊँ ॥
पुरुष अवाज जाव उबराई । ताते दर्शन दीन्ह तोहि भाई ॥
छन्द–करहु राजा भक्ति दृढ होय छोडु राजा गुमान रे ॥
नारि पुरुष पुत्र पुत्री लेहु हिलिमिलि पान रे ॥
पुरुष नाम ले करहु आरती जीव तृण तुराय के ॥
पुरुष अंक ले पाव बीरा काल गहे नहिं आयके ॥

राजा भोपाल वचन चौपाई

तब राजा बन्दे दोनों पाई । करगहि महलन लैं जाई ॥
धन्य भाग मोहि दर्शन दीना । अधमजीव आपनकरि लीना ॥
कुटिल कठोर अधम अघ पापी । दर्शन दीन छुटे त्रयतापी ॥
महामोह तम पुञ्ज अपारा । वचन तुम्हार कीन रविधारा ॥
उठो सुधर्मा मन चित लायी । साहब चरण पखारहु आयी ॥
छन्द–गुरु ब्रह्म रूप प्रकाश अघहर पुंज तमहिं विदारनं ॥
मुक्ति दाता अखिल ज्ञाता कोटरवि छवि वारणं ॥
सोई रूप धरि जगत प्रगट होय जिन दीन पतितन दुख हरे ॥
भवसिन्धु ताप बुझाय शीतल जीव गहि आपन करे ॥

सोरठा–निज मन मुकुर सुधार, गुरु पदपंकज उर धारिए ॥
मिटे सकल अँधियार, अस्थिर घर तब पाइए ॥

चौपाई

राजा आज्ञा रानी मानी । साहब चरण पखारे आनी ॥
कञ्चन झारी ले जल धार्यी । साहब चरण पखारी आयी ॥
राजा रानी चरन धुवाये । अँचरन रानी तबहि पुछाये ॥
चरण हिये मस्थे पर लायी । चरणामृत सबही मिलि पायी ॥
कीन्ह दण्डवत पलपल रानी । साहब दरस दीन्ह भल आनी ॥

ज्ञानी वचन

साखी–हमहिं जनि भार चढ़ावहू, हमरे नाम कबीर ।
अगम निगम वह पुरुष है, जे गहि लागो तीर ॥

रानी वचन–चौपाई

सुनिके रानी वचन पतियानी । तब साहब सों बिनती ठानी ॥
और पुरुष जानो नहिं नीका । तुम सतपुरुष आहु यहि जीका ॥
तुमहि पुरुष आहु दृढ़ जानी । और पुरुष नाहीं मन मानी ॥
रानी कहै सुनो महराजा । साहिब आये तुमरे काजा ॥
रानी कहै बेगि गहु चरना । काल अजापी है निज मरना ॥
आये पुरुष हमारे पासा । हमरे मनकी पूजी आसा ॥

ज्ञानी वचन

सुनहु राय रानी निज वचना । यह तो जाल कालकी रचना ॥
मेटहु काम क्रोध हंकारा । माया मोह तजौ संसारा ॥
ज्ञान हेतु दृढ करनी करई । आवागमन का पूग परई ॥
तजि संसार शब्द कहँ ध्याओ । गुरुगम पुरुष नाम चितलाओ ॥

साखी–ना फिर जन्मे जोइनि ना, स्वर्ग नर्क को जाय ॥
सो हंसा रहित भये, अजर अमर घर पाय ॥

यह तो माया जाल है, कठिन बीर मतवाल ॥
जीव शब्द न मानई, यक दिन खैहे काल ॥
मोह नदी विकराल है, कोई न उतारे पार ॥
सतगुरु केवट साथ ले, हंस होय यम न्यार ॥

चौपाई

कोटि जुहार होत नित तोहीं । कैसे के लौ लावहु मोहीं ॥
कैसे छाडो राज गुमाना ।किमि छोडो पाखण्ड अभिमाना॥
कैसे छाडहु राज बडाई । कैसे छाडहु सुख चतुराई ॥
बैठि सभा बोलहु हँसि बाता । कुँवर पचास संग निशि राता ॥
बैठि महल महँ खेलहु सारी । कामिनि के संग सदा बहारी ॥
छुटे न नाति कुटुम्ब की आशा । छुटे न कञ्चन भोग विलासा ॥

साखी-यह सुख कैसे छोडिहो, हम तो कथे निरास ॥
सैन चैन जब छोडहु, चलहु पुरुषके पास ॥

राजा गोपाल वचन

कहे राय सुनिये गुरुदेवा । मोकहँ राखु चरन की सेवा ॥
मस्तक मोर दीजिये हाथा । हम अघ करमी होयँ सनाथा ॥
छोडो महस बीस मैं हाथी । अब मैं चलौं तुम्हारे साथी ॥
अब हम दौलत छाडँ तुरंगा । छोडों सकल कामिनी संगा ॥
देह गर्व औ राज गुमाना । छोड़ेउँ सकल भक्ति मनमाना ॥
जब तुम अमृत वचन पुकारा । तेहि क्षण छूटा सकल विकारा ॥

छन्द-दया निधान करुणा विलोकहु महादारुण दुःख दहे ॥
मैं अधम जीव अघोर अकरमी पतित पावन पद गहे॥
तुम ज्ञान घन विज्ञान आगर धर्म कंटक मर्दनं ॥
तुव नाम अमोल समरथ करहु दाया निर्धनं ॥

सोरठा–अविरल भक्ति तुम्हार, पूरे भागते पाइये।
विनवों बारम्बार, पुरुष दरश करवावहू ॥

ज्ञानी वचन–चौपाई

नाम पदारथ देउँ मैं तोहीं। तैं राजा चीन्हा दृढ मोहीं॥
पुरुष नाम एक यज्ञ कराओं। जेहि नाम ते हंस बचाओं॥
जरी केर एक चन्दोवा तानो। कञ्चन केर सिंहासन आनो॥
दिवालगिरी लागे जरकेरा। मोतिन झालर लागु घनेरा॥
मोतिन ले भर थार धराऊँ। तापर आरति जोति लसाऊँ॥
कंचन कलसा पाँचो बाती। झारीजल हीर ले पाती॥
पूंगी फल औ स्वेत मिठाई। चन्दन पान धरो तहँ लाई॥
कदलीफल उत्तम तहँ जानो। मेवा अष्ट युक्त प्रमानो॥
कदलीपत्र कपूर सुगन्धा। आमपत्र ले चहु दिशि बन्धा॥
सात हाथ वस्तर ले स्वेता। पुष्प गुलाब कहौ मरु केना॥
नौ रतन ले थार धरायो। मनि मानिकके मध्य रहायो॥
यह सब विधि जब दीनबतायी। राजा सबही लीन सजायी॥
चौका बैठे सतगुरु जबहीं। रानी राय चरण गहे तबहीं॥
सवा लाख दीपक तहँ बारी। बहु आनन्द शब्द विस्तारी॥
सब मिलि हाथ नारियल लीन्हा। आगे धरा दण्डवत कीन्हा॥
राजा तृण धरे मुख माँहीं। भये अधीन बांधि कर आहीं॥

राजा चौपाल वचन

तुम दीननके आहु दयाला। कृपा कीन्ह मोहि प्रतिपाला॥
अब जनि मोसन करहु दुराई। अपने कर लीजे मुकताई॥
यहि संसार नाहिं मम काजा। दारुण महा काल है राजा॥
अब तुम आपन लोक दिखाओ। महा पुरुष के दर्श कराओ॥

सतगुरु वचन

नौ नारी मिलि विन्ती करई। कुवर पचास ठाढ़ तहँ रहई॥
बेटी एक सुरजकी जोती। ताहि लिलार पुहे जनु मोती॥
साहब चरण धरा तिन आई। अब हम चरणछोडि नहिं जायी॥
कीन्ह आरती नरयर मोरा। सकल जीवके तिनुका तोरा॥
सुकृत अंश बुलाये ज्ञानी। पुरुष दरश कर राजा आनी॥
लै अमरावहु लोक द्वारा। पल महँ लाय ठाढ बैठारा॥
दिना चार लगी राख्यो काया। वेगी जाय पुरुष पहँ आया॥
लिखिलिखिपान सवन कहँदीना। सकलो जीव वन्दन कीना॥
जेते जीव परवाना पावा। तेते हंसा लोक सिधावा॥
काया छोडि हंस चले आगे। सत्य सुकृत के चरनन लागे॥
लागी डोर पुरुषके पासा। तबै दूत यक कियो तमाशा॥
सुकृत संग हंस सब जेते। आये दूत कला धरि तेते॥
छाप तिलक तब विरचि बनायी। मारगमाँहि ठाढ भय आयी॥
आओ हंस पुरुषके पासा। नातो होवै ठाट विनाशा॥
बोले दूत हंस कहँ जायी। हम गुरुज्ञानी तोंहि सहायी॥
हमरे संग चलो हो राजा। हमरे शरण काल उठि भाजा॥
हंस रूप तुम धरि बटपारा। हम नहिं फन्दा परै तुम्हारा॥
सुकृत कहै हंस चलि आऊ। हमरे संग काल नहिं पाऊ॥
बाएँ अंग कालका धारा। दहिने पाँजी अहै हमारा॥
ताहि द्वार होय सुरति लगाओ। वेगि दरश पुरुषके पाओ॥
सुकृत सागर पहुँचे जायी। अहो हंस तुम लेहु नहायी॥
सकल हंस मिलि पैठि नहावा। निरखे द्वीप द्वीपका भावा॥

देखहिं लोक लोककी रचना। तब टेके सुकृतके चरना ॥
बैठे लोकमहँ हंस निहारा। जहँवाँ पुरुष आप विस्तारा ॥
सकल हंस तहँ बैठे पांती। सोरह रवि हंसनकी कांती ॥
पुहुप सेज सब हंस विराजा। तहँवाँ बुझाय नहिं रंक औ राजा॥
कंचन भूमि देख अति शोभा। बरनौ कहा हंस तहँ लोभा ॥
राजा कीन्ह दण्डवत जबहीं। रानी पुत्र कीन्ह पुनि तबहीं ॥
अब नहिं भवमहँ जाउ लिवायी। अति आनन्द बहुत सुखपायी॥

सुकृत वचन

सुकृत उत्तर कहे समझायी। चलू राय गहिर जनि लायी ॥
जो तुम गहर लगावहु राजा। विनशे ठाट तब होय अकाजा॥
तब पछतैहो राय भुपाला। ततक्षण वेगि चलो यहि हाला॥

राजा भोपाल वचन

विनशे ठाट होय जरि छारा। अब नहिं छोडब चरण तुम्हारा॥
ऐसा लोक छोडि नहिं जायब। बार बार तुहि माथ नवायब ॥

छन्द-राजा करै बहु बीन्ती तुम दीन बन्धु दयाल हौ ॥
हंसन नायक परम लायक काटिया फन्दा काल हौ ॥
चरण शरण आधीन समरथ शरण राखो आपनो ॥
दास जानि बन्ध छोरो काल तेहि नहिं पावनो ॥

सोरठा-अब हम शरण तुम्हार, दास जानि दाया करो ॥
आयो पुरुष दरबार, आपन कै प्रतिपालिये ॥

वचन-चौपाई

एती विन्ती राजा ठानी। ज्ञानी देश जलन्धर जानी ॥
भवसागर सो ज्ञानी आये। पुरुष दरश कीन्हा तब जाये ॥
दिना चार ऐसेहि चलि गयऊ। राजा खबरि कोई नहिं दयऊ ॥

तबे पौरिया रावपहँ जायी। महल देखि कोइ नाहिं रहायी॥
कहँवा राजा कहँवा रानी। कहँवाँ पुत्र कुवँर रजधानी॥
कहँवाँ बेटी है चन्द्रावति। ताकर रूप बरनो कौनी गति॥
कहँवाँ रानी कामसुरंगा। परिमल अंग बसत जेहि संगा॥
रोवत गयउ पौरिया द्वारा। जाय सबन सों कीन्ह पुकारा॥
जानि कुटुम्ब सब देखन आये। जिन राजा ते बहु सुख पाये॥

साखी-देखत अमिहत राजाकी, भयी अचम्भो बात॥
रोवत कुटुम्ब दीवान मिलि, किन यह कीन निपात॥
नगर लोग व्याकुल भये, घरघर रोवन लाग॥
की यहि राजा मारिया, सबहिन केर अभाग॥

चौपाई

कहै पौरिया सुनो दिवाना। तुम हम बूझो हम सब जाना॥
जिन्दा एक नगरमें आया। तासों राजा कौन फुँकाया॥
कह्यो राय मैं बहुत चिताई। तुरतहिं जिन्दा कहँ मरवायी॥
राजा बात नहीं पतियावा। वच सुनि राजा मोहि रिसावा॥
राजा कहै मुक्तिकरदाता। अस नहिं जाने करै निपाता॥
मोर कहा माना नहिं भाई। जस कीन्हा तस फल नित पाई॥

साखी-वचन पौरिया सुनतही, विकल भये सब कोय॥
आज गरासे राय कहँ, काल ग्रासै लोय॥

चौपाई

नगर लोग तब कीन्ह विचारा। सब मिलि भागो करो सम्हारा॥
भूलि अन्ध शब्द नहिं चीन्हा। मारन काल तिहुँ पुर दीन्हा॥

साखी-सुकृत अंश न पाइया, अन्धा गये भुलाय॥
धन्य राम भोपाल है, गहे शब्द चित लाय॥

छन्द–गये राजा लोक कहँ तजिया सब मान गुमान हो ॥
इमि हंस धर्मनि जो मिले तुम देहु ताको पान हो ॥
कहै कबीर जो शब्द माने सकल तजि नामे गहै ॥
अपवर्ग निश्चय ताहि कहँ नहिं पला पकडत काल है ॥

सोरठा–जो हंसा इमि होय, शब्द सार तासों कहो ॥
काग चाल तिन खोय, हंस चाल गहि लोक लो ॥

इति श्रीग्रंथभोपालबोध समाप्त

इति श्रीबोधसागरे कबीरधर्मदाससम्वादे भोपालबोधवर्णनो नाम चतुर्थस्तरंगः

सत्यकबीराय नमः

सत्यं शुद्धं गुणातीतं कंजपर्णसमुद्भवम् ।
सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञं सद्गुरुं प्रणतोस्म्यहम् ॥

अथ श्रीबोधसागरे

पंचमस्तरंगः

ग्रन्थ जगजीवन बोध

(गर्भ चितावनी)

धर्मदास वचन—चौपाई

धर्मदास कह सुनहु स्वामी । कहो गरभकी अन्तर्यामी ॥
कैसे जीव गरभ में आवे । कैसे जीव जठर दुख पावे ॥
कैसे जीव परवशे भयऊ । कैसे इन्द्री देह बनयऊ ॥
कैसे जीव अपने पद परसे । कैसे जीव समरथ पद परसे ॥
कैसे जीव कौल बँधावे । कैसे साहब दर्शन पावे ॥
सो सब भेद कहो गुरु ज्ञानी । घट भीतरका भेद बखानी ॥

सतगुरु—वचन

कहैं कबीर सुनो धर्मदासा । तुम घट भली बुद्धि परकासा ॥
प्रथमैं सत्य नाम गुण गाऊँ । घट भीतर का भेद बताऊँ ॥
सबही जीव गर्भ में जावैं । कौल बान्ध के बाहर धावैं ॥
चूके कौल गरभ का भाई । बारम्बार गरभ में जाई ॥
नौ नाथ सिद्धि चौरासी भारी । उनहूँ देह गरभमें धारी ॥

नौ अवतार विष्णु जो लीन्हा । उनहूँ गरभ बसेरा कीन्हा ॥
तेतिस कोटी देव कहाये । गरभ वास महँ देह बनाये ॥
जोगी जंगम औ तप धारी । गर्भवास में देह सवाँरी ॥
गर्भ वास तब छूटे भाई । जब समरथ गुरु बाहँ गहाई ॥

गर्भोत्पत्ति वर्णन

नारि पुरुष बांधे संयोगा । कामबाण लगि देहसुख भोगा॥
सत्त धातुका अंग बनाया । जिह्वा दांत मुख कान उपाया ॥
हाथ पावँ रु शीस निर्मांया । सुन्दर रूप बनी बहु काया ॥
नख शिख काहू नर बहू कीन्हा । दशही द्वार युक्ति करि लीन्हा॥
दश द्वार नौ नाडि बनायी । ऐसे सबतर बन्ध लगायी ॥
दीन्हा ठेक बहत्तर भारी । नाडी बन्धन बहुत अपारी ॥
नाद बिन्दुसों काय निरमायी । तामें प्रकृती आन समायी ॥
हद कारिगर हुन्नर कीन्हा । जैसे दूधमें जामन दीन्हा ॥
तीनसों साठ चार बन्ध लायी । सोलह खांई तहां बनायी ॥
सोलह खांई चौदह दर्वाजा । अठहूँ हाथ गढ खूब विराजा॥
छाजे महल अधिकही छाजा । तामें जीव जो आनि विराजा॥
अजब महल बहु खूब बनाया । छठे महल हंस चितवन लाया॥
छठे मांस में सुरती आयी । दुख सुखकी तब पारख पायी ॥
छै मासको भयो जब प्रानी । दुख सुखकी मति सबै पहिचानी॥
औंधे मुख झूले लटकंता । मैल बहुत तहँ कीच रहंता ॥
जठर अग्नि तहँ बहुत सतावै । संकट गर्भ तहँ अन्त न आवै ॥
बहुत सांकरी पिंजार पोई ।तडफडै बहुत निकसै नहिं जोई॥
मुखसों बोल निकसि नहिं आवै। करुना करि मन में पछितावै ॥
अरुझे श्वास रोवै मन माहीं । कौन करमगति लागी आहीं ॥
करुणा करि मन में पछितावे । ज्यों करीब कंठ करद बैठावे ॥

ता दुखकी गति कासु कहीजै । करम उनमान तहँ दुःख सहीजै॥
यदि आलोच करै मनमाही । संगी मित्र कोइ दीखत नाहीं ॥
पिछला जनम जब सूझा भाई । तब जिव दिलमा चिंता आई ॥
स्त्री मित्र कुटुम्ब परिवारा । सुत नाती औ सैन पियारा ॥
संगी सुजन बन्धु औ भाई । गरभ कि चीन्ह परी नहिं ताई ॥
महा दुःख सो गरभ में पावे । बहुत वैराग हियामें आवे ॥
सूझी सकल बाहरकी बाती । जो जिव पिछली होती जाती ॥
जब जिव गरभमें ज्ञान विचारा । अब मैं सुमरूं सिरजन हारा ॥
सोच मोह जिव कछू न कीजे । अब सद्गुरु का शरणा लीजे ॥
जिव अपने दिल माहि विचारे । तब समरथ को कीन पुकारे ॥
सुनु धर्मदास यक कथा सुनाऊँ । यक राजाको जस बने बनाऊँ ॥
राय जगजीवन ताहिकर नामा । जब वह पहुँच्यो एही ठामा ॥
करन विन्ती लागु अधीरू । सतगुरु कहँ तब कीन्ही टेरू ॥

जगजीवन वचन

साहिब संकट दूर निवारो । मैं निज खानाजाद तुम्हारो ॥
दिल में करुणा करै अतिभारी । अब मोहि साइब लेहु उबारी ॥
करे अस्तुति बहुते सुधिलावे । तुम बिनु खाविन्द कौन छुडावे॥
अब दुःख दूर निवारो स्वामी । कौल करूँ प्रभु अन्तरयामी ॥
बाहर निकारो आदि सनेही । बहु दुःख पावै मेरी देही ॥
मैं जन प्रभुको दास कहाऊँ । आन देव के निकट न जाऊँ ॥
सतगुरुका होय रहों चेरा । दम दम नाम उचारूँ तेरा ॥
नित उठि गुरु चरणामृत लेऊँ । तन मन धने निछावर देऊँ ॥
जो मैं तन सों करहूँ कमाई । अर्धमाल मैं गुरुहि चढाई ॥
कुबुद्धि सीख काहू नहिं मानूं । हराम माल जहर करिजानूं ॥
कुलकी त्यागूँ मान बडाई । निर्मल ज्ञान एक संत सगाई ॥

रात दिवस ऐसे लव लाऊँ । करत फुरत भक्ति गुरु कराऊँ ॥
दुःख सुख परे सो तनसे सहूँ । भक्ति दृढे गुरु चरणे रहू ॥
परत्रिया ताकूं नहिं कोई । जननी बहन करि देखूं सोई ॥
दुष्ट बैन कबहूँ नहिं खोलूँ । शीतल बैन सदा मुख बोलूँ ॥
स्वास उस्वासमों रटना लाऊँ । आन उपाय एको नहिं चाऊँ ॥
तन मन धन निछावर देऊँ । सतगुरु का चरणामृत लेऊँ ॥
सतगुरु कहैं सोई अब करिहौं । आज्ञा लोप पाओं नहिं धरिहौं ॥
और सकल बैरी कर जानूँ । सद्गुरु कहँ मित्र कर मानूँ ॥
ज्ञान बतावे सोई गुरुदाता । तन मन धन अरपूँ उन ताता ॥
तन मन धन मैं उनको देऊँ । नित उठि गुरुचरणामृत लेऊँ ॥
यहि गर्भवासमें कौल बधाऊँ । बाहर निकारो धुर निबाऊँ ॥
जो मैं छूटूँ गरभ सबेही । तन मन अरपूँ औ गुरु देही ॥
एक नाम सांचा कर मानूँ । और सबै मिथ्या कर जानूँ ॥
कहा अस्तुति करों गुसाईं । बहुत दुःख पावत हूँ या ठाईं ॥
यहां कोई मित्र नहिं भाई । मातु पिता नहिं लोग लुगाई ॥
देवी देवका कछु न चाले । गुरु विन कौन करै प्रतिपाले ॥
अब तो खबर परी यहि ठाहीं । और कोईका चाले नाहीं ॥
पिछली बात मैं हृदय जानी । कोई काहूका नहीं रे प्राणी ॥
अपने साथ चलेगा सोई । जो कछु सुकृत करे सो होई ॥
मद माया में जीव भरमाया । सो तो कोई काम न आया ॥
बहुत विचार किया मैं सोई । अन्तकाल अपनो नहिं कोई ॥
ऐसी करुणा करै विचारा । दया करो दुःख भंजन हारा ॥

साहिब वचन

तब साहिब यों कहै पुकारा । कहि समझाया तोहिं बारम्बारा ॥
अनेक बार गरभमें आया । तैं रतीकर्म भरम नहिं पाया ॥

कई बेर तैं कौल बँधावा। कई बार तैं गर्भ में आवा ॥
गर्भ में ज्ञान उपजा है तोही। संकटमें सुमिरे सब कोही ॥
बाहर निकसि नहिं उपजे ज्ञाना। अंधकार अहंकार समाना ॥
बार अनेक भुलाना भाई। नहिं सतगुरु की दीक्षा पाई ॥
गरभ त्रास तब छूटे भाई। जब सतगुरु कहँ बाँह समाई ॥

जगजीवन वचन

बोलत वचन कहो गुरु देवा। जीवकी अवधि बताओ भेवा ॥
दीन दयाल दया गुरु कीजे। बूडत जीव आपन करि लीजे ॥
दयावंत गुरु दीन दयाला। मुक्तिरूप जीवन प्रतिपाला ॥
मोकों अभय दान गुरु दीजे। अन्दर ज्ञान उजालो कीजे ॥

सतगुरु वचन

गरभ बासमें कौल बन्धावा। सो कैसे तैं न बाहर निर्बावा ॥
बहु संकट तोहि उपजे ज्ञाना। बाहर निकसत सब विसराना ॥
जोई जीव कौल निर्बाहै। सोई नहिं गरभवास महँ आहै ॥

जगजीवन वचन

अब नाहीं भूलूं गुरु देवा। तन मन लाय करूं गुरु सेवा ॥
मोकूँ बाहिर काढो स्वामी। कौल न चूकूँ अन्तर्यामी ॥

सतगुरु वचन

कौल बोल सब चौकस कीना। तबहीं गर्भ सों बाहर लीना ॥
नौवें मास जो बाहर आया। लोग कुटुम्ब सबही सुख पाया ॥
सबही हरष करैं मन माई। पुत्र हेतु सब करैं बधाई ॥
बाजा बाजै करै उछावा। गीत नाद आधिके चितआवा ॥
सबै सजन मिलि गूड़ बँटावा। रैन समय तिय मंगल गावा ॥
नगरलोक सब करैं बधाई। घर घर साजे देइ लुगाई ॥
घर राजाके जनम सो पइया। कौल किया सो सब बिसरैया ॥
पीसुन मिले सबहिं धुतारा। सबहीं ज्ञान भुलावन हारा ॥

ताका नाम सुनो रे भाई । महा जालके फन्द फँदाई ॥
झूठे झूठ मिले संसारा । नरक कुण्ड में नाखन हारा ॥

पिसुन कर्म वर्णन

प्रथम माता

माता मनमें करै बखाना । यह भल उग्यो आजुको भाना ॥
बालक जन्मा मोरे कोखा । जन्म भरे की भागी धोखा ॥

नाइन

नाइन एक बधाई लायी । तीन तो एकै बात जनायी ॥
मेरा कहा करो तुम कामा । नाक छेदि कहो नाथू नामा ॥
नाल औवल पीसो गाढो । दिहली को तब बालक काढो ॥
यह तो बात मैं गुप्त सुनायी । मुवा जिवाका तो मुहि दायी ॥

पिता

पिताके मनमें ऐसी आवैं । उमगे हरष हिय नाहि समावैं ॥
बाटे पान मिठाइ बहूता । धन्य भाग्य मोर जनम्यो पूता ॥

काका

काका कहै मैं उतरूं पारा । बालक खेलै घरके द्वारा ॥
कर्म जोर मोरे बड कीन्हा । क्षेत्रपाल मोहिं बालक दीन्हा ॥

दादा

दादा सुनिकै दौरे आये । पोता देख बहुत सुख पाये ॥
दासी हाथे कुवँर मँगाया । हेतु प्रीति से कण्ठ लगाया ॥

दादी

दादीके मन हर्ष अपारा । लेत बलाई बारंबारा ॥
मैं करी बहुत सतियनकी सेवा । भये प्रसन्न मोर कुलदेवा ॥

नानी

नानी आवत वेगि उठाया । मुख चुम्बा दै कण्ठ लगाया ॥
लून ले शिर ऊपर वारा । द्रब्य माल पुनि बहुत उतारा ॥

नाना

अब नाना मुख देखन आया। दौहित्रा देखि अधिक सुख पाया॥
उमँगे हरष हिये न अमायी। कंचन चूरा दिया बधायी॥

भुआ

बहुत करे हरष भुआ बाई। दिन दिन अधिकी करे बधाई॥
मुख चुम्बा दे कंठ लगावे। हिये हर्ष उमँग नहिं मावे॥

मौसी

मौसी मन बहु हर्ष उठावै। धन्य बहिन को कोख तरावै॥
मुख चूमे अरु कण्ठ लगावै। अतिशय उमंग हिये नहिं मावै॥

अडोसी पडोसी

बुढिया एक जो बोले आयी। तिन यक बात कही समझायी॥
बालक तेल लौन सों लीजे। लौना नाम कहे धरि दीजे॥

दूसरी पडोसिन

दूजी कहै सुनो रे बाई। बालक डारो छीतर माई॥
सांचो टोना यही कहावों। इनको छीतर कहि बतलावो॥

तीसरी पडोसिन

तिया तीसरी बोले सयानी। मैं जान्यों सो काहु न जानी॥
कोदरा बरोबर तौल के लीजे। याकर नाग कोदरसिंह कीजे॥

चौथी पडोसिन

चमरिन गोद यहीको डारो। मोल लेइ पुनि ताहि उजारो॥
चमरूसिंह नाम यहि केरा। बालक याते जिवै घनेरा॥

पांचवी पडोसिन

याको घूर गुनौरे डारो। दूत पराछित या विधि मारो॥
घूरन सिहँ अरु गेनो नामा। दीजै ताहि सुधरे सब कामा॥

छठीं पडोसिन

यह सब बात बताओ माई। चूल्हे डारो चुल्हन कहाई ॥
जेती नारि आयीं तेहि बारा। सबहिन आपन मता उचारा॥
कोइ काहू कोइ काहु बतावैं। स्यानप आपन सबहि जतावैं ॥

ओझा और स्याने

बुढवे एक जो सीस धुनावैं। वाके शिर पर भैरों आवैं ॥
सो कह हमको बैल बधाओ। भैरोंसिंघ कही बतलाओ ॥
देवी पूजक एक तब आया। देवीसिंह तब नाम बताया ॥
गाजी मुर्गी कोइ चढ़ावै। गाजीदीन तब नाम बतावै ॥
यहि विधि अनेकनहू आये। आपन आपन उक्ति सुनाये ॥

पुरोहित

घरको पुरोहित ऐसी कही। मनको मनोरथ पूरण सही ॥
यह तो बडा सपूत कहावै। इनके तुलै कोइ नहीं आवै ॥
पुरोहित कह यजमान है मेरा। कुल देवी भैरोंका चेरा ॥

चारण और भाट

चारण भाट जपै महामाई। भोजक भाट तहां चलि आई ॥
सबही मिलि दीनी आशीशा। महामाइ सुत कीन्ह बख्शीशा॥

मुसलमान फकीर

दर्वेश एक कहै समुझाई। नाम फकीरा कहो रे भाई ॥
बांधि गांठ गले में दीजै। सब पीरों का चारण लीजै ॥

योगी

जोगी एक तहां चलि आया। मेरी भभुत का परचा पाया ॥
कहा हमारा सुनिकै लीजै। याका नाम सदाशिव दीजै ॥

दिगम्बर

यन्त्र मन्त्र जतीकरि लाये। करि तावीज गले पहराये ॥
वज्र वटु सूअरदांत मंगायी। एक सुपारी माहि मढायी ॥

भोजपत्रमें यंत्र मढाया । सात भांतिका रेशम लाया ॥
गूगल बारि धूप लै कीन्हा । सो पहिराय गलेमें दीन्हा ॥

पण्डित लोग

ब्राह्मण सबही नगरके आये । पत्रा पोथी साथहिं लाये ॥
पीपल केरे पान मँगाया । लगन साधिके नाम सुनाया ॥
जगजीवन नाम जनमका सही । याका मरण होय ना कबही ॥
द्रव्य माल दक्षिणा दीना । जनम पत्रिका लिखाय जो लीना ॥
बहु विधि सो संस्कार कराया । मोह फांसमें पकरि दबाया ॥
गर्भ कौल तो सब बिसराना । अमर रहनका जतन बहुठाना ॥
एक सो बात गुप्त ना होई । स्याना लोग कहैं सब कोई ॥
फन्दा अनेकन में फन्दाई । कौल किया सब गया भुलाई ॥
झूठे झूठ मिले सब कोई । इनते काज एको नहिं होई ॥
पिछली कौल सबै विसरानी । महा जालमें बँधे प्राणी ॥
यह सब झूठे पाखण्ड साजू । इनसूं सरे न एको काजू ॥
साखी–कहैं कबीर सब चेतहू, आगे काल कराल ।
आल जँजाल तम छाडिके, पिछले लोक सँभाल ॥

चौपाई

जौन कौल गर्भ में कीया । मूरख विसारि–सब दीया ॥
फिर भी कठिन हो गया भाई । तुम करिहो कौन उपाई ॥
इतने सब मिलि करहिं बधाई । तामें तेरा कौन सहाई ॥
तुम अबकी चेतो जो नाहीं । मानुष जनम भाग बड पाही ॥
साखी–ये तेरे मित्र नहीं, सब वैरी करि जान ।
उबरा चाहो कालते, गुरुहि मित्र कर मान ॥

चौपाई

एक जीव बैरी बहुताई । यूथ युत्थ बाटन सब लाई ॥
कोई जीवको का तकसीरा । सबको जडिया मोह जँजीरा ॥

ज्ञान ध्यान जिव कैसे पावैं । इतने पिशुन ताहि भरमावैं ॥
देखो दिलै करि ज्ञान विचारा । किहिविधि उतरो भवजल पारा॥
रे कुबुद्धि दुख में मत झूले । पिछला काल बोल मति भूले॥
इक दिन फेरि परेगा गाढा । मुशुक बाँधि यम करिहैं ठाढा॥
तुम मति जानो अमर है काया । यह दीसै सुपनेकी माया ॥
यहि चकचौंध भुलो मति कोई । सेंवल फूल जैसा तन होई ॥
जैसे नींद में सुपना आवै । जागि परे तब कछू न पावे ॥
यह तन ऐसे देखो भाई । झूठे झूठ मिलैं सब आई ॥
दिनाचार चटक दिखलावे । अन्तकाल ग्रासन कूँ धावे ॥
काल जंजाल सों छूटा जाई । गुरूसे प्रीति करो रे भाई ॥
सतगुरू ऐसी युक्ति लखावे । जासे जीव परम पद पावे ॥
सुनो जीव अबूझ की बाता । जनम गवाँवै करम कमाता ॥
हर्ष मोह मैं सबहि सुनाऊँ । जेते घर में सबहि दिखाऊँ ॥
एक वर्ष लगि डोल डोलावे । पशू रूपमें जनम गँवावे ॥
उखली जीभ तोतला बोलै । मातु पिता सब हर्षित डोलै ॥
आज जंजाल बोले बहकावे । त्यों त्यों हरष हिये नहिं मावे॥
परी करे औ ऊभा धावे । बाहर भीतर दौडा आवे ॥
कंचन घूँघुर बेगि गढ़ाई । रेशम केरी डोर पोवाई ॥
सोना रूपा बहु पहिराया । हीरा मोती भूल भुलाया ॥
बालन सँग में खेलन जावे । नाच कूद के घरही आवे ॥
मनमें आनँद करै चँचलाई । सोच फिकर कछु व्यापे नाई॥
करै कुतूहल मनमें सोई । दिन दिन तेज सवाया होई ॥
आकुल बोलै सोच न आनै । कूर कपट कर बहु सुख गानै ॥
संकटका दिन चित्त न आवे । करै अनीति जोई मन भावे ॥
चित्तमें दुर्मति रहै अति घनी । महा दुष्ट बुद्धि पापी सनी ॥
द्वादश वर्षकी भयी है देही । अनन्त उपाय करै नर केही ॥

प्रगट काम काया के भीतर ।सोच फिकिर नहिं व्यापे अंतर॥
अन्ध करै बहुत अहंकारा । निरखै तिरिया घर घर द्वारा॥
परवश दूती आनि मिलावै । जोर करै तो पकरि मगावै ॥
नाहकको तू कान लगावै । नहिं मानै तो यमघर जावै ॥
अघ करमी होय तन डोलै । जोर बहुत गरभ सो बोलै ॥
आंखिन माहीं वर्षे लोई । ज्ञान ध्यानकी सुधि ना होई ॥
गुरु चरचाके निकट न जावे । हँसी मसखरीसों मन भावै ॥
झूठी बात करै लबराई । तासों हेतु करै मितराई ॥

साखी—यह नर गरभ भुलाइया, देखि मायाको झोल ।
कहै कबीर सब चेतहू, सुमिरि पाछलो कौल ॥

चौपाई

इन्द्री स्नेह न मानै चेता । माया गर्व फिरै मैंमंता ॥
ईंगुण प्रगटा अन्तर माहीं । कामातुर होय करी विवाही ॥
पहले विवाही एक लुगाई । बहुत प्रेम सँग ताहि लिवाई ॥
विषय विवेक फिर उपजा भारी। पीछे ब्याही सुन्दरि नारी ॥
अँगस्वरूप कामिनि अधिकाई । कामातुरसों रहे लपटाई ॥
महा अनन्द भये मन माहीं । एक पलक सँग छाडें नाहीं ॥
करै खवासी कहत है दासी । बन्धा मोह जाल की फांसी ॥
खिदमतगार सहेली घनी । कई नायिका कई रामजनी ॥
नव नव खण्डके महल बनाये । सेना केरे कलस चढाये ॥
करी बिछावन तहँ बडभारी । गादी तकिया बहुत अपारी ॥
बहुत मोलको अतर मँगावै । फूलन केरी सेज बिछावै ॥
कहँ लगि बरनूं यह विस्तारा । मायाविनको बार न पारा ॥
टपका स्वाद भया तर अन्धा । आवै यम तब करै बहु फंदा ॥
नित नित त्रिया नई संयोगा । खान पान और षट रस भोगा॥

मता विषय रस कछू न सूझे । भैरों भूत शीतला पूजे ॥
भूले कौल गरभकी बांधी । अब चकचौंध आई आंधी ॥
सबही जीव कौलकरि आवे । बाहर निकसि सब बिसरावे ॥

सतगुरुके आगमन

ऐसे जीव भूल रहे सारे । तब सतगुरू आइ पगु धारे ॥
जीव चितावन सतगुरू आये । अलीदास धोबी समझाये ॥
और हंस बहुत चेताये । फिरत फिरत पाटनपुर आये ॥

सतगुरुका पाटनपुरमें पहुंचना

सतगुरू आये पाटन ठाऊँ । जगजीवन राय बसै तेहि गाऊँ ॥
राय न मानै भक्ति विचारा । हँसे भक्तको बारम्बारा ॥
भक्त रूप सब शहर निहारा । कोउ न मानै कहा हमारा ॥
तब आपन मन कीन विचारा । कैसे मानैं शब्द हमारा ॥
जाइ बाग में आसन कीन्हा । गुप्त रहे काहु नहिं चीन्हा ॥
द्वादश वर्ष भये बाग सुखाने । सुलगे काष्ठ होय पुराने ॥
चार कोस तेहि बाग लम्बाई । तीन कोसकी है चकलाई ॥
तहां जाय आसन हम कीन्हा । रहों गुप्त काहू नहिं चीन्हा ॥
तहवां मैं कौतुक अस कीया । सूखे बाग हरा कर दीया ॥
विकसे पुहुप जीव सब जागे । सबने हरियर देखा बागे ॥
माली जाय कै दीन बधाई । जागा भाग तुम्हारा भाई ॥
देखा बाग जाय तेहि वारा । फल फूलनका अन्त न पारा ॥
हर्षा माली बाहर आया । देखा बाग बहुत सुख पाया ॥
फूलन छाब भरी दुइ चारी । नाना विधिके फूल अपारी ॥
नाना विधिके मेवा लाया । लै माली दरबारे आया ॥
बैठा राजा सभा मँझारा । उमरावनको तहाँ न पारा ॥
माली सब लै धरी रसाला । राजा पूछ करे ततकाला ॥

राजा जगजीवन वचन

कौन देश तैं माली आया । फूल अनूप कहांसे लाया ॥
कौन बाग के फलन विशेखा । कानो सुनी न आंख न देखा ॥

माली वचन

नौ लखा बाग रहा होय आया । फल प्रसून सब नये बनाया ॥
सुनिके राजा हरषा भारी । संग उठी चली परजा सारी ॥

राजा वचन

कहु दिवान यह कौन प्रकारा । समझि बूझिके करो विचारा ॥
ज्योतिषी पण्डित सबै बुलाये । पत्रा पोथी सबही लाये ॥

ज्योतिषी वचन

लगन सोधि सब ऐसी कही । कोइ पुरुष यहँ आये सही ॥
है कोइ नर के कोइ पखेरू । सोधो जाय बाग सब हेरू ॥
हेरे राय बागके माहीं । बैठे संत यक ध्यान लगाहीं ॥
राजा जाय धरा तब पाई । नगर भरेकी परजा आई ॥
कहे राजा धन मेरो भागा । दर्शन पाय अमर होय लागा ॥
आलसी घर गंगा आयी । मिटि गई गर्मी भयी शितलायी ॥

सतगुरु वचन

तब राजासों कही पुकारी । सुन राजा एक बात हमारी ॥
हम जनि भार चढाओ भाई । काहे को तुम देहु बड़ाई ॥
अच्छा बाग विमल हम चीन्हा । तासो आये आसन कीन्हा ॥
ऐसा तुमहीं बाग बनाया । नाना विध के रूख लगाया ॥
आसन किया देखि हम ठारी । बहुत फूल फलकी अधिकारी ॥

राजा वचन

फिर के राजा शीस नवाया । द्वादश वर्ष भये बाग सुखाया ॥
सूखा बाग भये बहु बारा । नहिं कोइ लोक आदे संसारा ॥

छाडी फल फूलनकी आसा। कोइ न आवे बागके पासा॥
तुम समर्थ पग धारे आई। हरा हुआ बाग सब ठाई॥
राजा कहै दया अब कीजे। मोकूँ मुक्तिदान फल दीजे॥
मेरे मस्तक धरहू हाथा। मैं रहूँ सतगुरु तुम्हारे साथा॥

सतगुरु वचन

तुमको कौल भुलाना भाई। किया सो कौल गया बिसराई॥
संकट गरभ में बाचा दीन्हा। बाहरनिकसि करमबहु कीन्हा॥
किया कौल जब गये भुलाई। तब हम आइके चरित दिखाई॥
बहु विधि बात कही चेताई। बाहर निकसि बुद्धि पलटाई॥
तुमको तो कछु सूझत नाहीं। फन्दा मोहजाल के माहीं॥
आवे यम दश द्वार मून्दी। तबहीं बांधि करेगा कून्दी॥
सोच बूझ देख मन माहीं। इतने में तेरा कौन सहाहीं॥
पिसुन मिलैं सब वार न पारा। नरक बास में नाखन हारा॥
बहु विधि तुमसों शब्द पुकारा। किया कौन नर भूल गवाँरा॥
घर घर हम सब कही पुकारी। कोइ न माने कही हमारी॥

हे राजा जब तू मातृगर्भमें था तब तू वचनवद्ध हुआ था कि भजनके अतिरिक्त अब और कुछ न करेंगे। उस दुःखमें तो तू पुकारता था तथा हाय हाय करता था, कि मुझको इस दुःखसे निकालो। जब तू गर्भके बाहर आया तब तू अपनी प्रतिज्ञा भूल गया और शारीरिक कामना तथा पशुधर्मके वशीभूत होकर तूने कौन कौनसे कुकर्म्म न किये? सत्यगुरुकी दयाको तू एकबारगी भूल गया,भोगविलासमें फँसकर अन्धा हो गया और मायाने तेरे ज्ञानको बिलकुल ही नष्ट करदिया।जब यमदूत आवेंगे और तेरी मुश्कें बांधकर नरक में लेजावेंगे तब तेरा कौन मित्र सहायता करेगा? और तुझको उनसे कौन छुड़ावेगा? राजा! तू सोच तथा समझ कि, वे लोग जिन्हें तू अपना

मित्र समझता है उनमें से कौन तेरा उस समय सहायक होगा? कौन तुझको नरकसे बचावेगा? गर्भमें मैंने तुझको बहुत समझाया था सो हे गँवार! तू उन सब बातोंको भूल गया मैंने सबसे घर घर पुकार कर कहा मेरा कहना किसी मूर्खने न माना। इतनी बात सुनकर राजा बोला।

राजा वचन–चौपाई

अब तो गुरू होहु सहाई। मोकों यमसे लेहु छुडाई॥
सबही करम बख्सके दीजे। डूबत मोहिं उबारके लीजे॥
सेन करी पालकी मँगाई। लै सद्गुरु को माहिं बिठाई॥
पाँव उघार कांध धर लीन्हा। तबही महल पयाना कीन्हा॥
सद्गुरु पग धर महलके माहीं। सब रानिनको राय बुलाहीं॥
समरथ दरशन दीन्हा आनी। धनधन भाग्य तुम्हारो रानी॥
सद्गुरु को पलँगा बैठाई। सब मिलि पांव पखारो आई॥
राजा भाखे शीश नवाई। मोकों राखो गुरु शरनाई॥
करिये सद्गुरु जीवको काजा। दया करो मैं लाऊँ साजा॥
अब हम शरना लेब तुम्हारी। दया करो तन दुखत हमारी॥

सतगुरु वचन

तब कहे सतगुरु लेहु सँभारी। राजा सुनहू बात हमारी॥
कस चले राजा लोक हमारे। मैं नहिं देखूँ लगन तुम्हारे॥
कोटिन ज्ञान कथे असरारा। बिना लगन नहिं जीव उबारा॥
जो कोई बूझे भक्ति हमारी। ताको चहिये लगन सँचारी॥
जैसे लगन चकोरकी होई। चन्द्र सनेह अँगार चुगोई॥
ऐसे लगन गुरुसे होई। धर्मराय शिर पग धर सोई॥
तुम तो हो मोटे महराजा। कैसे छोडिहो कुल मर्यादा॥
कैसे छोडिहौ मान बड़ाई। कैसे छोडिहौ मुख चतुराई॥
कैसे छोडिहौ हाथी असवारा। कैसे छोडिहौ ग्रंथ भँडारा॥

कैसे छोडिहो काम तरंगा । कैसे राजसे करो मन भंगा ॥
कैसे छोडिहो कनक जवाहिरा । कैसे छोडिहो कुल परिवारा ॥
तुम तो उनकी बांधी आसा । हम तो राजा कथैं निरासा ॥
जो तुम तजु अन्तरकी बाथा । तबहीं चलो हमारे साथा ॥
भक्ति कठिन करी ना जाई । काहे को हिर्स करत हो राई ॥

राजा वचन

राजा कहे दोऊ कर जोरी । सुनिये समरथ बिनती मोरी ॥
नगरके सब षट् बरन बुलाऊं । यहि अवसर सब माल लुटाऊं॥
तुम तो कह्यो बाहर लेव वासा । मैं तो देहकी छोडों आसा ॥
अमृत वचन पियाओ आनी । हंस उबार करो निरवानी ॥
नगर कोटकी छोड़ी आसा । निश दिन रहूं तुम्हारे पासा ॥
हुकुम करो सोई मैं लाऊं । करो दया मैं शीस नवाऊं ॥
उमँग उठे हर्षित मन मोरा । थकित भये जनु चन्द्र चकोरा॥
सूखा बाग जो फल परकाशा । तबते पूजी मनकी आशा ॥
कसनी कसो सों सहूँ शरीरा । तबहूँ प्रीत न छोडूँ तीरा ॥
जो तुम कहो सो भक्ति कराऊँ । दया करो तो शीश चढाऊँ ॥

सतगुरु वचन

तब समरथ अस शब्द उचारा । अब आरति का करो विस्तारा॥
चार गुरुको चौक पुराओ । तिनकातोरायकेजलअरपाओ॥
राजा गर्भ निवारौं तोरा । भाव भक्तिसे करो निहोरा ॥
भाव भक्ति हम चाहें राजा । धन सम्पतिसे न कछु काजा ॥

राजा वचन

दया करो सो साज मँगाऊँ । कौन वस्तु ले आगे आऊँ ॥
मैं हूँ जीव मतीका भोरा । कहँ जानूं चौका के ब्योरा ॥
समरथ कहो मैं आनूं सोही । चौका जुगति बताओ मोही ॥
करहु गुरु चौका विस्तारी । जीवहि यमसों लेहु उबारी ॥

सतगुरु वचन

चार गुरू को साज मँगाओ । चार सवा सौ पान ले आओ॥
चार सवा सेर कन्द मँगाओ । आठ अंश नारियल ले आओ॥
चार माला अरु लोटा चारो । सतगुरु आगे लाकर धारो ॥
चार थाली चार गादी कीजे । चार चँदोवा ताने लीजे ॥
चार कलस जल भरि धरवाओ। तब सतगुरुके आगे आओ ॥
सब यह साज आगे धरि दीन्हा। तब सतगुरुसे विन्ती कीन्हा ॥

राजा वचन

मैं हूँ जीव करम बहु कीना । कैसे यमसों करिहो भीना ॥
गिनत गिनत नहिं आवे चीना । बारम्बार मैं औगुन कीना ॥
ऐसा करम किया मैं भारी । कैसे यमसे लेहो उबारी ॥
एक बात गुरु कहो विचारी । मोसम पतित आगे कोइ तारी॥
तब सतगुरु बहुत विहँसाने । फिर राजासों निरणय ठाने ॥

सतगुरु वचन

सतयुग सत्यसुकृत मम नाऊँ । जाइ मथुरामें धारेउँ पाऊँ ॥
खेमसरी ग्वालिनी उबारी । बहुत जीव ले लोक सिधारी ॥
द्वादश पहुँचे पुरुष हजूरी । और हंस द्वीपन मँझूरी ॥
त्रेता युगे मुनिन्दर नाऊँ । नगर अयोध्या धारे पाऊँ ॥
हंस बयालिस लीन्हा लारा । पहुँचे तहाँ पुरुष दरबारा ॥
और हंस द्वीप महँ गयऊँ । जिन जैसी जिव देह बनयऊँ ॥
अब द्वापरका कहूँ विचारा । नरहर राजका किया उधारा ॥
सात सौ हंस पावन कीन्हा । कुटुम्ब सहित पयाना दीन्हा ॥
चन्द्रविजय घर इन्दुमति नारी । संकट राजा लीन उबारी ॥
केता पूछो जीव सनेही । गिनत गिनत ना आवे छेही ॥
युगन युगन भवसागर आऊँ । जो समझे तेहि लोक पठाऊँ ॥

शब्द हमारा माने कोई। तौ नहिं जाय यमपुरी सोई ॥
इतनी बात कही समझायी। दिल राजाके प्रतीति समायी॥

राजा वचन

धन्य भाग मेरा कुल कर्मा। कोटित यज्ञ कियो तप धर्मा॥
सत्यगुरु आय दरस मोहि दीन्हा। बूझत हंस उबार कै लीन्हा ॥
हो प्रभु मोर करो निर्वैरा। मैं तो चरण कमलका चेरा ॥
कहु सन्देश नगर में भाई। जय जीवन राय लोकको जाई॥
नेगी जोगी सबहि बुलायी। और नगरकी परजा आई ॥
चन्दनका सिंहासन कीन्हा। चौका पूरि कलश धरि दीना॥
सतगुरु शब्द उचारे लीना। युक्ति साजि गादी पशु दीना ॥
सब रानिनको बेगि बुलायी। करि दण्डवत गुरुचरणा आयी॥
जीव प्रति नरियल ले आये। सो सतगुरु को आनि चढ़ाये ॥

साखी-सब रानी विन्ती करैं, सुनु समरथ चित लाय।
महा अकरमी जीव हम, सबहि लेहु मुकताय ॥

चौपाई

जेठी रानी चन्द्रमति जोई। सतगुरुकी गति जानी सोई ॥
दूजी रानी है मनकी युक्ती। निर्भय होय करै गुरु भक्ती ॥
तीजी रानी है मनपोई। लज्या कारण ना मानै कोई ॥
चौथी रानी भानुमति आही। जीवत सती सुजानो ताही ॥
पांचवीं रानी धन्ना बाई। कलावंत होय आगे आई ॥
छठवीं रानी प्राणप्यारी। पूजे सन्त वह लाज निवारी ॥
सतई रानी है सत भामा। निर्भय होय जपै गुरु नामा ॥
अठवीं आनन्दकला है रानी। सतगुरुसों प्रीति निज ठानी ॥
नौवीं रानी नामपियारी। भक्तिवंत जानै संसारी ॥
दशवीं रानी है दिल दायक। सब रानीकी सो है नायक ॥
ग्यारहवीं रानी है रंगरोपा। ताके कारन राव नहिं लोपा ॥

बारहवीं रानी सूरजमती । हंस रूप है ताकी गती ॥
द्वादश रानी सब बनि आयी । एक अंग होय सब भक्ति करायी ॥
राजा छडीदार पठवाई । तो वो कुँवरको लाय बुलाई ॥

छडीदार वचन

छडीदार कहै कर जोरी । राजकुँवर सुनु विन्ती मोरी ॥
राजा रानि गुरु चरणे आये । ताते तुमको वेगि बुलाये ॥
गरभवाससों करैं निरुवारा । तुरत चलो जनि लावो बारा ॥

कुंवर वचन

तुम छडीदार कहो बात विचारी । कैसा गुरु है सो अधिकारी ॥

छडीदार वचन

हम मति हीन कछू नहिं जाना । निश्चय आदी पुरुष पुराना ॥
यह सुपने नाहीं कहुँ देखा । सुर मुनि नारद शारद पेखा ॥

कुंवर वचन

कुँवर बीनती कीन सुहाती । सुनतैं बात जुडानी छाती ॥
हंस रूप चारों हैं भाई । उमंग हरष हिये नाहिं समाई ॥
जहाँ सतगुरु आसन कीन्हा । कुँवर चार आइ दर्शन लीन्हा ॥
बडा कुँवर वह सूरजभाना । गुरु स्वरूप हृदय में आना ॥
दूजा कुँवर इन्द्रमन दासा । शब्दै पीवै शब्दकी आसा ॥
तीजे कहिये चतुर्भुज कुमारा । शब्द सुनत वह सीस उतारा ॥
चौथा कुँवर विक्रम दासा । जिन तन मनकी छोडी आसा ॥
चारों कुँवर धरे गुरु पाई । तन मन धन सब प्रीति चढाई ॥
कदली केर पतवार धरायी । गज मुक्ताहल चौक पुरायी ॥
नरियल मोरिके मालूम कीन्हा । लिखि परवाना सबकूँ दीन्हा ॥
इतने हंस भये मन भावन । तिनको सतगुरु कीन्हा पावन ॥
तन मन धन सो बदला कीन्हा । शिरके सांट साहबको चीन्हा ॥
करी निछावर मेटे गर्भफेरा । अब तो भई भगतिकी वेरा ॥

सतगुरु वचन

तुमरी राय भली बनि आही । तुम गरभवासकी कौल निबाही ॥
जोई कौल गरभका पाले । ताको सतगुरु होहिं दयाले ॥
गरभ कौल कोई चूके भाई । असंख्य जन्म चौरासी जाई ॥

साखी—गरभ कौल चूके नहीं, वोही हंस सुजान ।
चौरासी भरमें नहीं, सो पहुँचे यहि परमान ॥

राजा-वचन चौपाई

राजा कहै दोऊ कर जोरी । सुनु समरथ यह विन्ती मोरी ॥
महाकुकर्मी जो होय प्रानी । करमनसे कैसे होय छुटानी ॥

सतगुरु वचन

तव समरथ गुरु शब्द उचारा । करमन काटि करूँ निरवारा ॥
असंख्य जन्म कर्म किय आयी । पान पान में करम कटायी ॥
जो जिव कर्म करे निरवारा । पाख पाख में कर्म सुधारा ॥
विना पान नहिं कर्म कटाई । कोटिन ज्ञान करे जो भाई ॥
रेखा गुंज विचारै जानी । विना गुंज करे जिव हानी ॥
युग छत्र सो हंस उबारा । छत्र मुनी से उतरे पारा ॥
युग बन्धन ते शिष्य करीजे । असंख्य जन्मका कर्म जो छीजे ॥
जैसा जीव तैसा होय पाना । सबही करम होय छय माना ॥
लगन जैमुनि आवै हाथा । धर्मराय तेहि नावे माथा ॥
गुरुशिष्य युक्ति एकजो आवे । पारसपान छत्र मुनि पावे ॥
पान एकोतर लैहैं जोई । असंख्य जन्मका कर्म नशाई ॥

राजा वचन

राजा सतगुरु विनती लायी । लगन जैमुनि देहु बतायी ॥
लगन जैमुनी कैसे पावे । कैसे सतगुरु सों लौ लावे ॥
कौन जुगति चरनामृत लेही । कैसे करै जो बने विदेही ॥

कौन वस्तु कहां ले आवे । काह भेट गुरु आगे धरावे ॥
लोकलोक गुरु कहो समझायी । कहो हंस कहँ जाय समायी ॥
कैसे पावै लोक निवासा । कौन कौन घर करिहै वासा ॥

सतगुरु वचन

तब सतगुरु अस वचन उचारा । शिष्य होय सौंपूँ भंडारा ॥
शिष्य होय सँवारे देही । लोक द्वीपकी गम्य तब लेही ॥
शिष्य होय गुरुवश करलीजे । तन मन धनही नश्वर कीजे ॥
जो कछु आपन भक्ति करावे । पान पान सँग लोक पहुँचावे ॥
ताकी देह बनत है भाई । तामें हंस तब जाय समाई ॥
जोइ वस्तु ध्यानमाँहिं चढावे । सोई हंसा सत्यलोक पहुँचावे ॥
ताका नाम रेवती भाई । विना शिष्य कोइ पावे नाई ॥
तन मन धनको नेह न आवे । तब जिव लगन जैमुनी पावे ॥
तब राजा मन हरष अपारी । करहु शिष्य जाऊँ बलिहारी ॥

कुँवर वचन

कुँवर कहै विलम्ब किमि सारूँ । दया करो हो शीस उतारूँ ॥

रानी वचन

रानी मनमें हर्ष अनन्दा । मानों ऊगे कोटिक चन्दा ॥
तन मनसे करिहौं गुरु सेवा । हमको शिष्य करहु गुरु देवा ॥
अन्तर बात सब देहु बनायी । जैसे सीप मोती कूँ भायी ॥

सतगुरु वचन

करनी कठिन सत्य करिजानो । कहनि करनि बहुभेद बखानो ॥
कठिन करनी टले जो भाई । ताकर जीव बहुत दुख पाई ॥
शिष्ट होय जब कौल बँधावे । तन मन धन सब आनि चढावे ॥
किये कौल निबाहे पूरा । करे गुरुसेवा शिष्य सोइ शूरा ॥
पूरा होय के शूर कहावे । सतगुरु बचन सदा लौलावे ॥

---

१ भाव ।

करी कौल निर्बाहे नाहीं । ऐसो शिष्य सो यम मुख जाहीं ॥
तन मन चढावे वही सुख पावे । आखिर धन यौवन बहि जावे ॥
कौल करे सो जाल भुलाई । अँटके भव में नाहि सहाई ॥
किया कौल टालि जो देई । बहु दुख संकट माथे लेई ॥
होय दुखी दुख देह समावे । ताकी देह रोग ह्वै आवे ॥
गुरु को दोष देहु जन कोई । आज्ञा मेटे सजा तेहि होई ॥
सो जिव कदी न उतरे पारा । करन द्वेष जो गुरु से धारा ॥
अन धन ताकहँ चहिये भाई । जापर सतगुरु होंहि सहाई ॥
कर्म सतगुरू दया कटावे । साहब ध्यान सो फल यह पावे ॥
गुरू छोडि जो कर्म करावे । उन मनमें जो लीन रहावे ॥
सो नहिं पावे वस्तु अपारा । मनमें देखहु करहु विचारा ॥
सहज भक्ति करो तुम भाई । होय शिष्य नहिं डर कछु ताई ॥
सहज भक्ति राजा तुम करहू । शिष्य होइ भक्ति पद तरहू ॥
सहज भक्ति सबही सुखदाई । कठिन कमाई दुस्तर भाई ॥
कठिन कमाई खाँडेकी धारा । सहज भक्तिसे उतरो पारा ॥
सदा सुखारि भक्ति रस पीजे । सूली ऊपर घर नहिं कीजे ॥

राजा वचन

सब कर्म कठिन सहज कर जानू । तन मन धन कर लोभ न आनू ॥
हमको सीख अब देउ गुसाईं । कौल करूँ सो चूकूं नाईं ॥
जो कहुँ चूकि कौल हम जावें । अपनी करनी हम भरि पावें ॥
कौल चुके सो मूँढ गवारा । विनु स्वारथ जग होवे ख्वारा ॥
रंकके हाथ रतन जो आवे । कौडी बदले काह गवाँवे ॥
अब सतगुरु दाया मोहि कीजे । चूके कौलका फलहि कहीजे ॥
फिर कैसे सो सुख पावे । कैसे वह फिर कौलमें आवे ॥
कैसे निर्धन धनै बहोरे । कैसे रोगी रोग सो छोरे ॥
अब करु शिष्य शब्द मुहि दीजे । नहिं तो देह त्याग हम कीजे ॥

साखी—चरण वन्दुँ कर जोरिके, सतगुरु सुनो पुकार ।
लगत जैमुनि जब मिले, तबही करब अहार ॥

सतगुरु वचन—चौपाई

ऐसे कष्ट करो मत भाई । करो विचार मैं कहूँ सुनाई ॥
करो आरती साज मँगाओ । लेई पान परम सुख पाओ ॥
प्रथम सिंहासन लाइ बिछाओ । सर्वजीव एकसुरति होय आओ॥
सवा से पान जीव प्रति लाओ । सवा सेर महाकन्द मँगाओ ॥
कपडा बस्तर धातु धराओ । ताँबा पीतल बर्तन लाओ ॥
सोना रूपा मोती हीरा । लाल जवाहिर बने सो चीरा॥
जैसो साज जोई लैं आवे । तैसो हंसा देह बनावे ॥
इतनी साज नहीं बनि आवे । ताके हेतु यह गौ ठहरावे ॥
गौ नाम पृथ्वी का होई । पृथ्वी नाम यह देह संजाई ॥
सोधन चले अग्रकी धारा । अगर वास तहँ होय अपारा ॥
पान संग सो देउँ पहुँचायी । लोक जात सो बार न आयी ॥
जब सतगुरु आज्ञा फरमायी । तब राजा सब साज मँगायी॥
सब ही राज जब आनि धरावा । तब सतगुरुको तख्त बिठावा ॥
जुगति साजि चरणामृत लीन्हा । तन मन धन अर्पण करदीना ॥
पुनि सतगुरु पान सो लीना । जैसो जीव तैसो तेहि दीना ॥
पाइ पान सबही चित दीना । होय अधीन सत्य सुख लीना॥
तब सतगुरु यक वचन उचारा । सबहीको कह्यो करन विचारा॥

सतगुरु वचन

सुनु राजा यक कहूँ विचारा । मानो राजा कहा हमारा ॥
जो वस्तु तुम हम सो पाओ । राखो चेत नहिं अनत गँवाओ ॥
जुगाओ शब्दे करो कमाई । दृढ करि राखो नहिं देहु गवाँई॥
सेवा करत सुरति चलि जायी । तबहि कालघर बजे बधायी ॥
जे जिव शब्द सुरति पर चाले । सबही विधि सो होय निहाले ॥

साखी–शिष्य होय तनै छिपाइ, ताका कहूँ विचार ।
कहै कबीर निर्भय नहीं, निश्चय यमके द्वार ॥

राजा वचन--चौपाई

राजा कहै सुनो गुरु मोरा । मैं लागत हूँ चरने तोरा ॥
सहस अठासी लोक बताओ । भिन्न भिन्न कै मोहि बुझाओ॥
कौन हंस कहँ करै बसेरा । सब ही हंस कर कहँ २ डेरा ॥
उत्तर समरथ कहो बुझायी । यह सन्देह उठा मन आयी ॥
खेमसरी को कहा संदेशा । द्वादश हंस उन सँग उपदेशा॥
चारों युगका कहा संदेशा । बहुते हंस बतायो भेशा ॥
बहुते जीवहि बोध बताये । तन छूटे सब कहाँ समाये ॥
बहुत हंस पहुँचे निज ठाईं । तिनकर पता कह्यो समझाई ॥
और हंस कहाँको गयऊ । ताका बहुत संदेहा ठयऊ ॥

सतगुरु वचन

हे राजा तोहि कहि समझाऊँ । भिन्न २ के बरनि बताऊँ ॥
जे जे जीव परवाना पावैं । सो सो जीवसत्यलोक सिधावैं॥
परवाना की यहि अधिकाई । हंस विगोय ना कबहू जाई ॥
जो हंसा नहिं देह बनावे । सो सब मानसरोवर जावे ॥
मान सरोवर दीप अमाना । होइ है चार भानु परमाना ॥
परवाना की यह अधिकाई । योनि गरभ बहुरि नहिं आई ॥
ताते ताहि वृत्तान्त बतायी । सकल कामना तोर मिटायी॥
सत्य सत्य सबको समझायी । जब गुरुको चरणामृत पायी ॥
जो कछु करै सुकृत कमाई । सो सब पान पर देहि चढाई॥
हेत द्वीपमें पहुँचे जाई । तब ही हंसा देह बसाई ॥
ऐमी विधि जो पान चढावै । निज स्वरूप जीव सो पावे ॥
तापर हंस होय असवारा । पचासी पवन परे सरदारा ॥

जो ऐसी नाहीं बनि आवै । ताके पान संग वृषभ चढावे ॥
वृषभ चढावे पावे सोई । पहुप दीप रूप बहु होई ॥
वृषभ नाम नील है भाई । उनकी शोभा बहुतहिं पाई ॥
नाम नील वरन है स्वेता । ताको रूप कहा कहु केता ॥
जो वृषभ नहीं बनि आवै । तो ले गौ सो देह बनावै ॥
गौ देइ सो पान जो पावे । मंजुल करि वह हंस रहावे ॥
दश हजार सुर झलके देही । पहुँचे हंसा होय विदेही ॥
हीरा मोती लाल जवहिरा । पान चढे पुनि देह उजिहिरा ॥
बस्तर दे पुनि पान चढावे । ज्ञान दीपमें ले पहुँचावे ॥
पांच सौ सूर्य्य समान सरूपा । परसत तहाँ सो होय अनूपा ॥
कंचन रूपा धातु चढावै । तैसो शोभा देहमों पावे ॥
कहूँ पुकार करो निवैंरा । देह विना कहँ करै बसेरा ॥

राजा वचन

धरे राम सतगुरूको पाऊ । हो सतगुरु तुम हंस मुकताऊ ॥
सत्यगुरू मैं तुव बलि जाऊ । सर्व भेद तुम मोहिं बताऊ ॥
कछू न मोसे राखु दुराई । देत हौं तुमको पुरुष दुहाई ॥
जो तुम कहौ करौं मैं सोई । तुमसो दिल पतियाना मोई ॥
कृपा करो मैं प्रीति लगाऊँ । कसनी देहु सो सकल सहाऊँ ॥

सतगुरु वचन

तब सतगुरू कहे समझायी । काहे को तुम देत दुहायी ॥
सबही कहों तुम पूछो तैसी । लोक राह है सो पुनि जैसी ॥
गही बाँहि उबारूँ तोहि राई । यहि हंसन की अहे कमाई ॥
जो तुम किरिया दीन्हा मोई । कछू न तुम सों राखूं गोई ॥
यह कहि सतगुरु युगति बनाया । ले राजाको अंक मिलाया ॥
अंक मिला कटी सब माया । पारस रूप जो भई काया ॥

अंक मिलाया भये नृप पारस । उघडी दृष्टि अधिक भै आरस॥
लोक द्वीप दृष्टि में आई । भिन्न भिन्न सब द्वीप दिखाई ॥
भये राजा मन महा अनन्दा । मानो ऊगे पूरण चन्दा ॥

राजा वचन

धन सतगुरु तुम्हरी बलिहारी । बूडत जीव तुम लीन्ह उबारी ॥
अब सतगुरु प्रसाद कछु कीजै । महा प्रसाद जीवनको दीजै ॥

सतगुरु वचन

सतगुरु कहैं सुनो तुम राई । महा प्रसादकी जुगति बताई ॥
कंचन केरी थार मँगाओ । अमृतकी झारी भर लाओ ॥
आसन डारिके पुरुष बैठाओ । स्वेत बहुत सब हंस ले आओ॥
इतना करि तब चरण खटारो । होय अधीन तन मनको मारो॥
सुनि राजा सब युक्ती लीन्हा । सतगुरुको बहु बन्दन कीन्हा ॥
चरणखटारि पोंछि जब लियऊ । आसन बिठाय पुरुष कहँ दियऊ॥
तब सतगुरु अस करबे लीना । सीथ प्रसाद सबनकूं दीना ॥
पाय प्रसाद भये बड भागा । शून्य महल मन मोहरा जागा॥
कहै समरथ कहु कैसा स्वादा । कहत बनै नहिं बनत अघादा॥

साखी—महाप्रसाद के करतही, निःतत्त्व होय जाय ।
रंचक घटमें संचरे, सतगुरु लोक दिखाय ॥

राजा वचन--चौपाई

सतगुरु कहिये बात विशेखा । लोक द्वीप सबही हम देखा ॥
धन्य सतगुरु तुम्हारे बलि जाऊँ। लोक द्वीप सब दृष्टिहि पाऊँ ॥

सतगुरु वचन

चौका युक्ती नहीं बनि आवै । महा प्रसाद कै देह बनावै ॥
तुमसे राजा कहु समझायी । पाख मास में पान तुम पायी॥
पुरुष पान सो पावे जबहीं । अगम ज्ञान सो सूझे तबहीं ॥

यही ज्ञान मैं भेद समझायी । तुम हंसन से कहो बुझायी ॥
हमरो प्रतिहार पान है भाई । पलपल खबर हंसकी लाई ॥
सोई वस्तु ले लोक पहुँचावे । सोई पान संग हंसन आवे ॥
जाका तुमसे कहूँ विचारा । पान लहे सो हंस हमारा ॥
जैमुनि लगन पान जो पावे । निर्भय लोक हमारे आवे ॥
पान परख विन झूठ कडिहारा । धोखे लेइ जिवन कर भारा ॥
धर्मराय माँगि है पाना । जब ही हंसा करे निर्वाना ॥

साखी—सब ही पहुँचे लोकमें, चढै पानपर अंक ।
कटे कर्म सब जन्मके, हंस होय निःशंक ॥

हंस (राजा) वचन-चौपाई

हंस कहे सुनो गुरुदेवा । जीवकि अवधि बताओ भेवा॥
जादिन अंत अवस्था आवे । ताकर भेद हंस किमि पावे ॥
सोम शुक्र दिन औ बुधवारा । ताका कहिये चन्द्र सरदारा ॥
आपनि आपनि चौकी आवे । तौ यह जीव बहुत सुख पावे॥
चले चूक चौकी कर फेरा । तौ कायानगरमें होय बखेरा ॥
गुरूबारका भेद बताऊँ । दो भावे गुरु दरस दिखाऊँ ॥
एके आवे एक न आवे । ता दिन जीव बहुत दुःख पावे॥
बार तिथि चौकी चूक करही । तो निश्चय ना बाचे देही ॥
सरब भेद मैं तोहि बताया । विरले हंस भेद यह पाया ॥
तुम सों हंस कहूँ समझायी । गुप्त भेद ना बाहिर जायी ॥
अब हम पृथ्वी परिक्रमा जावें । भूले हसन करें चितावें ॥
तुम राजा बैठि राज कराओ । सार शब्द जपन चित लाओ॥

राजा वचन

जब सतगुरु तहँ ऐसो कहिया । तब राजा मन चिंता भइया ॥
राजा चरण धर्यो तब आई । तुम बिनु कैसे रहूँ गुसांई ॥
हमको राखो चरण लगायी । नहिं देहु सत्यलोक पठायी ॥

करक संक्रान्ति चन्द्रकी भाई। जल तत्त्व ते चन्द कहाई॥
जब चन्दा घर चन्दा सोई। रोग व्याधि शोक ना होई॥
चन्द पेलिके सूर समावे। पास छः में लोकहिं जावे॥
अब पाँच तत्त्वका कहूँ बखाना। जानेगा कोइ हंस सुजाना॥
परवत पंच काया के बारे। गुरु गम हंसा करैं विचारे॥
पीत वरन है मन्दिर बारा। तामें पुरुष दरश गुरु सारा॥
स्वेत वरन है पुरुष परमाना। ताका दरश करै कोइ स्याना॥
तीजे लालवरन पुरुष परमाना। देखत हैं सो हंस सुजाना॥
चौथा हरा रंग है मूरत। ताको ध्यान धरि देखिये सूरत॥
पाँचवें स्याम वरन अधिकारा। सो देखैं कोइ हंसा प्यारा॥
जो कोइ इनसूँ सुरति लगावे। स्वास स्वासकी खबर बतावे॥
रवि मंगल शनिश्चर वारा। तापर सूर होय असवारा॥

कालज्ञान

सतगुरु वचन

सतगुरु कहै सुनो रे भाई। अगम के भेद कहूँ समझाई॥
भिन्न भिन्न करके भेद बताऊँ। आगम कहिये दृष्टि दिखाऊँ॥
वर्ष छः मास मासका भाऊँ। पाख आठदिन बरनि सुनाऊँ॥
इंगला पिंगला सुषुमनि नारी। चलै लगन सो लेहु विचारी॥
पाँच तत्त्व हैं उनके पासा। वह सब आगम कहैं तमासा॥
स्याना हंस होय जो भाई। तिनको अगम देहुं बताई॥
छः मासका भेद बताऊँ। अगम लहो सो कहि समुझाऊँ॥
दोय संक्रन्तिका भेद बतायी। एक मकर दूजा करक कहायी॥
मकर संक्रान्ति सूरज सो देखा। तत्त्व पृथ्वी स्वर सूर विशेखा॥
जो सूर घर सूरज आवे। छः मास काया सुख पावे॥
सूरज पेलि चन्द जो आवे। छः मासमें जीव चलावे॥

पल पल राय नवावे माथा । मोको कैसे छुडाओ साथा ॥
गुरु विन कैसे रहौं अकेला । दिग दिग होये जीव न चेला ॥

सतगुरु वचन

सतगुरु कहै सुनो मोर भाई । हम संगे रहो लै जाउँ लिवाई॥
सदा रहो हंसन के पासा । हमको रहै हंसनकी आसा ॥
देह सो दर्शन तुम्हें दिये राई । विदेही होय संग रहुँ सहाई ॥
विदेही दरश जब हंस पावे । देखि दरश होय अधिक उछावे॥
सतगुरु चलन खबर सब पावा । धीरे धीरे सब हंसा आवा ॥
आये हंसा विन्ती करहीं । हे साहब हम धीर कस धरहीं ॥
जो तुम जाओ सतगुरु साहब । हमहु संग सब तुम्हरे आयब ॥
तुम विनु गुरु कैसे रहि जावे । जल विनु मच्छी ज्यों तडपावे॥
हम पाये आनँद दरश तुम्हारे । मोको न छोडो स्वामि हमारे ॥

सतगुरु वचन

काहे को हठ करत हौ भाई । सबही हंस सुनो चित लाई ॥
देह धरी अब करो सुख वासा । सदा रखो निज नामकी आसा॥
घर में रहि कुल धर्म निवाहो ।जो सब साँचि भक्ति तुम चाहो॥

सबहंस वचन

माता पिता त्रिया नहिं चहिये । सुत नारीसे नहिं नेह लगैये ॥
सतगुरु तुमही हौ यक सांचा । झूठ और सकल जग काचा ॥
विना दर्श सो दुख हम पावें । नित चरणामृत कहँसे लावें ॥
तुम विनु देह छुटि सो जावे । कहँ गुरुवचन बहुरि सो पावे ॥
विना दरश सब जगकी माया । सबहि छुटे नहिं चहिये काया॥

सतगुरु वचन

सतगुरु कहै सुनो रे भाई । सबही रहो नाम लौ लायी ॥
सदा रहूँ मैं उनके पासा । धरे ध्यान जो सांचकी आसा॥

सुनो हंस गहो पद सांची । ध्यान विदेह में रहि हो रांची ॥
इतना कहि सतगुरु बतलावा । सबको विदेह ध्यान समझावा ॥
ध्यान पाइ आनन्द सबै भयऊ । सतगुरु दरश प्रत्यक्षहि पयऊ ॥
फिर सतगुरु राजहिं समझावा । सब हंसन को करहु चितावा ॥
पुनि हंसनसे अस प्रभु भाख्यो । हमरे ठौर राय तुहि राख्यो ॥
हम सम रायको सबही जानो । हमसन राय को अन्त न मानो ॥
तब सदगुरु तहँ ते पगुधारा । सब हंसन दुख भयो अपारा ॥
चलत गुरु सब सीस नवाया । करि मिलाप गुरु कण्ठ लगाया ॥
तुम सों राजा कहु चितायी । रहो सदा शब्द लवलायी ॥
चले गुरु समरथ जेही बारा । रोवैं हंस बहैं जल धारा ॥
जैसे रंकहि रतन हिराना । जैसे भुजंग मणी विसराना ॥
मानि सतगुरु आज्ञा लीना । विदेह ध्यान गुरु दर्शन दीना ॥
ध्यान पाइ गुरु करैं सब भक्ती । काल नाल सब छूटी युक्ती ॥
केते दिवस ऐसे चलि गयऊ । तबहीं राजा आगम पयऊ ॥
सब हंसनको वेगि बुलायी । राजा कहै शब्द बतलायी ॥

राजा वचन

जेहि कारण हम भक्ति कराई । सो दिन अब पहुँचा है आई ॥
ताल पखावज वेगि लै आओ । शब्द चलावा मंगल गाओ ॥
बाजा बाजे बहुत वधायी । सबै त्रिया मिलि मंगल गायी ॥
सब ही लोक खबर यह पायी । राय जगजीवन लोक सिधायी ॥
पाटन नगर में बहुत उछावा । घर घर तिरिया करे वधावा ॥
बैठे राजा आसन धारी । जुरे हंस जहँ बहुत अपारी ॥
लै परवाना बन्दगी कीना । सबही हंस परिकरमा दीना ॥
रानी पांच कुवँर दोय जाना । ❋ दासी चार हजूरी साना ॥

•इसके विरुद्ध दूसरी पुस्तकोंमें इस प्रकार लिखा है

जब राजा यक शब्द उचारा । कौन कौन चलैं हमारे सारा ॥—

चार प्रधान सात उमराऊ । प्रोहित दोय हिये मन भाऊ ॥
इतना जन परवाना लीना । राजा संग सो प्याना कीना ॥
पावत बीरा जिव निस्तारेऊ । अमर लोक कहँ प्याना धारेउ ॥
दशम द्वार सो न्यारा द्वारा । जेही राह हँस पगु धारा ॥
धन्य भाग हंसन तब जाना । राजाके संग कीन पयाना ॥
आये प्रथम धरम के डेरा । जहँ चौतरा रायधरम केरा ॥
धर्मराय जब लेखा मांगा । तब हंसा लेखा देने लागा ॥
जिन जिन कौल चुकाने भाई । सो सो रहे धर्मकी ठाई ॥

जीव वचन धर्मराय प्रति

जीव कहे सुनो धर्मराया । हम सतगुरुका परवाना पाया ॥
ज्ञान ध्यान हम बहुते जाने । और जाने अमर सो ज्ञाने ॥
हमको तुम काहे रोकत भाई । संगी हमारे आगे चले जाई ॥

धर्मरायवचन

भूला जीव मुख करे चतुरायी । ऐसी बतन मुक्ति न पायी ॥
साखी गावे सब संसारा । का सबही जिव उतरे पारा ॥
जो जीव होएँ कौलके साचा । तिन सबपर हम पाले बाचा ॥
सतगुरु सेवा कीन बनायी । हमरे शिरसु पावँ धरि जायी ॥
भक्ति हीन छुए अंग हमारा । छूवत अंग होय जरि छारा ॥

—तब इतने हंस आगे पगुधारा । संग जान को कीन बीचारा ॥
रानी पांच कुवँर दोय जानी । दासी अष्ट नव हजुरी सानी ॥
पांच प्रधान ग्यारह उमराओ । छठो दार सातसो मन लाओ ॥
बारह कायस्थ सत्रह साहुका । । बढई चार अरु सात सुहारा ॥
सत्रह सुनार अठारह बनजारा । चौकीदार चले संग चारा ॥
नव कुरमी सत्रह कोरी । तेरह कुम्हार सबै सर मोरी ॥
धोबी उजला धोवन हारा । पांच चले राजाको लारा ॥
छः चमार बन्दगी कीना । राजा के संग प्याना दीना ॥
पावें बीरा जीव चलाया । निकसा जीव ठाकरी पठाया ॥

चार सहस्र से सात रु बावन । इतना जिय चलु लोकहिं ठावन॥
दोसै कौल चुकाने भाई । सो रहे धर्म राय की ठाई ॥
चार हजार सात से बावन । दोय से धरमराज ठहरावन ॥
चार हजार बावन से पाँचा । मानसरोवर पहुँचो सो साँचा ॥
जहाँ कामिनी मंगल गावे । सजि आरति ले आगे आवे ॥

कामिनी वचन

करी निछावर बूझे बाता । कैसे आये यहि मग धाता ॥
माया मोह बन्ध्यो संसारा । कैसे छाडे कुल परिवारा ॥

हंस वचन

कहे हंस सतगुरु गम दीन्हा । जब हम दर्शन तुम्हारा लीन्हा॥
देह बनी सो आगे आये । रहिता सब जिव वहाँ रहाये ॥
चार हजार एकसौ बावन । एते हंस तेहीं ठावन ॥
चार सो आगे किया पयाना । हेतु द्वीप पहुँचे अस्थाना ॥
मान सरोवर हंस रहायी । सब मिलि करहिं बहुत बधायी॥
सब पूछे कामिनि सों बाता । यह सब हंस कहां को जाता ॥

कामिनी वचन

कह कामिनि सुनु हंसा भाई । तुम गुरु कर कह कीन कमाई ॥
परवाना की यहे बडावा । सो तुम मानसरोवर आवा ॥
उन हंसन गुरु भक्ति करायी । जुगति जुगति उन देह बनायी॥
आगे हेत द्वीप में जैहैं । हंस सुजन जन कंठ लगै हैं ॥

हंस वचन

सब हंसा मिलि विनती कीन्हा । हम चाहें तुव दर्शन लीन्हा ॥

साखी–बैठि हंस विन्ती करे, सुनु समरथ अरदास ।
देही सवारे लोकमें, उपजे प्रेम विलास ॥

चौपाई—सुजनजन वचन

हंस सुजन जन कहैं सुनायी। सबही हंसा सुनो चितलायी ॥
जैसी देह सवाँरी हंसा। तैसी लेहु हमारे पंसा ॥

हंस वचन

चरणामृतहि तुर्त सो लीना। कैसी महिमा गुरु की कीना ॥

हंस सुजनजन वचन

कितने पान शिष होये पायी। कौन वस्तु तुम पान चढायी ॥
जैसी वस्तु संसार चढावै। वैसी देह इहाँ सो पावै ॥
इहाँ मोती वहाँ हीरा लैहो। तेहि सम रूप देह सो पैहो ॥
जैसी सवाँरे देह तुम दासा। वैसे लोक करो तुम वासा ॥
जिन वहि अवसर देह बनायी। मंजुल करी में बैठक पाई ॥
द्वादश सहस सुर हंसनको रूपा। बैठे हंस दीप सम भूपा ॥
गो चढाय पान जिन लीन्हा। पुहुप दीप तिन हंसा चीन्हा ॥
आठ हजार सुरज परकासू। सब आनन्द होय सुख बासू ॥
वृषभ चढाय पान जो पावे। मंजु लोकमहँ हंस सो जावे ॥
दश सहस सूर छवि छाजे। बैठे हंसा राज विराजे ॥
हीरा मोती लै पान जो पावे। उदय द्वीप में हंसा जावे ॥
तेहि हंस में सुरज की जोती। झलके रोम में जैसे मोती ॥
वस्तर देइके देह बनावे। सो हंसा सुख सागर पावे ॥
वह तो ज्ञान द्वीप में जावें। चार सुरज ज्योति तिन पावें ॥
पैसा धातु बर्तन लायी। सुख सागरमें ध्यान लगायी ॥
पैहैं सो षोडश भानु सरूपा। बसे सो हंसा द्वीप समीपा ॥
तीन से बत्तिस जिन देहबनाये। आपन आपन द्वीप सिधाये ॥
पैसठ हंस पहुंचे निज ठाई। जिन तो इल्म फकीरी पाई ॥
कहै सुजन जन सुनो रे भाई। धनि धनि तुमरी अधिककमाई॥
तुम्हरी सरवर कोउ न कीन्हा। तुम तो गुरुको वश कर लीन्हा॥

तन मन धनकी कौन चलायी । तुम तो आपा दिय बिसरायी॥
इन सब हंसन देह बनायी । तुम तो देही गुन बिसरायी ॥
जो तुम कहो करौं मैं सोई । तुमरी सरवर नाहीं कोई ॥
सुरति तुम्हारी अधिक सहाई । सतगुरु तुमरे प्राण समायी ॥
यह वस्तु तुम कैसे चीन्हा । कैसे गुरुको वश करि लीन्हा ॥
कैसे तन आशा बिसरायी । कैसे इल्म फकीरी पायी ॥
सब हंसनकी देह बनाऊँ । ताको तैसो दीप मिलाऊँ ॥
सतगुरु वशि करि राखे पासा । सुनो हंस मुँहि तुमरी आशा ॥
सदा सतगुरू हंस सनेही । तुम अर्पित सतगुरुकी देही ॥
सदा करे सतगुरु की पूजा । तुमसा हंस न देखा दूजा ॥

हंस वचन

हंस कहे सुन पुरुष पुराना । हम कहँ जाने जीव अजाना ॥
हम तो हते भवजल के माहीं । महा अन्ध कछु सूझत नाहीं ॥
तब समरथ गुरु आनि चिताया। बूडत देखि उबारन आया ॥
जो गुरु कहा सोई हम कीन्हा । एक गुरू बिनु और न चीन्हा॥
तिनसों पूछ कीन कर जोरी । समरथ मानो विन्ती मोरी ॥
हम नहिं चाहें लोक औ द्वीपा । सदा रहैं गुरु चरण समीपा ॥
तब गुरु कह्यो सुनो रे भाई । सर्व ज्ञान का मूल बताई ॥
हमरे संग रहा जो चाहो । नौतम सुरति कि देह बनाओ ॥
और सकल झूठ कर जानो । एक गुरू हम सांचे मानो ॥
तन मन धन सो बदला कीना । तब गुरु इल्म फकीरी दीना ॥
तब गुरु आपा दिया मिटायी । देहीको गुण दियो विसरायी ॥
पान इकोत्तर सैं हम पाये । पानपान हम देह बनाये ॥
लोक द्वीप इम कछू न चाहा । हमको सतगुरु दरशकि लाहा॥
हंसा सुरति गुरूकी कीन्हा । स्वरूप सहित गुरुदर्शन दीन्हा॥
सब ही हंस धरेउ गुरु पाऊ । करि बन्दगि सब सीस नवाऊ॥

सतगुरु वचन

सतगुरु कहै हंस सुनु बाता। कहां वे जीव तुम्हारे साथा ॥

हंस सुजनजन वचन

हंस सुजन मिलि अंक लगाये। कहो हंस कस कीन कमाये ॥

सतगुरु वचन

इनकी मैं का करूं बडाई। ये तो सब निज हंसा आई ॥
निश्चय बात हमारी मानी। काया माया खाके जानी ॥
सतगुरु हंसको लोक चढायी। सहस अठासी द्वीप दिखायी ॥
जेहि जेहि हंस सवारी काया। द्वीप द्वीप सब दृष्टि बताया ॥
देखो हंस कह सब अस्थाना। देखो द्वीप सबही मन माना ॥
सबहीं हंस करे पछतावा। यह गति हम वहां नाहीं पावा॥
लै हंसनको पहुँचे तहँवा। महापुरुष विराजे जहँवा ॥

साखी-द्वीप वर्नन कह कहौं, सबैं मनोरथ काज।
सब द्वीपनते न्यार है, सत्यपुरुष को राज ॥

चौपाई

जब हंसनको ले पहुँचाये। तब सतपुरुष उठि कंठ लगाये॥
जब ही पुरुष अंक भरि लीना। पारस देह सब हंसन कीना ॥

पुरुष वचन

कहै पुरुष ज्ञानी भल आये। इतने हंस कवन विधि लाये ॥

ज्ञानी वचन

ये तव जानो पुरुष पुराना। मैं केहि मुख सों करौं बखाना॥
चार हजार सातसों बावन पाये। एते हंस दरश तुव आये ॥
सबही आये लोक मँझारा। दुइ से रोके धरम बटपारा ॥
कौल किया पुनि गये भुलायी। पांजी द्वार धरम पर जायी ॥
मान सरोवर केते रहाये। उनको देही नाहिं बनाये ॥

और द्वीपन सब कीन बसारा । जैसी हंसन देह सँवारा ॥
इन तन मन सो बदला कीना । शिष्य होय इन वस्तुहि लीना ॥
जो सब सुना है ग्रन्थन नामा । सोई सब कीना इन कामा ॥
एकोत्तरसै पान इन पावा । नौ तम सुरती देह बनावा ॥
नेह कीन घर रहै जग मारी । काया के गुण दिया बिसारी ॥
कसनी कसि सो तन बदले चीन्हा । गुरुको इन सब वशकरि लीन्हा ॥
जीवत मृतक होय रहे जगमाहीं । जासें दरस तुम्हारा पाहीं ॥
सुनिके पुरुष हरष बहु कीना । फिर फिर हंस अंक भर लीना ॥
कहा देउ तोहि हंस बडाई । तुम तोको अमर लोक चलि आई
अरध सिंहासन आसन पाये । सब हंसन शिर छत्र धराये ॥
हर्षित बदन औ बहुत हुलासा । सदा रहो तुम हमरे पासा ॥
बैठ्यो महा पुरुष दरबारा । कोटिन सूर हंस उजियारा ॥
अमृत फलका करो अहारा । धन्य हंस बडभाग तुम्हारा ॥

पुरुष वचन–ज्ञानीप्रति

ज्ञानी फेर जाओ संसारा । पृथ्वी जाय करो विस्तारा ॥
सबसों कहियो यहि उपदेशा । सब ही चलो पुरुषके देशा ॥

साखी–कहै कबीर सुख अति धनो, पूरण प्रेम विलास ।
यह सब जीव चितावनि, जगजीवन परकाश ॥

इति श्रीबोधसागरांतर्गत जगजीवनबोध-

नामक पंचमस्तरंगः समाप्तः

श्रीग्रन्थ जगजीवनबोध समाप्त

परिशिष्ट भाग

ग्रन्थसार

संसारमें जन्म लेनाही दुःखके महासागरमें पडना है। जन्मही शोकका सागर और भयका पहाड है जन्मही अनेक कर्मोका घर,

पातककी खान और कालके दुःख देनेका स्थान है। जन्म कुविद्या का फल, लोभका कमल और ज्ञानका आवरण है। जन्म ही जीवका बन्धन, मृत्युका कारण और अन्त जंजालोंके मूल है। जन्म ही सांचे सुखका छल, चिंताका जंगल और वासनाओंका विस्तार है। जीवकी मिथ्या दशा, कल्पनाका भण्डार और ममतारूपी डाकिनीका लीला स्थान जन्म ही है। मायाकी लीलाकी रंगभूमि, तमोगुणकी गहरी और भयानक कूप और जीवको मोक्षमार्गसे भटकानेका जड जन्म ही है। जीवको मिथ्या देहाभिमानमें फँसाकर सत्य पदसे भ्रष्ट कर कालके नाना पाशोंमें फसानेवाला जन्मके सिवाय दूसरा कौन है ? यदि जन्म न हो तो शरीरकी झूठी ममतामें पड़ा हुआ यह जीव मिथ्या विषय-वासनामें लगकर अपने सत्य ज्ञानस्वरूपको भूलकर मिथ्या आशा और झूठी तृष्णामें फँसकर क्यों कालका चारा बने! यदि जीव शरीरके साथ सम्बद्ध न होता तो इसे नाना प्रकारकी विपत्ति और संकटमें पड़कर दुःख उठानेकी क्या आवश्यकता थी? जन्म लेनेवाले शरीरका मूल विचार करनेपर इस शरीर ऐसी अपवित्र वस्तु कोई भी नहीं मिलती। रजोदर्शनवाली स्त्रीके मासिकस्रावके पश्चात् बचे हुए और पिताके शरीरसे निकलते हुए अपवित्र वीर्य्य द्वारा इस शरीरकी उत्पत्ति है। जब ऐसी अपवित्र वस्तुओंके संयोगसे यह शरीर बना है तब इसमें पवित्रताका कहां पता है। स्त्रीके रक्तके औटाने पर इस शरीरका लोथडा बनता है यद्यपि ऊपरसे देखनेमें अपवित्र जनोंको यह सुन्दर देख पडता है तथापि भीतर तो वैसेही घृणित नरकका थैला बना हुआ है, फिर यह शरीर कैसा देख पडता है, जैसे चमडे भिगोनेका चमारका कुण्ड हो। चमारका कुण्ड तो

धोनेसे शुद्ध भी हो जाता है,किन्तु इसे नित्य प्रति धोने पर भी न इसकी दुर्गन्धि जाती है न इसमें पवित्रता आती है।

हड्डियोंकी ठठरी बनाकर उसमें नस और नाडियोंका बन्धन लगाया है और मेद और मांससे इसे जोडा है, जिस लोहूका नाम ही अशुद्ध है उसी रक्तसे इस शरीरकी जब बनावट है तब इसकी पवित्रताका क्या ठिकाना है ? शरीर दुर्गन्धिसे भरा है क्योंकि अन्दर बाहर मलिन वस्तुओंसे ही इसकी बनावट हुई है। समस्त शरीरमें शिर सबसे श्रेष्ठ कहा जाता है, किन्तु उसमें भी नाकमें से सदा दुर्गन्धि बहा करती है और कान पकनेपर ऐसी दुर्गन्धि निकलती है कि, निकट भी खडा नहीं रहा जाता। आंखमेंसे कीचड और मुँहमेंसे थूक, लार और दुर्गन्धि निकला करती है। इस प्रकारसे समस्त शरीर अपवित्र और मलिन वस्तुओंसे बना हुआ है।

उत्तमसे उत्तम पदार्थ भी भोजन कर लेनेपर वह कई घण्टोंही में घृणित मल बन जाता है। निर्मल शुद्ध जल पीनेसे शरीरके संयोग द्वारा वह मूत्र हो जाता है और इन्हीं पदार्थोंसे शरीरका पोषण भी होता है,राजासे प्रजातक महान भक्त,राजासे महान पापी अघकर्मीतक सबके पेटमें ये अपवित्र पदार्थ भरे हुए हैं और इन अपवित्र पदार्थोंका शरीरसे ऐसा सम्बन्ध है कि यदि कोई इन मलोंको शरीरसे निकाल कर शरीरको शुद्ध करना चाहे तो तुरत ही प्राणी मृत्युको प्राप्त होवे। जिस समयमें यह जीव अपनी वासनाके अनुसार शरीर धारण कर माताके गर्भमें प्रवेश करता है और नव महीनेतक यह शरीर माताके उदरमें रहता है, उसमें नाक मुँह आदि नवों दर्वाजे बन्द होते हैं और जिस समय वायुका तो प्रवेश भी नहीं होता,

उस समय में माताके शरीर से जो अपवित्र रक्त निकलता है उसकी गर्मी द्वारा हड्डी और मांस जलता है। ऊपरसे चमडेकी थैली न होने के कारण बालकका मांसमय शरीर माताके तीखे चरपरे आदि पदार्थोंके सेवनसे महान कष्टित होता है। गर्भके ऊपर एक सपेद २ चमडा लपेटा होता है और गर्भ मलमूत्र के नरक कुण्डके निकटही होता है तथा उसकी नाभिमें एक नली लगी होती है जिसके द्वारा गर्भका पोषण होता है। वात पित्त तथा विष्टा आदि अनेक अपवित्र पदार्थोंसे और नाना प्रकारके पेट के कीडोंके नाक तथा मुँहके पास फिरनेपर बालकका मन घबराता है। इस प्रकारसे अनेक असंख्य कष्टमें नव महीना तक कैद हुये जीवको अत्यन्त कष्ट और दुःखके कारण इसे प्रभु सद्गुरुका स्मरण आता है तब उस समय अत्यन्त विनीत भावसे प्रार्थना करता है कि, 'हे सद्गुरु! हे परमात्मन्! यदि इस बार कृपा करके मुझे इस कष्टमें से छुटकारा दे तो मैं अपने आत्माके कल्याणके मार्गको धारण कर फिरसे ऐसे कष्टमें आने से छुटकारा कर लूँगा" इसही प्रकार से अनेक समयतक प्रार्थना करते करते प्रभुकी कृपासे समय पूरा होनेपर माताके पेट में पीडा आरम्भ होती है। उस समयमें मुँह नाक और मस्तिष्क जो श्वासके मार्ग हैं। मांसके टुकडोंसे एकदम बन्द होजाते हैं, श्वासोच्छ्वासका द्वार बन्द होते ही बालकको मूर्छा आती है और जीव अचेतनावस्थामें तडफडाने लगता है। तडफडानेमें यदि शरीर आडा टेडा हुआ तब बाहरवाले लोग गर्भको काटकर निकालनेकी सम्मति देते हैं। यदि किसी युक्तिसे ठीक हुआ तो हुआ नहीं तो हाथ डालकर बालकका जोई अंग हाथ आया उसीको काटना आरम्भ करते हैं और क्रमशः काटकर उसे बाहर निकालते हैं। बहुत बार ऐसा होता है कि, स्वयम् बालक तो मरता ही है उसके

साथ २ माताका भी प्राण नाश होता है। यदि पूर्व पुण्यकी सहायतासे शरीर सीधाही बाहर निकला तब प्रथम शिर बाहर आता है, मार्ग छोटा होनेसे धाई सिरको पकडकर बल पूर्वक बाहर खींचती है इसमें भी कभी २ ऐसा होता है कि शिर बाहर निकला और धड उसमें ही अटक जाता है। उस दशामें बालककी मृत्यु होती है और संयोगसे माता बच गयी तो बालकके शरीरको काटकर बाहर निकालते हैं। यदि पुण्यवश सकल शरीर बाहर निकल आया और बालक जीता जागता रहा तो बाहर आतेही बाहर के पवन लगनेसे बालकको इतना कष्ट होता है कि, मानो सहस्र बिछुवोंने एकसाही डंक मारा है ऐसे असह्य कष्ट के कारण कभी २ बालक अचेत हो जाता है तब उसको चेत दिलाने के लिये नाना प्रकारके उपाय किये जाते हैं। कभी बालक को च्यूंटी काटकर जगाते हैं और कभी २ शस्त्रका प्रयोग भी करना पडता है। और जब बालक रोता है तब सबको आनन्द आता है इस प्रकार से महान कष्ट भोगकर यह जीव जब बाहर निकल कर संसारके पदार्थोंको देखता है और नाना प्रकार के मोहमें फँसानेवाली मायाके जाल माता पितादि की प्यारी प्यारी बातों को सुनता है तब गर्भ के कष्ट और प्रार्थना तथा वचन को भूलकर मोह माया में फँसता है और जगतके नाना प्रकारके क्षणिक सुख और दुःखमें पडा हुआ यह, साहिब और अपने स्वरूप को भूलकर भी कभी याद नहीं करता। इस प्रकारका गर्भका दुःख सर्व प्राणीको होता है, वही कथा इस ग्रन्थमें जगजीवन (जीव) के बहाने से ग्रन्थकारने लिखकर सबको उपदेश दिया है।

इति

—

श्रीसद्गुरुभ्यो नमः

अथ श्रीबोधसागरे

षष्ठस्तरंगः

ग्रन्थ गरुडबोध

सोरठा–गुण गण जेहि अशेष, बने न वर्णत सहसमुख ।
वंदौं सोइ हंसेश, सत्यकबीर जो प्रगट जग ॥

धर्मदास वचन

साखी–धरमदास बिन्ती करै, सुनहु जगत उधार ।
गरुड बोधको भेव सो, अब कहहु यहि बार ॥

सतगुरु वचन

सत गुरु कहन तबहिं अस लागे। गरुड सो ज्ञान जेहि विधि पागे॥

सत्य पुरुष वचन

आप पुरुष यक शब्द उचारा । हो सुकृत तुम जाहु संसारा ॥
नाम पान तुम लेहु हमारा । जाय छुडायहु जिव संसारा ॥
सत्य लोक ते करहु प्यानी । लेहु शब्द तुम बहुविधि बानी॥
लेहु शब्द अजरमनि ज्ञानी । सत्य शब्द बोलहु सहिदानी॥
आज्ञा मानि हमारी लेहू । जाय पाँव पृथ्वी तुम देहू ॥
कहो सबन सों शब्द बुझायी । भक्ति प्रताप सत्तनाम सहायी॥

ज्ञानी वचन

तब ज्ञानी उठि मस्तक नावा । तुव प्रताप हम हंस छुडावा ॥
जुगन जुगन में हमहिं सिधाये । जिन माना तिनही मुकुताये ॥

तब साहब मोहि दाया कीन्हा । बचन मानि हम शिरपर लीन्हा ॥
करि प्रणाम परदक्षिन कीन्हा । पाछे जगहिं पयाना दीन्हा ॥
यही भाँति धर्मनि जग आवा । बहुत भाँतिते जिव समझावा ॥
प्रथम गरुडसे भेंट जब भयऊ । सत्य नाम कह बोल सुनयऊ ॥
धर्मदास सुनु कह्यो बुझायी । जेहि विधिसे ताही समझायी ॥

गरुड़ वचन

शीश नाइ तिन पूछा भाये । हौ तुम कौन कहाँसे आये ॥
कौन दिशा ते तुम चलि आऊ । अपनो नाम कही समझाऊ ॥

ज्ञानी वचन

कह ज्ञानी है नाम हमारा । दीक्षा देन आयऊ संसारा ॥
सत्यलोक से हम चलि आये । जीव छुडावन जग महँ आये ॥
सत्यपुरुष मोहि आज्ञा दीन्हा । सत्य शब्द हम लेइ तब लीन्हा ॥

गरुड़ वचन

सुनत गरुड़ अचम्भो माना । सत्य पुरुष आही को आना ॥
प्रत्यक्ष देव कृष्ण कहावें । दश औतार सो धरि धरि आवें ॥

ज्ञानी वचन

तब हम कहा सुनहु तुम स्याना । सत्य पुरुष तुम नहिं पहिचाना ॥
अवतारन का कहो विचारा । इतने साहिब रहें नियारा ॥
जाकर कीन्ह सकल विस्तारा । सो साहब नहिं जग औतारा ॥
योनी संकट वह नहिं आवे । वह तो साहब अछय रहावे ॥
जहाँ लगे जो जगमें आये । तहाँ लगि सबही अंश कहाये ॥

साखी—ताते साहब अछय है, तीन लोक सों न्यार ।
योनि संकट ना आवई, ना वह लेइ औतार ॥

गरुड़ वचन—चौपाई

तबही गरुड जो बोलहिं बानी । कौने देश बसन है ज्ञानी ॥
हम वाहन हैं कृष्ण के भाई । तिनकी गति तुमहूं नहिं पाई ॥

तीनि लोकके ठाकुर आही । तिनके आगे कौनको शाही ॥
तीनि लोकके ठाकुर कहिये । तिनके और कौनको गहिये ॥
सोई मोहि अब देहु बतायी । मोरे मन चिंता समुहायी ॥
दूसर कौन सो देहु बतायी । हमरे मन गुमान नहिं आयी ॥

ज्ञानी वचन

सुनहु गरुड यक वचन हमारा । वह साहब है सबसे न्यारा ॥
यह तो सबै ईश्वरी माया । उपजहिं विनसहिं बहुरि विलाया ॥
वह नहिं आवे नहीं जाहीं । वह तो सदा अजर घरमाहीं ॥
उनकी आज्ञा इन पर आवें । तब इन गरभ वास सो पावें ॥
तुम पर सदा कृष्ण असवारी । काहे न दाया करहिं विचारी ॥
हम तो शब्द संदेशी आये । योनी संकट नहिं निरमाये ॥
तब हम उसको तत्त्व लखावा । होइ विदेह तब वचन सुनावा ॥

गरुड वचन

तबही गरुडे अस्तुति ठानी । तुम साहिब निर्गुण सहिदानी ॥
तुमहो प्रभू सगुण ते न्यारा । निर्गुण तत्त्व साहिब विस्तारा ॥
धरि अस्थूल मोहि दरश दिखावा । निर्गुण शब्द प्रभु मोहि सुनावा ॥
अब गुरु मैं बन्दों तव पायो । अब जाना प्रभु तुम्हरो भायो ॥
निज प्रतीति हमरे मन आऊ । हंसराज मोहि दरश दिखाऊ ॥
अब प्रभु मोहीं दर्शन दीजे । हंस उबार आपन करि लीजे ॥
भेद तुम्हार सकल मैं पाया । धरि स्वरूप तुम दरश दिखाया ॥

ज्ञानी वचन

देह धरी हम दरशन दीना । तब उन चरणबन्दना कीन्हा ॥

गरुड वचन

शीश नाइ चरणन लपटाये । अब साहब मोहिं लेहु बचाये ॥
साखी–निर्गुण प्राण अधार तुम, दरश दीन्ह प्रभु आय ।
आपन करि समझावहू, लेहु जीव मुकुताय ॥

ज्ञानी वचन—चौपाई

अहो गरुड तुम चीन्हा भाई । दे परवान लेऊँ मुकुताई ॥
बाहर भीतर सबै बताओं । तुमसों गरूड कछू न छिपाओं॥
अब तुम जाहु कृष्णके पासा । आज्ञा मानिके करहु विलासा ॥
आज्ञा मांगि कृष्णसे आओ । तब आरति विस्तार बनाओ ॥
तबही गरुड गये पुनि तहवाँ । श्रीकृष्ण बैठे रहे जहवाँ ॥
जाइ गरूड तब विन्ती लाई ।

गरुड वचन श्रीकृष्ण प्रति

तुम प्रभु सदा संत सुखदाई ॥
हम यक निर्गुण भेद जो पाया । ताका हम प्रभु विन्ती लाया ॥
ओय कवीर सत्यलोकसे आये । तिन मोहि भेद कही समझाये ॥
उन अन्तर नहिं ऐसो दिढावा । निज साहब नहिं पृथ्वी आवा ॥
नाम कवीर उन आप धराया । यह शब्द उनही भाष सुनाया ॥
निर्गुण भेद सबनते न्यारा । अस उन हमसो कीन्ह पुकारा ॥
जो मोहि आज्ञा करो गुसाईं । तो उनको गुरु करिये जाई ॥
दाया करि मोहि आज्ञा दीजै । सो हममानि अपन फिर लीजे॥

श्रीकृष्ण वचन

सुनिके कृष्ण उतर तब दीन्हा । भले गरूड तुम उनको चीन्हा॥
भले गरूड तुम पूछा आयी । दुविधा दुर्मति कपट नशायी॥
जो यह भेद गुप्त करि रखते । हमसों तुमसों अन्तर पढ़ते ॥
जो तुम हमसों पूछो भाई । उनकर भेद है अगम उपाई ॥
वह निर्गुण हम सर्गुण भाई । निर्गुण सर्गुण बहु बीच रहाई॥
हम सर्गुण कई बार औतारा । वह साहिब है सबते न्यारा ॥
जाकर पठाये वह यहँ आये । तिनही पुनि हम कहँ निर्माये ॥
उन आज्ञा जब कीन्ह उचारा । तब हम लीन जोइनि औतारा॥
जो कवीर अहहीं अर्थाई । सोई वचन सत्य है भाई ॥

गरुड वचन

गरुड कहे तब काहे न भाषा । कैसे मोहि छिपाइके राखा ॥
निर्गुण भेद प्रभु मोहि छिपायी । सगुण भेद दीन्हा फैलायी ॥

श्रीकृष्ण वचन

सुनो गरुड यक शब्द निदाना । निर्गुण भेद कोइ विरले जाना ॥
देह धरी हम क्रीडा कीन्हा । यहै मानि सब काहू लीन्हा ॥
हम गीता महँ सन्धि जनाई । ताको कोइ न चीन्हे भाई ॥
निर्भय भक्ति कह्यो परमाना । ताकर भेद काहु नहिं जाना ॥
पढि गीता पण्डित बौराये । अर्थ भेद को गम नहिं पाये ॥
पढि गीता औरहि समुझावे । आप भरममें जन्म गमावे ॥
करै अचार छूतिके माने । औरनको हीनहि करि जाने ॥
सर्वमयी हमहीं सब माहीं । पण्डित अँधरे समुझत नाहीं ॥
हम सबमें सब हमरे माहीं । हमते भिन्न कोइ जानत नाहीं ॥
करै सो कौन अचार विचारा । पण्डित भूले धरि हंकारा ॥
सर्वमयी है नाम हमारा । पण्डित अर्थ न करै विचारा ॥
कहि गीता हम सब समझायी । गीता पढै समुझि नहिं जायी ॥
कब हम पूजा नेम बतावा । कब हम जीव घात फरमावा ॥
ब्रह्मा विष्णु और शिव कहवाये । इन तीनों मिलि बाजी लाये ॥
तेहि बाजी अटका सब कोई । निर्गुण गमि कैसे के होई ॥
बाजी लायके जग भरमाया । निर्गुणकी गति काहु न पाया ॥
जो जो कछु हम कहा उचारी । सो काहु नहिं दृष्टि निहारी ॥
हम जानहिं सब भेद अवगाहा । और देव नहिं पावहिं थाहा ॥
ब्रह्मा विष्णु शिव बाजी लाये । उन काहू नहिं और सुहाये ॥
अपस्वारथसों बहुविधि लीन्हा । परमारथ काहू नहिं चीन्हा ॥
गीता मथी कही समझायी । सो अर्जुन नहिं जानी भाई ॥
चारि वेद मथि गीता कही । सो अर्जुन निज मानी सही ॥

श्रवण लगाय गीता उन सुनी । रहनि गहनि एको नहिं गुनी ॥
रहनि गहनि उनहूं नहिं पायी । अर्थ सुनी सब कान उडायी ॥
सुनि सुनि सो सब जग अरुझावे। सांचा भेद न कोई पावे ॥
उनहुँ अचार विचार न छूटा । ब्रह्मा विनशे यम सो लूटा ॥
श्रवण अवाज सबहिकी लीन्हे । रहनी गहनी कोइ न चीन्हे ॥
अहमेव कीन्हो अधिकारा । ताते जाहि गले सोहि मारा ॥
करें विचार पाखण्ड छूटे । भर्म विगुर्चन यमकी लूटे ॥
पण्डित बांचि गीता अर्थावे । गीता केर अर्थ नहिं पावे ॥
फिर फिर हमहीं को ठहरावे । पडित अँधरा भेद न पावे ॥
सुनहु गरुड यक शब्द हमारा । होय निर्गुण जिव केर उबारा ॥
हम कबीर कै निज करिजाना । उनहीं सकल कीन मण्डाना ॥
उनही सब अस्थान ढढाया । जहँ ले तीर्थ तिन सबहि गढाया॥
जहाँ जहाँ उन चरन छुआया । सोइ सोइ तीर्थ अस्थान बनाया॥
आपु जानिके चर्ण जो दीन्हा । यहि विधि सबको थापन कीन्हा॥
वही मानि सब काहू लीना । आप गुप्त होय काहु न चीना॥
इन सबही मिलि बाजी लायी । आप आपकी कीन बडाई ॥
जिनकी आज्ञा सब कछु भयऊ । तिनको छिपाये तीनों दयऊ ॥

साखी-कहें कृष्ण कबीरसों, गुरु तुम करो कबीर ।
हंस लै जइहैं लोक के, खेइ लगैहैं तीर ॥

चौपाई

चरण टेकिके गरुड रिगायी । कीन्हो भेंट द्वारका जायी ॥
वृन्दावन होय आज्ञा लीन्हा । दर्शन जाइ द्वारका कीन्हा ॥
चरण टेकि प्रदक्षिण दीन्हा । मस्तक नाइ बन्दगी कीन्हा ॥
समरथ कहो मोहि समझायी । आरति साज मैं लेउँ मँगायी॥
तब हम उनपै पूछे लीन्हा । कहो कृष्ण आज्ञा कस कीन्हा॥

गरुड वचन

तबही गरुड कह्यो अर्थाई । अस्तुति कीन्ह बहुत लौ लाई॥
एको बात गोय नहिं राखी । कृष्ण बहुत कै अस्तुति भाखी॥
निर्गुण के हम गम्य न जाना । बहुत भाँति उन गम्य बखाना॥
उनतो निर्गुण गम्य बतावा । ब्रह्मा विष्णु शिव पार न पावा॥
औ हम उन कहँदल जो दीन्हा । उन आवे की आज्ञा कीन्हा ॥

सतगुरु वचन

तब हम उनको भेद बतावा । एकोत्तर से नरियर फरमावा ॥
बहुत जतन कै मंडप छावा । बहु अनुरागी साज सजावा ॥
जेतेक साधु द्वारका आया । सबको गरुड कानि बुलवाया ॥
जेतिक साधू तहाँ रहाये । गरुड सबहिंको दल पहुँचाये॥
जहँ ले मुनि हैं सहस अठासी । नाग लोकके नाग जो वासी ॥
वासुकि देव जो आपु रहाये । औंरो नाग बहुत चलि आये ॥
आय विष्णु ब्रह्मा दोउ भाई । शीव आय बहु तेज जनाई ॥
सब पर तेज महादेव कीन्हा ।तुम सब मिलिके गरुडहि चीन्हा॥
तबहिं गरुड पूछा सहिदानी । जोई कृष्ण कहा मोहि बानी ॥

गरुड वचन

सुनहू ब्रह्मा विष्णु महेशा । यह मुहि कृष्ण कहा उपदेशा ॥
एति समय बीति जब जाथी । तब हम तुमसों कहब बुझायी॥
जोइ कृष्ण सब कहा विवेकी । सो तुम्हरी मति आँखिन देखी॥

महादेव वचन

यह सुनि महादेव रिसियाने । हमरी गति तुम काहु न जाने ॥
हम तीनों हैं त्रिभुवन राई । हमहीं छोडि अवर चित लाई ॥
तुम हैं पंछी मतिके हीना । हमहिं छोडि औरहिं चित दीना॥

गरुड वचन

तबही गरुड कहे समझायी । मति हमारि कोइ विरले पायी॥
अजर अमर घर पहुँचे सोई । मती हमार लखै जो कोई ॥
अवसर बीति जबै यह जायी । तब महादेव हम कहब बुझायी॥
सब साधुन की करिये सेवा । यह निज आहि भक्तिको भेवा॥
सबको गरुड़ जो भोजन दीन्हा । बहुत यतनके भक्ति सो कीन्हा॥
करि प्रसाद जब मांड मँडायी । हमसे पूछी विन्ती लायी ॥
तबहि गरुड विन्ती अनुसारी । चलिये समरथ चौक विस्तारी॥
धर्मदास सुनि चौका कीन्हा । लोक समान पयाना दीन्हा ॥
संत समाज सब गावहिं गाजी । ऐसी भक्ति भक्त भल साजी ॥
बजो शंख वीन स्वर सोई । झांझन केरी बाजन होई ॥
ताल मृदंग गगन सो बाजे । ऐसी भक्ति भक्त भल छाजे ॥
शब्द स्वरूप तबै हम भयऊ । तुरत जाइ सत्यलोकहि गयऊ॥
सकलो साज वहां ते आना । बहुत भांतिकी भक्ति जो ठाना॥
सत्यलोक ते उतरे अंशा । अधम कालका भया विध्वंशा॥
सब समेत साज जो आये । जग मग ज्योति बरनि नहिं जाये
निर्गुण भक्त हो सुरति संजोई । कौतुक देखि रहे सब कोई ॥
नाग लोक को कीना मोही । ऐसी भक्ति न देखी कोही ॥
शेषनाग भये आपु मोहाने । औरकी बातें काहि बखाने ॥
मोहे ब्रह्मा विष्णु महेशा । नारद मोहे शुकदेव शेशा ॥
गण गंधर्व मोहे सब झारी । निर्गुण भक्ति न परे विचारी ॥
मोहे कृष्ण द्वारका वासी । मोहे सकल सिद्ध चौरासी ॥
यह समाज सो कैसो आई । ताहि देखि सब रहैं झँवाई ॥
ताते रंग उठे ततकारी । मोहि रहे सब सभा विचारी ॥
मोहे विष्णु वैकुण्ठके वासी । मोहे इन्द्र रुद्र लोक कैलासी ॥

मोहे इन्द्र और उरबशी । नौ लख तारा सूरज शशी ॥
यहि विधि कीन्ह भक्ति मनलायी । तनमन सुधि सकलो बिसरायी ॥
साखी–तेतीस कोटि देवता, गण गन्धर्व सब झार ।
सुर असुर सबही थके, लीला नाम अपार ॥

चौपाई

धन्य धन्य सब करहिं पुकारा । धन्य गरुडजी ध्यान तुम्हारा ॥
धन्य कबीर जिन भक्त उधारा । भक्ति ज्ञान का कीन पसारा ॥
धन्य गरुड सबही अस कीन्हा । ऐसी भक्ति हृदय चित दीन्हा ॥
भक्ति मंडान पहर दोय भयऊ । तहँ हम उठिके आरति कियऊ ॥
आरति भइ पुनि बहुतै भांती । बरणि न जाय शोभाकी कांती ॥
एकोतर नरियर मालुम कीन्हो । बांटि प्रसाद सबनको दीन्हो ॥
सत्य सत्य सबन मिलि कीन्हा । धन्यगरुड तुम यह मति लीन्हा ॥

गरुड वचन

विन्ती करै गरुड चित लायी । सबसे करब हम चर्चा जायी ॥
दया करहु हमपे गुरु देवा । तीनों देव सो कहिहो भेवा ॥
हम तो चरचा करब गुसाई । हमको दो लखाइ सब ठाई ॥

ज्ञानी वचन

अहो गरुड तुम हो बड ज्ञानी । विद्या देहु सब घरके जानी ॥
घर आयेसे राड न कीजे । क्षमावंत हो बिदा सब कीजे ॥
बिदा देहु सबही सावधाना । तिनके घर तुम करिहो ज्ञाना ॥
अस्तुति ठानि चले सब देवा । धन्य कबीर देवनके देवा ॥
साखी–कहैं कबीर धर्मदाससे, यहि विधि आज्ञा लीन ।
अपने अपने लोक को, सबही प्याना कीन ॥

चौपाई

सबको बिदा जबहि करि दीन्हा । तबहिं गरुड अस कहबे लीन्हा ॥

गरुड वचन

हमको हुक्म तुम देहु गुसाई । तुव प्रताप करौं बडाई ॥
तुमरी कृपा काल हम जीता । सबही भांति छुटी मन चीता ॥
तुमरी दया आश सब झूटी । भया निराश तब फन्दा टूटी॥
अब मनमें मोहीं यक आवै । चरचा करनको मनमें भावै ॥
जो आज्ञा हम तुम तुमरी पावें । फिरि सबहिं सो चर्चा लावें॥
त्री देवन सों कहूँ बुझायी । तिन कर फँद सब देहुँ तुडायी ॥

ज्ञानी वचन

तब हम तिनको बहु समझावा । निर्गुण सगुण सब भेद बतावा॥
पाई भेद गरुड मनसाने । त्रिदेव सो चरचा मन आने ॥
तब हम आज्ञा तेही दीना । हमहू विदा तहां से लीना ॥

साखी–दया लेइ गरुड चले, हृदये धरि गुरु ज्ञान ।
ब्रह्मपुरी ठाढे भये, चर्चा कर मन ठान ॥

चोपाई

हुते द्वारका ज्ञान मडाना । गरुड वहाँते कीन्ह पयाना ॥
जाइ सुमेरु पर बैठे जायी । कीन्हो भेंट ब्रह्म सों आयी ॥
गरुड ब्रह्म लोकहि जब आये । ब्रह्मा आदर कीन्ह बनाये ॥
आदर भाव ब्रह्मा तब कीन्हा । डारि सिंहासन बैठक दीन्हा ॥
जल करजोरि ब्रह्म लइ आये । गरुड के चरण पखारन आये॥

ब्रह्मा वचन

धन्य गरुड यहाँ पगु धारी । अब पूरी सब आश हमारी ॥
तुमतो बाहन कृष्ण के भाई । आज कृष्ण पग धारे आई ॥
जो तुम हमपर दाया कीन्हा । कृष्ण बदल हम तुमकर चीन्हा॥
आयसु माँगि प्रसाद जो भयऊ । करि प्रसाद वैकुण्ठमें गयऊ ॥
पान फूल जो अगर मँगायउ । इच्छा भोजन तहँवा पायउ ॥

बैठे जाय पुनि गरुड समाजा । उठि तब चर्चा निर्गुण साजा॥
ब्रह्मा कह तुम कैसे आये । सो मोहि वचन कहो समुझाये॥
कौने काज यहाँ पगु धारा । कहे ब्रह्मा तुम कृष्णके प्यारा॥

गरुड वचन

तबही गरुड कहे समझायी । तुमहिं चितावन आयउँ भाई॥
तुमहिं चितावन हौं पगुधारा । आदि पुरुष वह रहे नियारा॥

साखी–विनु देखे को जाय यह, नहिं पावे कोइ ठाम।
जन्म अनेक भरमत फिरे, मरे विनु गुरुके नाम॥
आदि पुरुष आगम है, जाको सकल प्रकाश।
निर्गुण भेद अपार है, तुम कहँ बांधी आश॥

चौपाई

कोटिन ब्रह्मा गये सिरायी । अविगतकी गति काहु न पायी॥
कोटिन ब्रह्मा पृथ्वी विलाने । अविगतकी गति काहु न जाने॥
कोटिन विष्णू गये सिरायी । फिरि फिरिकै पृथ्वीहु विलायी॥
कोटिन रूद्र देह धरि लीना । अस्थिर होय जगतसो कीन्हा॥
कोटिन इन्द्र अवतार जोलीन्हा । अविगति पुरुष काहू नहिं चीन्हा॥
गण गंधर्व नर कौन चलावैं । सनक सनन्दन पार न पावैं॥
शेष नाग बहु भांति भुलाने । आदिपुरुपकी खबरि न जाने॥
सब परिवार जो भूले भाई । अवगति की गति काहु न पाई॥
भुला देखि जिव दया न आई । जीव अनेक घात किहु भाई॥
सब भूले कोइ लागु न तीरा । महा अधम सो आहि शरीरा॥
देह धरी सब भरमें आई । आपन आप सब करै बडाई॥
अहमेव कैसे खोजेहु जाई । [1]माताको कहा न कीनेहु भाई॥

---

१ जिन २ पुस्तकों में सृष्टि उत्पत्ति प्रकरणका वर्णन आया है, उन सबोंमें आद्याकी आज्ञाको न मान कर हठ करके ब्रह्माका निरंजन के खोजमें जानेका वर्णन आया है इहांसे जानना चाहिये और यथार्थ भेद गुरुसे ।

कीन्हो खोज तुम आपु गुमाना । नहिं पाये तब रहे लजाना ॥
खोज कीन्हो जब अन्त न पावा । तब तुम आप आप ठहरावा ॥
आपु दृढाय थापना कीन्हा । सोई अहम् निर्गुण नहिं चीन्हा ॥
तुमरे भूले जगत भुलाना । आदिपुरुषको मर्म न जाना ॥
यहि विधि जग सब रहत भुलायी । टीका मूल काहु नहिं पायी ॥
तेतीस कोटी देव भुलाये । यहि भूले कोइ गम्य न पाये ॥

साखी-भूले गम्य न पाइया, भूले मूढ गँवार ।
टीका भूल न जानई, अरुझि रहा संसार ॥

चौपाई

तुम बाजीगर बाजी लाये । तुमतो सब दुनियाँ भरमाये ॥

ब्रह्मा वचन

सुनि ब्रह्मा तबहीं रिसियाने । हमते दूजा केहि को जाने ॥

गरुड वचन

सुनु ब्रह्मा यक वचन हमारा । तुम अस ब्रह्मा कोटि हजारा ॥
कोटिन ब्रह्मा ठाढ़े द्वारा । कोटिन वेद सो करहिं उचारा ॥
खोज करन ब्रह्मा तुम गयऊ । कहूँ पिता के अन्त न पयऊ ॥
झूठ कहे मातासों जायी । ताते ब्रह्म शाप तुम पायी ॥
माता ते तुम भये लबारा । आय जीवमें सकल संसारा ॥
सबकी प्रतिमा थीर न आयी । आपु समेत सकलो भरमायी ॥
जो कोइ कहै भूलकी बानी । कोटिन जन्म नरककी खानी ॥
यह संसार रहट की घरिया । कइक बार राजा अवतरिया ॥
कइक बार नरक में परई । कइक बार ब्राह्मण औतरई ॥
यहि विधि जीव आवे जायी । भरमि भरमि चौरासी पायी ॥
कोटिन बार अस्थावर जानी । कोटिन बार पिंडज उत्पानी ॥
कोटिन जन्म अंडज अवतारा । यहिविधि भरमहिं जीव विचारा ॥
यहि विधि भरमें जीव विचारा । बिनु सतगुरु नहिं होय उबारा ॥

साखी-कहे गरुड समझाइके, सुनहु ब्रह्म यह बात।
अविगत पुरुष सु और है, जाके माय न तात ॥

ब्रह्मा-वचन चौपाई

सुनि ब्रह्मा तव पूछे बानी। कैसे अविगतिकी गति जानी ॥
कौनी युक्ति साच के मानी। साहिबकी गति कैसे जानी ॥

गरुड वचन

गरुड़ कहे तुम आपही ज्ञाना। जहाँ गर्व तहाँ पुरुष छिपाना ॥
गर्व गुमान में जो है पूरा। रहै सदा सो धूर अधूरा ॥
साखी-मानुषदेह अपराधि है, देह धरे अभिमान।
ताते सबै विगुचै, भक्ति मर्म नहिं जान ॥

चौपाई

भक्ति जो आदि अंतसे आयी। जाते सकल माँड निर्मायी ॥
ताकर मर्म जो जाने नायी। ताते काल फांस निरमायी ॥
साखी-लोक वेद जानै नहीं, करै भक्ति अभिमान।
ताते सबै विगुरचे, भक्ति करन का जान ॥
ध्वजा जो फरके शून्यमें, बाजे अनहद तूर।
तकिया है मैदान में, पहुंचेगा कोइ शूर ॥

ब्रह्मा वचन-चौपाई

ब्रह्मा कहै गरुड सुनु भाई। अपने मुख तुम करहु बडाई ॥
इतना ब्रह्मा किया विचारा। देव विमान तुरत भये ठाढा ॥
कहे ब्रह्मा तुम जाहु विमाना। लाओ विष्णु बुलाइ सयाना ॥
चला विमान विष्णु पै गयऊ। तवहि विष्णु अस पूछन लयऊ॥
कहो विमान कहाँ पगु धारे। सत्य सत्य कहो वचन सम्हारे ॥

विमान वचन

गरुड भक्त यक आया देवा। सो नहिं माने तुम्हरी सेवा ॥

सुनते विष्णु विमान चढाये। चढि विमान ब्रह्म लोकहि आये॥
विष्णुपुरीसे विष्णु जब आये। बैठे जाय ब्रह्माके ठाये॥

विष्णु वचन

केहि काज पर मोहि बुलायी। सो मोहि भेद कहो समझायी॥

ब्रह्मा वचन

ब्रह्मा वचन कहै अर्थावै। कहै गरुड हम केहि चेतावै॥
हमको मनुष देह करि जानै। आदि पुरुष औरे को मानै॥
भले विष्णु तुम आये भाई। अब शिवको तुम लेहु बुलाई॥
गढ कैलास शिवका अस्थाना। तहँको अब तुम जाहु विमाना॥
सब देवनको आनु बुलायी। सुनहीं चर्चा गरूड की आयी॥
महा विमान तुरत चलि गयऊ। गढ कैलास पर ठाढे भयऊ॥
शिवशंकर को माथ नवायी। पाछे ब्रह्माका वचन सुनायी॥
ब्रह्मा गरूड जहँ झगर पसारा। तेहि कारण तुम सबके हँकारा॥
ब्रह्मा विष्णु बैठे एक ठाई। कीन्ही चर्चा मंड मँडाई॥
गरूड सबहि का करै उच्छेदा। सो मैं तुमहि बतायो भेदा॥
बाजे डमरू हने निशाना। चले रूद्र तब साजि विमाना॥
तुरत चले नहिं लाये बारी। चले रूद्र आये पशुधारी॥
ब्रह्माको जहँ भयउ उछेदा। बैठे जहाँ करे बहु भेदा॥
इन्द्र लोक सो इन्द्र बुलाये। जेहि सँग देव सबै चलि आये॥
सो सब चलि ब्रह्मा पहँ आये। वासुकि देव जो आप रहाये॥
आवत उनके नाग बहु आये। बहुतै नागिन आयी बहुभाये॥
सुर नर मुनि सब आनि बुलायी। जो जस आसन तस बैठाई॥
ब्रह्मा विष्णु बैठे यक ठावा। गरूड तहाँ पुनि ज्ञान सुनावा॥

गरुड वचन

अविगतिकी गति आहि निनारा। सब भूले कोइ पाउ न पारा॥

ब्रह्मा वचन

ब्रह्मा कहै विष्णु सों बाता। गरुडको ज्ञान सुनो विख्याता॥
हम तीनों अवरे नहिं कोई। हमरे परे सुनावै सोई॥
ब्रह्मा कहै विष्णु सों बाता। हमको कहत है परलय घाता॥
हम तो तीन लोकको कीन्हा। हमको सकल देवता चीन्हा॥

गरुड वचन

तबहि गरुड यक वचन उचारा। जब कर्ता तुम सृष्टि सवाँरा॥
वह साहब सबही ते न्यारा। कस नहिं ताकर करो विचारा॥
जिन साहब तुम्हें निर्मायी। तुम कस ताको नाम छिपाई॥
विष्णु रहत हैं तुम्हरे पासा। तिनहू को पुनि काल गरासा॥
क्रोधवंत ब्रह्मा तब भयेऊ। अचरज बात गरुड जो कहेऊ॥
जाकी तैं पुनि सेवा करई। सो तो हमरे त्रास महँ डरई॥
सुर नर मुनि सब काहू चीन्हा। सुनु पंछी तैं मतिका हीना॥
लोक वेद सब हम कहँ जाने। न जानूं कस आप चित आने॥

गरुड वचन

सुनु ब्रह्मा तैं गर्व भुलासी। तोहि अस ब्रह्म कोटि मरासी॥
हम तो ब्रह्मा बहुत जो देखा। जी पूछहु तो काढों लेखा॥
काढों विष्णु कोटि से चारी। महादेव जाके भंडारी॥
मैं तो भक्त कबीरका चेला। युगन युगन जिन कीन्हो मेला॥
हमसों कह्यो कबीर बुझायी। ताते आय कह्यो गोहराई॥

ब्रह्मा वचन

ब्रह्मा कोपि उठे तब भाई। विष्णु महादेव सुनहूँ आई॥

विष्णु वचन

आये दूनो जन ब्रह्मा ठाई। विष्णु कहै कस मता दिढाई॥
काह आज जिव बहुत उदासा। कीन्हो क्रोध गरुड के पासा॥
कहो वचन मुख होय प्रकाशा। हम अजान है तुम्हरे आसा॥

ब्रह्मा कहै सुनो हो भाई। अविगत की गति गरुड सुनाई॥
हमहीं तीन अवर नहिं कोई। चौथे एक निरंजन सोई॥
ताको गरुड न माने भाई। ताते मोहि क्रोध भौ आई॥
तिहि कारण हम तुम्हें बुलावा। गरुड ज्ञान हमहीं समझावा॥

विष्णु वचन

विष्णु कहैं सुनो गरुड विचारी। आदि अंत कोई अगम है भारी॥
एक ध्यान हमहूं नहिं कीना। अवि गति बात हमहूँ नहिं चीना॥
अहमेव मटी सुरत लगाया। अविगति ध्यान तबहूँ नहिं पाया॥
ध्यान मध्य हम देखा जाही। ब्रह्मा विष्णु महादेव नाहीं॥
साखी-विष्णु नहीं ब्रह्मा नहीं, माहादेव नहिं कोय।
ओम्‌ओंकार तहवाँ नहीं, निरखि देखा हम सोय॥

ब्रह्मावचन-चौपाई

तब ब्रह्मा अस वचन उचारा। यह है बडा काल बटपारा॥

विष्णु वचन

सुनु ब्रह्म अविगती कहानी। विना तत्त्व मैं निरखा बानी॥
ताकी का कहिये अब बाता। अगम अपार कहूँ विख्याता॥
साखी-निःकामी निध्यांनि सोई, निष्प्रेमी निर्वान।
कहैं विष्णु ब्रह्मा सुनो, अविगति यहि विधि जान॥

चौपाई

ब्रह्मासों कहै विष्णु बखानी। है कोई आदि पुरुष निर्वानी॥
दुर्वासा संग रहे जब भाई। अविगतिकी गति तब हम पाई॥
तबका बोल हम कीन्ह परमाना। ताते हम जानहिं निरबाना॥
दुरवासा गुरुभक्ति दृढाया। तब ते हमहु परम पद पाया॥
साखी-ब्रह्मा हमकहँ जानहूँ, और न कोई सांच।
दृढा ज्ञान नहिं आवई, ताते काया कांच॥

ब्रह्मा कहै सुनो विष्णु विचारी । हमही रचा पुरुष औ नारी ॥
हमते और कौन है भाई । सो मोहि भेद कहौ समझाई ॥
हम तो सर्गुण सकल पसारा । हमतो अगम निगम विस्तारा॥
हमतो रचा पवन औ पानी । हम कहँ वेदव्यास बखानी ॥
हम चौरासी नाव जो कीन्हा । हम निर्गुण सरगुण चीन्हा ॥
इतनी कथा कहि ब्रह्मा सुनाई । तबहूँ गरुड न मानैं भाई ॥

गरुड़ वचन

कहै गरुड सुनो ब्रह्म कुमारा । तुम कहँ रची सृष्टि करतारा ॥
सबको रची सबै जिन कीन्हा । वह तो पुरुष सबन ते भीना ॥
वह तो पृथ्वी पाँव न दीन्हा । शब्दहि ते सकलो जग कीन्हा॥
जो आप रचना करि जाना । तो हमसे हठि भाषहु ज्ञाना ॥
जो तुम रचा पवन औ पानी । पृथ्वी अकाश तुमहिं जो ठानी॥
रचा तुम्हार तब जानहिं भाई । अब रचहू तुम फिरि विनशाई॥
जो तुम्हार है सकल बनाई । फिरिके परलय करहु तुम भाई॥
तब हम जानहिं कीन तोहारा । यह मेटहु सकलो विस्तारा ॥
अपने हाथ रचै जो कोई । फिरिकै मेटि सकै पुनि सोई ॥
तब ब्रह्मा सुनि रहे लजाई । सम्मुख उत्तर कह्यो न जाई ॥

महादेव वचन

कहे महादेव सुनो रे भाई । अचरज बात कही नहिं जाई ॥
सुनु ब्रह्मा गरुड जो कहई । ताकर भेद कोई विरला लहई॥
दश औतार विष्णु जो लियऊ । काया काल ग्रास जो कियऊ॥
तबही कृष्ण भेद यक कीन्हा । ताको ब्रह्मा तुम नहिं चीन्हा ॥
गोपी ग्वाल सबै हरि लाये । तब जो कृष्ण सब दीन मेराये॥
इतनी बात ब्रह्मा तुम नहिं जानो । अविगतिकी गति कैसे पहिचानो॥

ब्रह्मा कहे सुनो हो भाई। अविगत की गति गरुड सुनाई॥
हमहीं तीन अवर नहिं कोई। चौथे एक निरंजन सोई॥
ताको गरुड न माने भाई। ताते मोहि क्रोध भौ आई॥
तिहि कारण हम तुम्हें बुलावा। गरुड ज्ञान हमहीं समझावा॥

विष्णु वचन

विष्णु कहैं सुनो गरुड विचारी। आदि अंत कोई अगम है भारी॥
एक ध्यान हमहूं नहिं कीना। अवि गति बात हमहूँ नहिं चीना॥
अहमेव मटी सुरत लगाया। अविगति ध्यान तबहूँ नहिं पाया॥
ध्यान मध्य हम देखा जाही। ब्रह्मा विष्णु महादेव नाहीं॥

साखी-विष्णु नहीं ब्रह्मा नहीं, माहादेव नहिं कोय।
ओम् ओंकार तहवाँ नहीं, निरखि देखा हम सोय॥

ब्रह्मावचन-चौपाई

तब ब्रह्मा अस वचन उचारा। यह है बडा काल वटपारा॥

विष्णु वचन

सुनु ब्रह्म अविगती कहानी। विना तत्त्व मैं निरखा बानी॥
ताकी का कहिये अब बाता। अगम अपार कहूं विख्याता॥

साखी-निःकामी निर्ध्यांनि सोई, निष्प्रेमी निर्वांन।
कहे विष्णु ब्रह्मा सुनो, अविगति यहि विधि जान॥

चौपाई

ब्रह्मासों कहे विष्णु बखानी। है कोई आदि पुरुष निर्वांनी॥
दुर्वासा संग रहे जब भाई। अविगतिकी गति तब हम पाई॥
तबका बोल हम कीन्ह परमाना। ताते हम जानहिं निरवाना॥
दुरवासा गुरुभक्ति दृढाया। तब ते हमहु परम पद पाया॥

साखी-ब्रह्मा हमकहँ जानहूँ, और न कोई सांच।
दृढा ज्ञान नहिं आवई, ताते काया कांच॥

ब्रह्मा कहे सुनो विष्णु विचारी । हमही रचा पुरुष औ नारी ॥
हमते और कौन है भाई । सो मोहि भेद कहो समझाई ॥
हम तो सर्गुण सकल पसारा । हमतो अगम निगम विस्तारा॥
हमतो रचा पवन औ पानी । हम कहँ वेदव्यास बखानी ॥
हम चौरासी नाव जो कीन्हा । हम निर्गुण सरगुण चीन्हा ॥
इतनी कथा कहि ब्रह्मा सुनाई । तबहूँ गरुड न मानैं भाई ॥

गरुड वचन

कहै गरुड सुनो ब्रह्म कुमारा । तुम कहँ रची सृष्टि करतारा ॥
सबको रची सबै जिन कीन्हा । वह तो पुरुष सबन ते भीना ॥
वह तो पृथ्वी पाँव न दीन्हा । शब्दहि ते सकलो जग कीन्हा॥
जो आप रचना करि जाना । तो हमसे हठि भाषहु ज्ञाना ॥
जो तुम रचा पवन औ पानी । पृथ्वी अकाश तुमहिं जो ठानी॥
रचा तुम्हार तब जानहिं भाई । अब रचहू तुम फिरि विनशाई॥
जो तुम्हार है सकल बनाई । फिरिके परलय करहु तुम भाई॥
तब हम जानहिं कीन तोहारा । यह मेटहु सकलो विस्तारा ॥
अपने हाथ रचै जो कोई । फिरिकै मेटि सकै पुनि सोई ॥
तब ब्रह्मा सुनि रहे लजाई । सम्मुख उत्तर कह्यो न जाई ॥

महादेव वचन

कहे महादेव सुनो रे भाई । अचरज बात कही नहिं जाई ॥
सुनु ब्रह्मा गरुड जो कहई । ताकर भेद कोई विरला लहई॥
दश औतार विष्णु जो लियऊ । काया काल ग्रास जो कियऊ॥
तबही कृष्ण भेद यक कीन्हा । ताको ब्रह्मा तुम नहिं चीन्हा ॥
गोपी ग्वाल सबै हरि लाये । तब जो कृष्ण सब दीन मेराये॥
इतनी बात ब्रह्मा तुम नहिं जानो । अविगतिकी गति कैसे पहिचानो॥

साखी-कौन सरूपी कृष्ण है, कौन धरे अनुमानु ।
देह धरे नहीं चीन्हहू, निर्गुण कैसे जानु ॥

चौपाई

निरगुणको गुण है बड भारी । जिन उत्पन्न कियो सब सारी ॥
वह तो पुरुष मूल है माथा । गति प्रतीति ताहीके साथा ॥
नहीं महातम पुरुष की पूजा । जप तप संयम नाम बिनु दूजा ॥
वार पार नाम नर सेई । अजर नामको सुमिरन देई ॥
बारहिं बार नाम लौ लावे । अजर अमर होय लोक सिधावे ॥
नाम सिखापन बदन सो खोले । विना नाम विनु महातम डोले ॥
सतगुरु विना मर्म नहिं जाने । हमें तुम्हें सब जगत बखाने ॥

ब्रह्मा वचन

सुनो महादेव साँच बखाना । निर्गुणके गुण हमहूँ नहिं जाना ॥
अविगतिकी गति हम ना जानी । योगी जंगम सेविं हम जानी ॥
सुर नर मुनि सब हमको ध्यावें । हम उपजावें हमही विनशावें ॥
साखी-मैं उपजावों मैं विनसावों, मैं खरचों मैं खाऊँ ।
तीन लोक पैदा करों, मोर ब्रह्म है नाऊँ ॥

गरुड वचन चौपाई

ममताते नर नरके जायी । ताते बहुरि बहुरि जन्मायी ॥
तुहि अब ब्रह्मा[1] बहुत विचारा । ताते काया विनसे सब सारा ॥
तू ब्रह्मा अस जो धरे हँकारा । तेहिते काल भया बटपारा ॥
सुनु ब्रह्मा अविगति की बाता । एकै पुरुष एक है माता ॥
सुनहू सब सभा विचारो । यक मैं निरखि कहौं निरुआरो ॥
वहि साहबकी खबरि न पावा । तुव अस ब्रह्मा बहुत उपावा ॥
वही हम निरखि परखिके जानी । साहब शब्द लेहु पहिचानी ॥

---

१ ब्रह्मा शिवकी बातकी व्यंगसे हँसी करते हैं ।

साखी-कहो ब्रह्मका भूलहु, कहौं तोहि समुझाय ।
मोर मोर के धावहू, ममता अमल चलाय ॥

चौपाई

ममिता ते दशों अवतारा । ममिता महादेव धरु छारा ॥
ममिता लोमश योग जो कीन्हा । आयु बढी भगती नहिं चीन्हा॥
ममिता ते आपुहिं जो रहेऊ । ममिता ते तीन लोक वहि गयऊ॥
ममिता तेज निरञ्जन कियऊ । ममिता ते पुरुष दरश न पयऊ॥
तुम ब्रह्मा कीन्हे अभिमाना । तेहिते साहब अछय छिपाना ॥
साखी-ब्रह्मा गर्व तुम कीनिया, सुनि राखू यक बात ।
जो साहब अभि अंतरे, सोई सदा सँघात ॥
तुम अज्ञानी नहिं जानहू, सुनु ब्रह्मा यक बात ।
अविगति अगम अपार है, समरथ सदा सँघात ॥

विष्णु वचन-चौपाई

विष्णु कहैं सुनो हो भाई । चलहू तुरत ज्योति पहँ जाई॥
ज्योति कहै सो सुनिये भाई । सब मिल चलहु सांचकै आई॥
आंखिन देखी पूछि न जाई । पाय अभिमान चीन्हे नहिं पाई॥
अभिमान मता सब दूरि दीजे । सांच वस्तुको धारण कीजे ॥
अभिमान समेत चीन्हे नहिं कोई । देह धरी सब गये विगोई ॥
आपा थापि सुधि बुधि खोई । आपा छोडे पावे सोई ॥

महादेव वचन

तब महादेव कहैं विचारी । अहो विष्णु पूछहु महतारी ॥
जो वह कहैं सो हम तुम मानैं । औरी बात नाहिं हम जानैं ॥
ब्रह्मा विष्णु से हुई यह बाता । तुम बडे हो कि बडी है माता॥
सबै मिली तब कीन्ह पयाना । जाइ माता ढिग कीन्ह बयाना॥
बोलहु माता सत के भाऊ । नहिं अरुझावहु भाषि सुनाऊ॥

तीनो देव कहैं सुनु माता । और कौन पुरुष आदि विधाता ॥
हम तीनों कि और है कोई । यह निज भेद बतावहु सोई ॥

माता वचन

तव माता बोले हितकारी । कस न ब्रह्मा करहु विचारी ॥
जब तुम हते हमारे पासा । तब तुम कीन पिता की आसा ॥
तबकी बात विसरी तुम गयऊ । पुरुष ते विमुख तुम भयऊ ॥
पुनि माता यक वचन अनुसारी । महादेव हौ कृतम भिकारी ॥
अमर वचन जो हमहीं भाखा । युग चारों देह अमर राखा ॥
सोई वचन भूलि जो गयऊ । मातु पिता सो अंतर लयऊ ॥
पुनि माता गरुडसे बोली । अमृत वचन रसाल अति खोली ॥
कहे माता सुनु गरुड सुजाना । तुमतो वचन कही परमाना ॥

गरुड वचन

गरुड तब पूछे ज्योतिसों बानी । कैसे तुम यह सिरजा खानी ॥

माया वचन

तब उन कहा पुरुष सों बानी । पावक नीर पवन बैसानी ॥
जल रंग अंश सो साथहिं रहई । ताकी खबरि कोई नहि लहई ॥
प्रथम अंशजल रंग जो कीन्हा । तबजलसिन्धुनाम कहि दीन्हा ॥

साखी–ब्रह्मा विष्णु कोई नहीं, महादेव भी नाहिं ।
पुरुष एक तब अविगति, अगम अगोचर माहिं ॥

ब्रह्मा वचन चौपाई

कहे ब्रह्मा हम आपु प्रकाशा । हम पुहमी नौ खण्ड निवासा ॥
हम हैं नीर हमहिं हैं पवना । हमहीं रचा सकल सब भवना ॥
हमहीं पांच तत्त्व सब कीन्हा । हमहीं आप सृष्टि रचि लीन्हा ॥
हमहीं सकल सृष्टि विस्तारा । हम कर्ता है सकल पसारा ॥
हमहीं चन्द्र सूर दिन राती । हमहीं कीन्ह किरतम उत्पाती ॥
हमहीं आदि अंत मधि तारा । हमहीं अंध [illegible] उजियारा ॥

हमहीं ब्रह्मा विष्णु महेशा । हमहीं नारद शुकदेव शेशा ॥
हमहीं कंस कृष्ण बलि बावन । हमहीं रघुपति हमहीं रावन ॥
हमहीं हैं मच्छ कच्छ बाराहा । हमहीं भादों फागुन माहा ॥
हमहीं दशौ भये अवतारा । तीरथ बरत देहरा धारा ॥
हमहीं हंसा समुद्र तरंगा । हमहीं सरस्वती यमुना गंगा ॥
हमहीं योग युक्ति व्रत पूजा । हमहीं छाँडि देव नहीं दूजा ॥
हमहीं पढना गुनना लीखा । हमहीं पाप पुण्य गुरु शीखा ॥
हमहीं विद्या वेद पुराना । हमहीं कीन कितेक कुराना ॥
हमहीं आवें हमहीं जावें । हमहीं आदि अन्त की छावें ॥
तीन लोक हमहीं विस्तारा । सकल निबल देही हम धारा ॥
साखी-तीन लोक में रमि रहे, सबही मोही मान ।
कहु माता समुझायके, किरतम कैसे जान ॥

माता बचन-चौपाई

तब माता अस बोली बानी । तू तो ब्रह्मा चतुर सुजानी ॥
हमसे भयी उत्पत्ति तुम्हारी । तुमही पुत्र हमही महतारी ।
पिता केर खोज जो कीन्हा । तब हम तुमको हुकुम नदीन्हा ॥
बरबस के तुम खोजेउ जायी । तब हम पिताकी खोज बतायी ॥
तब हम तुमसों बोली बानी । दर्शन ते बेमुख तुम्हें जानी ॥
तब तुम पैज बाँधि के चलेऊ । पिता के दर्शन नहीं भयऊ ॥
जो तुम कीन्हे सकल बखाना । ताकर मोसों कहो विधाना ॥
जो तुम आपुहिं आप तुम रहऊ । कवनके खोज करन तुम गयऊ ॥
काहे को बोलहु अनरीती । तुम लबार सो कीन्ही प्रीती ॥
बरबस खोज पिताके गयऊ । खोजन पाय अमरख तब भयऊ ॥
तब हमतो बोले झूठ लबारा । तैसहिं सब चलही संसारा ॥
एक बार लबारी करेऊ । तब हम तोकहँ शाप सो दयऊ ॥
अब बोलहु तुम वचन सम्हारी । काहे ब्रह्मा बोलु लबारी ॥

साखी-भाषहु वचन सँभारिकै, जनि बोलहु अज्ञान ।
परमपुरुष एक अगम है, ताकर करहु ध्यान ॥

चौपाई

हम तो सत्य वचन चित धरऊ । हम तुम सत्य पुरुष ते भयऊ॥
ममता तेज बहुत तुम कीन्हा । आदि अन्तको नाहिन चीन्हा॥
माता वचन कह्यो सब झारी । तब ब्रह्मा मन आयी हारी ॥

गरुड वचन

सुनु ब्रह्मा तुम कौन मति ठानी । माता कहै सो कहा न मानी ॥
जो नहिं यह वचन परमानो ।ज्योति कहै सो सब मिलि मानो॥
सुनि ब्रह्मा को गर्व परहारा ।एक पुरुष जिय किया है चारा॥
परम पुरुष तेहि कीन प्रकाशा । जिनकी जगत लगावे आशा॥
चौसठ युग वही प्रकासा । सत्तर युग है वाके पासा ॥
सहस्र युग गये शून्य वे शून्ने । नहिं तहँ पाप नहीं तहँ पुन्ने ॥
तुम सब ब्रह्मा केतिक गयऊ । हम तब सब कर भेद लयऊ ॥
साखी-सुनु ब्रह्मा का जानई, तुम तो करम के खोट ।
तेहिते हाल विनसिहो, जनी कहावहु छोट ॥
सुनु ब्रह्मा कहँ भूलिया, जनि करहू तुम रोख ।
जन्म जन्म चौरासिया, यहि विधि पावो धोख ॥
कहै गरुड समुझायके, जनि भरमहु अभिमान ।
साहिब एक अगम्य है, ताकर करहु पिछान ॥

चौपाई

टीका मूल एक हम देखा । तहाँ है निज शब्द विवेखा ॥

विष्णु वचन

ब्रह्म महादेव सुनहू भाई । सब पर देव निरञ्जन राई ॥
एक निरञ्जन और न कोऊ । तेहिते अपर और नहिं होऊ ॥
तेहिते और नहीं कोइ पारा । सो तो सकल भुवन सरदारा ॥

साखी-भाषहु वचन सँभारिकै, जनि बोलहु अज्ञान ।
परमपुरुष एक अगम है, ताकर करहु ध्यान ॥

चौपाई

हम तो सत्य वचन चित धरऊ। हम तुम सत्य पुरुष ते भयऊ॥
ममता तेज बहुत तुम कीन्हा। आदि अन्तको नाहिन चीन्हा॥
माता वचन कह्यो सब झारी। तब ब्रह्मा मन आयी हारी॥

गरुड वचन

सुनु ब्रह्मा तुम कौन मति ठानी। माता कहै सो कहा न मानी॥
जो नहिं यह वचन परमानो। ज्योति कहै सो सब मिलि मानो॥
सुनि ब्रह्मा को गर्व परहारा। एक पुरुष जिय किया है चारा॥
परम पुरुष तेहि कीन प्रकाशा। जिनकी जगत लगावे आशा॥
चौसठ युग वही प्रकासा। सत्तर युग है वाके पासा॥
सहस्र युग गये शून्य वे शून्ने। नहिं तहँ पाप नहीं तहँ पुन्ने॥
तुम सब ब्रह्मा केतिक गयऊ। हम तब सब कर भेद लयऊ॥
साखी-सुनु ब्रह्मा का जानई, तुम तो करम के खोट ।
तेहिते हाल विनसिहो, जनी कहावहु छोट ॥
सुनु ब्रह्मा कहँ भूलिया, जनि करहू तुम रोख ।
जन्म जन्म चौरासिया, यहि विधि पावो धोख ॥
कहै गरुड समुझायके, जनि भरमहु अभिमान ।
साहिब एक अगम्य है, ताकर करहु पिछान ॥

चौपाई

टीका मूल एक हम देखा। तहाँ है निज शब्द विवेखा॥

विष्णु वचन

ब्रह्म महादेव सुनहू भाई। सब पर देव निरञ्जन राई॥
एक निरञ्जन और न कोऊ। तेहिते अपर और नहिं होऊ॥
तेहिते और नहीं कोइ पारा। सो तो सकल भुवन सरदारा॥

वही सकल भुवनका स्वामी । वही परम ब्रह्म अन्तरयामी ॥
उनही नारी पुरुष बनावा । सकल सृष्टि उनही सिरजावा ॥
लाख चौरासी उनहि सँवारा । उनही गोरख नाम धरावा ॥
उनही छलि बलि पताल पठावा । काल रूप धरि जगमें आवा ॥
उनही यह सब खेल खिलायी । उनही सकल सृष्टि उपजायी ॥
साखी–कहे विष्णु गरूड सुनु, कहे सुने का होय ।
एक निरञ्जन आपु है, दूजा और न कोय ॥
सात द्वीप नौखंडमें, एक निरञ्जन होय ।
और कौन सो देखिये, ताको कहिये सोय ॥

गरुड वचन–चौपाई

मैल मलीन सकल संसारा । सो निर्मल जाके अन्त न पारा ॥
मैले ब्रह्मा मैले इंद्र । रवि मैला मैले शशि चन्द्र ॥
मैले सनक सनन्दन देवा । मैले यह जग लहै न भेवा ॥
मैले शिव ब्रह्मादिक देखा । मैले लोक ब्रह्माण्ड विशेखा ॥
निशि वासर मैले दिन तीसा । मैले काल मैले अवनीसा ॥
मैले जोत मैले तन हेता । मैली काया मैल समेता ॥
मैले निरंजन नर नहिं जाना । उन यह सृष्टि कीन्ह पिसमाना ॥
निर्मल नाम एक है श्वेता । निर्मल सो जो नामहिं लेता ॥
कहै गरूड ते जन परमाना । जो निर्मल निज नामहिं जाना ॥
साखी–निरंकार ओंकार है, पार ब्रह्म है सोय ।
एकनाम चीन्हे विना भटकि मुवा सब कोय ॥
साहब इनहि बनाइके, आपुइ रहे निनार ।
सो निज नाम जाने विना, कैसे उतरे पार ॥

चौपाई

कहत सुनत सबही सुधि पायी । कहत सुनत सब तीर्थहिं जाई ॥
कहत सुनत ज्ञान बहु करई । दम्भ अभिमान बहुत सो धरई ॥

कहत सुनत नर तीर्थहिं जायी । भरमतभरमतगलफांसलगायी॥
कहत सुनत सब सुनै पुराना । कहत सुनत सब देत है दाना ॥
कहत सुनत सब खेती करई । कहत सुनत नर माया धरई ॥
कहत सुनत जो चुगली करई । होय चंडाल नरक महँ परई ॥
कहत सुनत नर कूप खुदावे । कहत सुनत उद्यम मन लावे ॥
कहत सुनत स्वाद मन धरई । कहत सुनत नर गढहे परई ॥
कहत सुनत नर माया जोरी । सौ सहस्र औ लक्ष करोरी ॥
कहत सुनत गुरु शिष्य जो करई। आप अजान भरम में परई ॥
कहत सुनत भक्ति जो ठानी । कहत सुनत पायन पर आनी॥
कहत सुनत सागर तलाव बनावें। कहत सुनत पाप पुण्य कमावें॥

साखी-कहन सुनत सब गये हैं, कहत सुनत सब जाय ।
कहत सुनत करनी करे, तब प्रभु परसे आय ॥

महादेव वचन-चौपाई

क्रोधवंत महादेव तब भयऊ । हमहू को उठाय तुम धरऊ ॥
महादेव बोले बात विचारी ।हमको जान्यो किरतम भिकारी॥
हमको मनुष्य देह करि जाना । भूली बात करे बखाना ॥
महादेव अस युक्ति बतायी । कहो तो सकलो देऊँ दिखायी ॥
कहो अकाशको बन्द बताऊँ । सात द्वीप नौ खंड दिखाऊँ ॥
अचरज एक बात उन भाखी । कहोतो आनि दिखाओं साखी॥
कहो तो गरुडही मारि के डारों । कहो तो योग जीतहिं मारों ॥
कहो तो काल रूप हम धारें । कहो तो पलमहँ मारि सँघारें॥
कहो तो याही देउं भुलायी । बहुरि न हमसों हो बौरायी ॥
यह सो बकवाद विचारा । हमसों बाजी करे अपारा ॥
यह तो आदि अंतसे आये । तेहिते ब्रह्मा विष्णु कहाये ॥
हमहीं सिरजें पाले मारैं । दानव देवी मारि उखारैं ॥

ब्रह्मा तो है जेठा भाई। वेद वाक्य सब कहै बनाई ॥
कैसे ब्रह्मा शीव उठावे। कैसे विष्णुहि हीन दिखावे ॥
साखी–अगम निगम सब जानई, कहै मुक्तिका नीव।
विष्णु काया दिढावई, योग दिढावे शीव ॥

गरुड वचन

सुनो महादेव मतिके हीना। तुम नहिं जानो पुरुष प्रवीना॥
तुम तो आपहि गर्व भुलाये। तुम सेवक साहब होय आये ॥
तुम किंचित हो जीव विचारे। तुम्हरे कहे होय का पारे ॥
तुम्हरा किया कछू ना होई। आप पुरुष उपजावे सोई ॥
आप सुरत प्रभु कीन उचारा। तब तहँ चौदह भुवन सँवारा ॥
सेवा बदले पाय तिहुँलोका। जीवन कारन लाये धोका ॥
धोका लाय ठरयो संसारा। तीन लोकमें फन्द वसारा ॥
साखी–ब्रह्मा विष्णु महेश्वर, सुनहु सत्य विचार।
वह तो पुरुष अखण्ड है, अपरमपार अधार ॥
तुम तीनों मिलि आपा थापी। आप थापी भये महा पापी ॥

सतगुरु वचन

सुनु धर्मनि औरो यक बाता। उहँ तो सबै ज्ञानमहँ राता ॥
जब देख्यो सब आपा थापै। करत बडाई नहिं तनिको धापै॥
तब अस युक्ति किया बनाई। जाते होय परीक्षा भाई ॥
बंग देश बालक यक रहेऊ। जाति ब्राह्मण सबै तेहि पयऊ॥
ताकर आयू सबै खुटानी। मृत्यु निकट भयी तुलानी ॥
ताको ज्ञान अस हम दीना। मृत्यु निकट भयी आयु छीना॥
काल वचन उपाय विचारो। ब्रह्मादिकके निकट पग धारो ॥
लाय गरूड तुरत पहुँचाये। ब्रह्मा विष्णु शिवहि बताये ॥

कहै गरुड सुनो यक बानी । यहि बालककी मृत्यु नियरानी ॥
याको कोई नाहिं सहाई । याते आयो तुव शरणायी ॥
यहि बालक को कौन जो राखे । सत्य बचन हम मुखते भाखे ॥
तुम तीनों त्रिभुवनके देवा । बालक ठान्यो तुम्हरी सेवा ॥

ब्रह्मा बचन

तब ब्रह्मा बालक सों बोले । जानि प्रभुता आपन मुख खोले ॥
कहे ब्रह्मा बचन हित कारी । को तेरा बाप को है महतारी ॥
कहु बालक कहांते आया । किन तुमको यहां पठाया ॥
कौन साहब दीन्हा औतारा । कौन तुझेको मारनहारा ॥

बालक बचन

तब बालक बोले अनुसारी । को है पिताको है महतारी ॥
ना जानूँ किन दिया औतारा । ना जानूँ को मारन हारा ॥
हम पूछे कोई राखहु भाई । तेहि कारन आये तुम्हरे ठाईं ॥

साखी–तीनलोक के ठाकुर तुम, ब्रह्मा विष्णु महेश ।
मैं तो कछु जानो नहीं, काहि कहौं संदेश ॥

महादेव बचन

सुनो बालक मैं कहूँ बुझायी । मृत्यु तुम्हारी नियरे आयी ॥
इहां कौन है राखन हारा । धर्मराज तुव कीन पुकारा ॥
केहि विधि यहां कैसे रहिहो । कौन शब्द पुरुष पद पैहो ॥
कैसे के भवसागर तरिहो । कौन भक्ति हृदय चित धरिहो ॥
सोई भेद कहो समुझायी । जाते तुम्हरा दुःख नशायी ॥

हंसा (बालक) बचन

हम तो तुम्हरी शरणे आये । जस जानो तस करो उपाये ॥
हमरी तो अब मृत्यु तुलानी । हम का जानें शब्द औ बानी ॥

अब करु वेगि सम्भारी मेरी। अब जनि करहु देव तुम देरी॥
मृत्यु हमारी तुली अब आयी। तुम अब हमको लेहु बचायी॥
जो तुमसे नहिं बाचूँ भाई। मिथ्या तुम का करहु बड़ाई॥
तुम सेवक साहब का होऊ। दूसर साहब है निज कोऊ॥

विष्णु वचन

विष्णु कहे सुनु बालक भाई। अब तोको यहां कौन छुड़ाई॥
कैसे को अब राखैं भाई। कैसे को तुव काल छुड़ाई॥
कैसेको तोर काल छुड़ाओं। कैसे आवा गमन मिटाओं॥
साखी–काल बड़ा प्रबल अहै, मो पै कछू ना होय।
वासे नहिं कोइ बाचई, ब्रह्मा विष्णु विगोय॥

चौपाई

सब मिलि रहे काल के साथा। काल फिरत है सबके माथा॥
काल की गति हम नहिं जाने। धोखे यम के हाथ बिकाने॥
साखी–काल कि गति जाने नहीं, ब्रह्मा विष्णु महेश।
ऋषी मुनी सब कम्पहीं, कम्पे शेष सुरेश॥

चौपाई

केतिक देह हमहीं जो धरिया। फिरि फिरि कालके फन्दे परिया॥
देह धरी धरि जगमें आये। यहि पृथ्वी में नाम धराये॥
साखी–कालसों कोई ना बचै, सुनु बालक चित लाय।
कैसे के मैं राखिहौं, मोसों राखि न जाय॥

चौपाई

देह धरे नहिं बचिहो भाई। सबको काल धरी धरि खाई॥
काल बड़ो है अति बलवंता। देवी देवा खाय अनन्ता॥
सप्त द्वीप जो हैं नौ खण्डा। काल बली सबहिन को डण्डा॥
तीन लोक पै करे रजधानी। हमहूँ ताकी सेवा मानी॥

विष्णु कहे ब्रह्मा सों बाता । यह बालक कीन्हा उत्पाता ॥
यह वृत्तांत तुम जानो भाई । तुम बालक को लेहु बचाई ॥
ब्रह्मा तब सुनि रहे लजाई । हमसे बालक राखि न जायी ॥

गरुड वचन

तबही गरुड जो बोलै बानी । बालक जिये तब तोहिं जानी ॥
आपा रोपि रहे ठहराई । किया तुम्हार न होवे भाई ॥
जो तुम आज बालकको राखो । तौ तुव बचन सत्य कै भाखो ॥
कहै गरुड सो तरक लगायी । बालक काहे न राखु बचाई ॥
ऐसी विधि फिरि फिरि अवतरहू । पुनि अपनी बुधि भरमत रहहू ॥
सबको ब्रह्मा देउ उपदेशा । अपने गर्वका न जानहु लेशा ॥
हम जानी तुमरी मति भाई । अब तुम थापि रहहु ठहराई ॥
गरुड कहै अस ज्ञान विचारी । ऐसी भूल परी संसारी ॥

सतगुरु वचन

धर्मदास तुम सुनो विचारी । गरुड या विधि दीन्ह प्रचारी ॥
तब तीनों मन में कीन विचारा । करि विचार ज्योति कहँ उरधारा ॥
तीनों मिलिके पूँछे माता । जो वह कहै सुनो विधाता ॥
आप आपमें तीनों ठानी । अन्त काल गमि पूछन आनी ॥

त्रिदेव वचन माता प्रति

माता ते पूछे चितलाई । सत्य वचन कहो तुम माई ॥
तुमरा चरित हमहीं नहिं जाना । आप आप मिलि कीन बखाना ॥

माता वचन

तबहीं ज्योति उचारी बानी । अहै काल सब पर परधानी ॥
कौन है बालक राखन हारा । आप पुरुष जो कीन हँकारा ॥
जाइके तुरत देहु पहुँचायी । जहवाँका जीव तहँवा चलिजायी ॥

सतगुरु वचन

तब तो ब्रह्मा ध्यान लगावा। तुरतहि गये ब्रह्मके ठावा॥
ब्रह्मा वचन तब उठा परमाना। आदि पुरुषका मर्म न जाना॥
तुम ब्रह्मा गर्व बहु भाखा। ताते जोति छिपाय के राखा॥
माता ते नहिं अन्तर करते। फिरि फिरि देह सु काहे धरते॥
ब्रह्मा तबै रहे अरथाई। सन्मुख बात कही नहीं जाई॥

गरुड वचन

तीनों देव विवस जब भयऊ। देखि गरुड तब बोलन लयऊ॥
अब जनि भूलो तीनों देवा। आदि पुरुषकी करो तुम सेवा॥

सतगुरु वचन

तीनों देव मिलि मंत्र यक कीना। बालक को विदा कै दीना॥

तीनों देव वचन

सुनु बालक तेरी मृत्यु तुलायी। कौनी शांति कै तोहि जियायी॥
तुमते कहें हम वचन प्रकासा। हम जो गये ज्योतिके पासा॥
ज्योति स्वरूप हम कहा बुझायी। अब तुम बरजहु काल बनायी॥
तबही ज्योति वचन अस भाखी। यहि बालकको अबको राखी॥
अवधि तोहार नियरि होय आयी। अब कोइ राखे राखि न जायी॥

साखी–हम तीनों को धिग है, जीवन धृग हमार।
हमसे बालक ना जिये, मिथ्या कीन्ह हँकार॥
बालक तो जीवै नहीं, मिथ्या जन्म हमार।
यह चरित्र ना जानिया, केहि करें उपचार॥

गरुड वचन–चौपाई

जो धिरकार तुम कीन पुकारा। अपने मनमें करहु विचारा॥
गर्व अभिमान छोडु सब भारा। मन अपने तुम मानहु हारा॥
वो तो पुरुष गर्व नहिं भाखे। तुम यम काल अपने शिर राखे॥

जो तुम ब्रह्मा मुक्ति गति पायी । तो तुम राखहु काल बचायी ॥
जो ब्रह्मा इतना नहिं जानो । तौ काहे को आपा ठानो ॥
बोलहु जानि तुम गर्व निदाना । तुम धिरकार आपको आना ॥
ब्रह्मा कस तुम आपा ठाना । ऊ गति काहू बिरले जाना ॥
जो ब्रह्मा तुम मृत्युगति जानौ । हठिकै ज्ञान तु काहि बखानौ॥
वह तो पुरुष सबै ते न्यारा । अगम अपार पावे नहिं पारा॥
साखी–ब्रह्मा विष्णु जाने नहीं, जाने नहीं महेश ।
ज्योति आप न जानई, रचे जो कालको भेश ॥

चौपाई

सुन ब्रह्मा मैं कहौं बुझाई । तुमरे किये होय का भाई ॥
गर्व गुमान सब देहु बहायी । तबहीं तुम सतगुरु पदपायी ॥
साखी–ऐसो काल वर जोर है, ग्रास्यो सत्तर योग ।
अमृत नाम सो मन दई, लेहु अमर रस भोग ॥

चौपाई

जो नहिं ब्रह्मा सांच कै मानो । तौ यह बालक हमपै आनो ॥
जो प्रभु हम कहँ नाम सुनायी ।ताकहँ चरित्र तुम देखहु-आयी॥
सांच झूठका करहु निवेरा । आंखिन देखि करहु बहुतेरा ॥
सत्यलोक अमरपुर डेरा । काल नहीं तब ताकहँ घेरा ॥
जो कोइ शब्द का करे निवेरा । सत्य लोक पावे सो डेरा ॥
साखी–जो संशय अब छूटे, घट सो चलै बरजोर ।
सुमिरन दीन दयालका, पहुँचे सो वहि ठौर ॥

चौपाई

अस कहि गरुड यक ज्ञान विचारा। बालक लाईसो उतरो पारा ॥

ब्रह्मा वचन

अचरज बात ब्रह्मा को लागी ।देखतु विष्णु गरुड तुम्ह त्यागी॥
तुमरे सन्मुख करे यह रंगा । तुमरी भाव भक्ति करे भंगा ॥

जो बालक जीवित लै आने । होय अचल तब जगत बखाने ॥
ब्रह्मा विष्णु अस बात विचारे । गरुड वचन परिहास निकारे ॥
उधर गरुड कीन अस अरम्भू । जो नहिं जाने हरिहर शम्भू ॥
मानसरोवर गरुड जब गयऊ । ताकी सुधि हंसन तब पयऊ ॥
आवहु गरुड महा सुख ज्ञानी । मित्र सुनावहु लोक कि बानी ॥
हंस अजरमुनि द्वीप महँ रहई । द्वीप देखिके बातें कहई ॥
मानसरोवर मांहि है भाई । उपजन विनशन तहाँ न पाई ॥
मानसरोवर ज्योति बहु कीना । कामिनि कला पुरुष रचिदीना ॥
सरोवर माहिं रहे सब भाई । विनशे देह मृत्यु जो पाई ॥

अजरमुनि वचन

कहो विहँसि मुनि कहवाँते आये । सो भेद मोहि कहु समझाये ॥

---

१ इस पुस्तक गरुडबोध की १० । १२ प्रति मेरे सम्मुख रखी हुई हैं । जिनमें से १ प्रति सम्वत् १७०३ विक्रमी की लिखी हुई है जो मेरे पिता शिवरहर राज्यके पूर्व अमात्य कबीरपंथके विहार प्रांतीय स्तम्भ परमज्ञानी श्रीमान् यशस्वी गोपाल लालजीको पुस्तकालयकी है । और दूसरी प्रतियोंमें से ४ प्रतियाएं सम्वत् १८०० से १९०० सम्वत् विक्रमी के बीचकी लिखी हैं । और १ प्रति सम्वत् १९१३ विक्रमीकी तथा ४ प्रतियां उसके पीछेकी लिखी हुई हैं । सम्वत् १९०० तक की जितनी प्रतियां लिखी हुई हैं सबमें यही ऊपर की चौपाई लिखी है और उनमें हंस अजरमुनि का ही मानसरोवरमें गरुडजीसे मिलनेका हाल लिखा है किन्तु उसके पीछेकी प्रतियोंमें कहीं तो अजरमुनि और कहीं चन्द्रमुनि लिखा है, इतनाही नहीं ग्रन्थमें ऊपर लिखा है "चन्द्रमुनि-वचन" तो नीचे लिखा है "अजरमुनि द्वीप रहाय" कहीं लिखा है हंस मुनि इस प्रकारसे भेद पडनेके कारण पुरानी प्रतियोंके अनुसारही "अजरमुनि" रखा है । यौंतो उत्तरोत्तर की लिखी हुई प्रतियोंमें लेखक महाशयोंकी कृपासे ग्रन्थोंमें कुछ कुछ भेद होता ही गया है, तथापि १९००सम्वत् के प्रथमकी लिखी हुई पुस्तकोंमें है। इतना अन्तर नहीं है जितना १९१३ वाली प्रतिसे लेकर उसके पश्चात् की प्रतियोंमें है । इधरकी लिखी हुई प्रतियोंमें कई तो ऐसी हैं जिनमें "अ" के स्थानमें समस्त पुस्तकमें "य" काही प्रयोग किया है "अ" का गन्ध भी नहीं है ।

गरुड वचन

सुनहु अजरमुनि कहौं बुझायी । अकथ कथा कछु कह्यो न जायी॥
सुनत हंस यह अकथ कहानी । तीनों देव बडे अभिमानी ॥
ब्रह्मा विष्णु लगायी बाजी । अपनी अपनी सब करहिं अवाजी॥
तब समरथ एक कला उपायी । बालक भेद न जाने भाई ॥
तब हम एक बोल्यो बानी । बालक एककी मृत्यु तुलानी ॥
प्रथम तो बाद बहु ठाना । बालक देखत बहुत लजाना ॥
उन अपने जीव सोच बहु कीना । यहि बालकको किनहु न चीना॥
तब उन पुरुष सांच कर माना । है कोइ पुरुष आदि निर्वाना ॥
हारि मानि के बिदा जो कीना । तुम्हरे द्वीप तानि पग दीना ॥
अब ऐसी युक्ति तुम ठानो । जाते होय सब काज प्रमानो ॥
बालक जिए सोइ अब कीजे । साचा अमृत मोकहँ दीजे ॥
तीनों जने तब जाहिं लजायी । सत्य पुरुष की सत्य कै पायी॥
ये तीनों तो गर्व भुलाना । निर्गुण तो वे आप कर जाना॥
महापुरुष कोइ मान न भाई । आप गर्ब दुनिया भरमाई ॥
सुनहु अजरमुनि हंस सो ज्ञानी । कैसे रहो सरोवर आनी ॥
कौन यतन सरोवर में आनी । सरोवर के गुण कहो बखानी ॥
साखी–कैसा सरोवरमान है, कैसे रहे समाय ।
किहि विधि इसको नांघि के, सत्यलोकको जाय ॥

अजर मुनि वचन–चौपाई

सुनहु गरुड तुम सत्य हो साधू । तुमरी भक्तिसों अहै अबाधू ॥
तुम तो आदि अंत सब देखा । कहो तुमहि जो सकल विशेखा॥
जो कोइ आदि अंतके जाने । तासों कौन वृथा हठ ठाने ॥
सुनहु गरुड मैं कहौं प्रमाना । ताको कहिये कहा जो माना ॥
जो प्रभुकी अंतगति जानै कोई । तासों पुनि सत कहिये सोई ॥

सुनहु गरुड साधुन के स्वामी । सबकी महिमा तुम भल नामी॥
हम तो ज्ञान सब तुमसे पावा । तुव प्रताप हम लोक सिधावा॥
साखी-समरथ नाम अमरपुर, अजर द्वीप अस्थान ।
तहवाँ रहत हैं हंस सब, पावहिं पद निरवान ॥

चौपाई

अक्षय द्वीप पुरुष अस्थाना । तहवां रहैं सब हंस सुजाना ॥
सदा आनन्द होत तेहि ठाऊँ । नहिं तहं चले कालकर दाऊँ ॥
साखी-हंसा विलासहिं द्वीपमहँ, भोजन करहिं अघाय ।
जरा मरण व्यापे नहीं, नहिं आवें नहिं जायँ ॥

गरुड वचन

अमृत देहु बताइके पुरुष नाम कहि देहु ।
बालक लेहु जिवाइके, इतना यश तुम लेहु ॥

चौपाई

कहहु पुरुष कैसे के बोला । कहसे प्रभु सो सम्पुट खोला ॥

अजरमुनि वचन

आपुहि में वह अमृत कीन्हा । आपुहि साहब कहि जो दीन्हा॥
अमी बुन्द प्रथमहि उपजाया । अमी बुन्द ते अमृत आया ॥
साखी-ज्ञानी कहै विचारके । सुनो गरुड चित लाय ।
गति को भक्ति दिढावहू, बालक लेहु जिवाय ॥
बालक लेउ अमर कै, अमी द्वीप चलि जाउ ।
दृढ कै भक्ति दृढावहू, अजर अमर होय आय ॥

गरुड वचन-चौपाई

कहै गरुड बालक अकुलाई । अमृत देके लेहु जिवायी ॥

अजरमुनि वचन

सुनहु गरुड तुम ज्ञान गँभीरा । तुम तो पुरुष पा अस्थिरा ॥

जाहु तुरत वरुण के ठाई । वरुण अहैं हमार गुरु भाई ॥
पवने द्वीप रहे वह वैसा । तोसों कह्यो भेद है जैसा ॥
साखी-शीस श्रवण नहिं नासिका, इन्द्री साधे घाट ।
यहि रहनी वह रहत है, सुरति शब्द के बाट ॥

चौपाई

गरुड चले वरुण की ठाई । अमी द्वीप मोहि देहु बताई ॥
तुरतहि वरुण दीन उपदेशा । हमते पूछौ कौन सँदेशा ॥
तुम सब भेद जानत हो भाई । तुरतहि जाऊ श्रवण की ठाई ॥
वहीं श्रवण कहे सम भेवा । वह तो करइ समर्थ की सेवा ॥
वह लौलीन प्रभू को जाने । साधु संतको सेवा ठाने ॥
सत्य पुरुष को जाने भेवा । सकल खबर कह जाने देवा ॥
द्वीप द्वीपकी कहे जो बानी । जाहु जहां घर होय निर्बानी ॥
जाहु तुम उनही के पासा । सत्य शब्द कहो परकासा ॥
जहाँ कहूँ तहवां चलि जाऊ । अमृत लेके बाल पिआऊ ॥

सतगुरु वचन

तुरत गरुड गये तव तहवाँ । सत्य पुरुष को द्वीप है जहवाँ॥

गरुड वचन

श्रवण हंस मोहि कह समुझाई । कौन ठाम अमृत देहु बताई ॥

श्रवन वचन

तब श्रवण यक बोलेउ बानी । पुरुषकी गति अजहूँ नहिं जानी॥
बिनु आज्ञा कैसे तुम कहऊँ । कौनी भाँति भेद मैं लहऊँ ॥
हैं अमृत नहिं राखूँ गोई । इतना पातक लागे मोई ॥
पुरुषउ थापि अमृत जो दीना । हमको कैसे नास्ती कीना ॥
साखी-कहे श्रवण मैं भाषेउ, अमृत का सब भेव ।
मारग कोई जानई, ऐसो अखंड अभेव ॥

तुरतहि जाउ निर्मल पासा । ताते पुजिहै तुम्हरी आशा ॥
ताके संग जोइ मिलि रहई । ऐसो शब्द दोऊ मिलि कहई ॥

गरुड वचन

श्रवणदास कहि बहु समझाओ । तुम्हरी दरशनको हम आओ ॥
द्वीप सकल हम देखे भाई । सोई छाप मोहि देहु देखाई ॥

गरुड वचन

निर्मल संग यक भँवर रहाई । सोई भौर ले सब भरमाई ॥
निरमल लेके लोकहिं जावे । भरमें जीव को लोक पठावे ॥
इन दोनों कर जाने भेवा । फिर भौसागर होय न खेवा ॥
साखी–अमृत पिआव विचार के, पुरुष नाम कहि देहु ।
बालक लेहु अमराय के, इतना सांच गहि लेहु ॥

चौपाई

पुरुष नाम तुम जानो भाई । हमते काह करहु चतुराई ॥
पुरुष नाम है तुम्हरे पासा । तुम्हरे घट में सत्य निवासा ॥
जैसे रहे पुरुषमें बासा । ऐसे पुरुष तुम्हरे पासा ॥
एक नाम को अनेक विचारा । जिन जाना तिन उतरे पारा ॥
प्रथम पुरुष अहै यक भावा । दुसरे पुरुष देह धरि आवा ॥
तिसरे पुरुष परफुल्लित नाऊँ । चौथे पुरुष सत्यपुर गाऊँ ॥

गरुडवचन

कहो पुरुष कौन विधि बोले । कैसे के प्रभु सम्पुट खोले ॥
कौन शब्द प्रभु बोलन लीना । कौन भाँति कूर्म सो कीना ॥
कौन यतन अमृत फल लावा । कौन यतन हंस सो पावा ॥
कौन यतन उहां पुनि आवा । कौन यतन उन मान धरावा ॥
बारह पालँग कूर्म जो कीन्हा । तेहि ऊपर प्रभु सेज्या दीन्हा ॥
परफुल्लित होय साहिब बोला । उचरी बानी संपुट खोला ॥

आपहि माहि आप प्रभु कीना । तहँते अमृत कूर्म को दीना ॥
अम्बु नाल ते अमृत आया । अम्बुज ते अमृत उपजाया ॥
साखी-श्रवण कहे विचारिके, सुनो गरुड चित लाय ।
धीरज भयो तेहि दृढ भये, अमृत पिये अघाय ॥

चौपाई

सन्धि नाम प्रथम सहिदानी । ऐसे भये सब जीवन जानी ॥
भयउ नाम अकह उगासा । सुकृत जोइन नाम प्रकासा ॥
अजीत है ओंकार इंकारा । निसरत है सो ओही द्वारा ॥
उत्पति ऊर्ध्व गे ऊर्ध्व विशेखा । सो हम तुमसे भाषेउ लेखा ॥
भयो प्रकाश सुरति जो कीन्हा । ऊर्ध्वते ऊर्ध्व प्रभु पार जो लीना ॥
साखी-अर्ध ऊर्ध्व दोऊ लखै, पार जो रहे ठहराय ।
कहे श्रवण बहु गरुडसे, सुखसागर रहे समाय ॥
लोक लोकमहँ प्राण है, रहे द्वीप अस्थान ।
उदय अस्त तहवाँ नहीं, ब्रह्म विष्णु नहिं स्वान ॥

चौपाई

देह धरी सुख बोल जो आवा । तबही परम पुरुष कहलावा ॥
अजर अमर अधार है ठाऊँ । अहे अटल वा पुरुष को नाऊँ ॥
वही पुरुष का सुमिरन करई । आवा गमन भवसागर तरई ॥
वही शब्द है अमृत रूपा । वही शब्द अहे अजब अनूपा ॥
साखी-वही शब्द गहु सत्यके, बालहिं कहु समुझाय ।
बालक लेहु यमराजते, अमी द्वीप पहुँचाय ॥

चौपाई

विष्णुहि लोके माला देहू । शब्द हमार प्रमान के लेहू ॥
विष्णुहि माला तिलक औ छापा । और न दिलमें आनहु आपा ॥
साखी-श्रवण कहे गरुड से, यही तुम्हारो काम ।
देहु उपदेश अब जायके, बालहि दीजे नाम ॥

चौपाई

धन्यगरुड मृत्युलोकते आओ ।बहुरि जाय मृत्युलोक चिताओ॥
अब जाई तुम विष्णु चिताओ । जो वह चेते तो नाम दृढाओ ॥
लीन गरुड बालक अगराई । अमृत पीवत अती जुडाई ॥
बालक अमृत माहिं जुडाना । युगन युगन को क्षुधा बुझाना॥
गरुड विदा हंसन सों लीना । मस्तक नाइ प्रदक्षिण कीना ॥

श्रवण वचन

तब हंसा पुनि कीन निहोरा ।तुमतो गरुडन कीन्ह यह जोरा॥

गरुड वचन

तुमही छाडि शीस केहि नाऊँ। तुमरे चरणकमल चित लाऊँ॥
तुम तो अमृत दीन दिखायी । सतगुरु शब्द लीन अर्थायी ॥
शीस सोई जो साधु को नावे । पूजा सोई जो नाम लौ लावे॥
मुख सोई जो उचरे नामा। देह सोई जो प्रभुके कामा ॥
देवत सोई जो बन्दगी ठाने । दया सोई अमि अन्तर आने॥
साधू सोई जो ममता मारे। ममता मारि आप को तारे ॥
साखी-बालक लिये अमरकरि, विष्णुहि कह्यो समुझाय ।
चले गरुड मृत्युलोकको, ब्रह्मा रहे लजाय ॥

चौपाई

यहि विधि बालक लीन जिवायी। सकल सभा तहँ देखे आयी ॥
धन्य धन्य सब करहिं पुकारा । धन्य गरुड है रहनि तुम्हारा॥
धन्य धन्य सबही मन भावा । गरुड बोल सब ऊपर आवा ॥
नाग लोग की कन्या रहाई । अचरज होय कछू न कहाई ॥

नागकन्या वचन

अविगत मता है गरुड तोहारा । कोइ न जाने भेद अपारा ॥
इतना कहि अनुराग सो धरिया। शीस नाइ चरणन पर परिया॥

वासुकि देवकी कन्या भाई। शीस नाइ के विन्ती लाई॥
रूप उग्र बहुते उजियारा। मानिक लवंके माहि लिलारा॥
एतिक आगरी किये सिंगारा। जगमग ज्योति बरे उजियारा॥
सो पुनि कन्या विन्ती करई। गरुडके चरण आय शिर धरई॥

वासुकि देवकी कन्याका वचन

हो साहिब तुम बन्दी छोरा। नष्ट जाय जिव तुमहिं निहोरा॥
हो साहिब विन्ती सुनि लेहू। हमरे गृहे तुम चरण धरेहू॥
हम दीक्षा प्रभु लेव तुम्हारा। जिवका कारज करो हमारा॥

गरुड वचन

कहे गरुड सुनु कन्या वारी। तुम सबहिनकी प्राणपियारी॥
पूछहु वासुदेव सों जाई। आज्ञा देहिं तस करो उपाई॥
अस तुम जाय सिखापन लेहू। पुनि फिर के हमही दल देहू॥

कन्या वचन

व्रजबाला कन्या अस बोले। जो हम कही कबहु नहिं डोले॥
साहिब विन्ती सुनो हमारो। सकल समाज संग पग धारो॥
इन्द्रलोक ते इन्द्र बुलाये। सुर नर मुनि गँधर्व जो आये॥
चले विष्णु जहँ गहरन लायी। शिव ब्रह्मा तहँ चले रिंगायी॥
तेतिस कोटि देव तहँ आये। सिद्ध चौरासी सबै सिधाये॥
नौ नाथ अरु सब बचे बचाये। सबही चले रहे नहिं भाये॥
शंख वीण धुनि बाजे भाई। इन्द्र को बाजा अति घहराई॥
ताल मृदंग और शहनाई। सब ही बाजन बाजे भाई॥

साखी-इन्द्र के बाजन बाजते, भये पताले त्रास।
वासुदेव डरि कंमपे, बैरी आयो पास॥

---

१ चमके।

गरुड वचन

व्रजबाला कन्या हँकरायी । आयसु देइ के आशु रिंगायी॥
बासुकिदेव सों कहु समझाई । साधु रूप सब आवैं भाई ॥
सुनते कन्या तुरत रिगायी । वासुकिदेव सों कही समझायी॥

कन्या वचन

निर्गुण भक्ति गरुड जो ठानी । तेहि कारण हम गरुडहि मानी॥
होहु सुचित्त सबै परिवारा । निजके मानहु वचन हमारा ॥

साखी–सकल साधु इहँ आवहीं, होय चौका विस्तार ।
चित में कोइ डरो नहीं, वह हैं भक्ति अधार ॥

वासुदेव वचन–चौपाई

व्रजबाला कन्या सुनु आनी । सबही तुरत तु आन बुलाई ॥
जाहू तुरत गरुड के ठाऊँ । दाया करहु धरत सब पाऊँ ॥

सतगुरु वचन

सुनि बाला लै गयउ विमाना । दया करत सब संत सुजाना ॥
जबहि शेष प्रतीति मन आनी । तबही गरुड सु कीन्ह पयानी ॥
जब गरुड जो चले रिगायी । बाजन बाजे वरनि न जायी ॥
बाजे डमरू हने निशाना । महादेव जब कीन्ह पयाना ॥
सबहि समाज पताले गयऊ । इच्छा भोजन सबही लयऊ ॥
एकोत्तर से नरियर आना । बहुत भांतिके कीन्ह मंडाना ॥
जबही गरुड जो सुमिरन कीन्हा । तब हम उनको दर्शन दीना ॥
गरुड आइके मस्तक नाये । शीस नवाइ चरण चितलाये ॥
सकल जमात उठी भई भाई । सबहिन उठि के मस्तक नाई॥
तब हम पुनि चौका विस्तारा । बहुत भांतिके साज सुधारा ॥
सुथरी मिठाई उत्तम पाना । व्रजबाला सबही कछु आना ॥
जब तिन सबै साज सँवरावा । तब हम लोकते हंस हँकरावा॥
आये साधू लोक से भाई । जग मग ज्योति बरइ अधिकाई॥

बाजे ताल मृदंग अपारा । उठे रँगसों अनहद झंकारा ॥
तारी उठे तत तत सों सारा । हंसे सबै सब साधु विचारा ॥
निर्गुण भक्ति कीन्हा लौलायी । चहुँदिशि अगर रहा महँकायी॥
देख सभा सब मोही भाई । सब मोहे कछु कही न जाई ॥
मोहि नाग नागेश्वर भारी । मोहि रही सब सभा विचारी॥
मोहे गण गँधर्व मुनि देवा । कोई भक्त का जाने न भेवा ॥
वासुकिदेव अस्तुति अनुसारी । धन्य कबीर जो भक्ति तुम्हारी॥
पायो दर्श धन्य भाग हमारो । धन्य कबीर यहाँ पग धारो ॥
धन्य कबीर तुम्हारी वानी । मोहि रही सब भगतिन रानी ॥
कीन्हो भक्ति पहर दुइ भाई । अति आनँद होय मंगल गाई॥
पुनि उठिके हम आरति लीना । एकोतर नरियर मालुम कीना ॥
परवाना व्रजबालहि दीनी । वह शिर नाइ बन्दगी कीनी ॥
पुनि समरथकी अस्तुति सुनायी। दीन प्रसाद सबहिं बरतायी ॥
सब संतन लिन माथ चढाही ।आशिष दीन सकल मिलि ताही॥
दिन दशके आदर करि लीना । सेवा भक्ति बहु विधि कीना ॥
संत साधुको विदाई दीना । चादर धोती सबही लीना ॥
सबहि कहै मम आशिष लीजो । साधुन के चरणें चित दीजो ॥
ऐसी भाँति विदा जो कियऊ । आपु आपु सब घरहिं सिधेऊ॥
चलत प्रेम सबहि को भाये । बहुत भाँति की अस्तुति लाये॥

साखी-कहैं कबीर धर्मदाससे, यहि विधि भौ विस्तार ।
गरुड ज्ञान सबसे कियो, हारे सबे भ्रुआर ॥
वक्ता के कण्ठ बसूँ, श्रोतहि श्रवण आहिं ।
संतनके शीश वसूँ, ज्ञानिन हृदय माहिं ॥

इति श्रीबोधसागरांतर्गत कबीरधर्मदाससम्वादे
गरुडबोधवर्णनो नाम षष्ठस्तरंगः

गरुडबोधका संक्षेप सार

★

प्रायः कबीरपन्थी लोग ऐसे गरुडबोधादि ग्रंथोंके भावको न समझ कर अन्य वैष्णव आदि सम्प्रदाइयोंसे इन्हीं ग्रन्थोंके प्रमाण द्वारा वाद करके परस्पर रागद्वेषमें फँसकर निन्दाके पात्र बनकर, नास्तिकादि नामों के लक्ष्य बने हैं। और जिस प्रकार से इनमें अविद्याका विशेष प्रताप फैला है उसी प्रकारसे अन्य सम्प्रदाय वालोंमें भी अज्ञान देवने अपना राज्य जमा रखा है। जिस कारणसे विद्या और ज्ञानका तो उनमें प्रवेश भी होने नहीं पाता। यही कारण है कि, वे भी अपने इष्ट देवके स्वरूपको न समझकर कबीरपंथियों के तर्कको सुनकर उन्हें समझाने या उत्तर देकर उनका समाधान करनेमें असमर्थ होनेके कारण उन्हें नास्तिक और निन्दक आदि नामोंसे पुकारते और उनसे द्वेष करते हैं। किन्तु दोनों दलोंमें जो ज्ञानी और समझदार हैं, आत्मतत्त्वमें जिनका प्रवेश हुआ है जिन्होंने शास्त्र और ग्रन्थों का मनन करके उनके भेदको समझा है, वे न तो किसीके ऊपर बहिरदृष्टि और द्वेष अथवा निन्दा के भाव से तर्कही कर सकते हैं न उनके वाक्यको सुननेवाले ज्ञाता लोग उनमें नास्तिकता ही का अनुमान कर सकते हैं।

कबीर पंथमें जितने ग्रन्थ वर्तमान हैं वे सब अध्यात्म विद्या की पुस्तक हैं। जो कुछ उन ग्रन्थोंमें लिखा है सबका आध्यात्मिक अर्थही ग्रहण करने योग्य है। यदि आध्यात्मिक अर्थको छोड़कर साधारण अर्थ और शब्दार्थको ही ग्रहण किया जाय तो न जाने असम्भावता आदि कितने दोष आकर उपस्थित

हो जावेंगे। और स्वयम् कबीर साहिबमें ऐसे २ अनर्थका दोष लग सकेगा कि, जिस कलंकको मिटाना कठिन ही नहीं बरन् असम्भव है। इतना ही नहीं ग्रन्थोंमें बात बातमें आध्यात्मिक अर्थ भी बतलाया गया है और जिस ग्रंथकी जैसी प्रक्रिया चली है वैसेही उसका निर्वाह भी किया गया है जो लोग मनन और विचार किये विना केवल शब्दों और पदोंको लेकर लड़ते झगड़ते हैं उन्हें कबीर साहिबके इस मसले पर ध्यान देना चाहिये कि–"कबीरका गाया गावेगा। तीन लोकमें धक्का खावेगा ॥ कबीरका गाया बूझेगा। तीन लोक वहि सुझेगा"– जैसे इसी ग्रन्थमें यदि गरुडका वही साधारण अर्थ लिया जावे जैसा सर्वसाधारण समझते हैं, तो इसमें कोई सन्देह नहीं कि विष्णु उपासकोंके समक्ष इस पुस्तकको बाँचनेवाला मार खाये विना नहीं रहेगा–किन्तु जब उसी का आध्यात्मिक अर्थ समझेगा और दूसरोंको समझावेगा कि, गरुड नाम है जीवका, विष्णु नाम है सतोगुणका अर्थात् सतोगुणभावों करके सम्पन्न जो मुमुक्षु है उसको जब ज्ञानी गुरु मिलता है तब उसे त्रिगुण (रजोगुण) (ब्रह्मा) सतोगुण (विष्णु) तमोगुण (शंकर) के जाल से निकाल कर त्रिगुणातीत कर देता है–अर्थात् सतपुरुष रूप उसके प्रत्येक आत्माके स्वरूपका ज्ञान करा देता है। तब गरुड रूप मुमुक्षु तीनों गुणोंको जीत कर शरीर निर्वाह अथवा प्रारब्ध बलसे यावज्जीवन सतोगुणके दिव्य गुणोंको सम्मुख रख कर आनन्दपूर्वक विचरता और दूसरोंको भी अधिकार पूर्वक उपदेश देकर सत्यपदकी पारख बतलाता है। इसी प्रकारसे कबीर पंथके सर्व ग्रन्थोंका आशय आध्यात्मिक है।

जो इन ग्रथोंको पढकर अपने आत्माके कल्याणार्थ सत्य अर्थको ग्रहण न करके केवल शारीरिक सुख और

ममकी तुच्छ तुच्छ वासनाओंको पूर्ण करनेके लिये अपने समझे विना दूसरे जीवों को मिथ्या भ्रम में डालते हैं वे मिथ्या भ्रम को उठाकर पाप के भागी बनते हैं। सद्गुरु की कृपा होगी तो ग्रन्थों को छपवा लेने के पश्चात् सब ग्रन्थों के सारको प्रदर्शित करानेवाला एक स्वतंत्र पुस्तक प्रकाशित करके मिथ्या प्रचलित भ्रम को दूर करनेका प्रयत्न करूँगा।

इसके प्रथम भोपालबोध आदि ग्रन्थ जो छपे हैं उनका भी भाव आध्मात्मिक समझना चाहिये।

इति